

---

Published by Venichand Surchand, Shah. Secretary  
Shri-Jain Shreyaskar Mandal, Mhesana.

---

Printed by R. Y. Shedge at the "Nirnaya-sagar"  
Press," 23, Kolbhat Lane, Bombay

---



पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखरुतुं मूकी  
आशातना करवी नहि. तेमज अशुद्ध हाथे  
पुस्तकने अरुकवुं नहि. उघाडे मुखे पुस्तक  
वांचवुं नहि.

### मंगल.

जैनो धर्मः प्रकटविज्रवः संगतिः साधु-  
लोके, विद्वज्जोषी वचनपटुता कौशलं स-  
त्क्रियासु । साध्वी लक्ष्मीश्वरणकमलोपासना  
सद्गुरुणां, शुद्धं शीलं मतिरमलिना  
प्राप्यते नाट्यपुण्यैः ॥ १ ॥

सार—प्रगट प्रज्ञाववालो जैनधर्म, संत-सु-  
साधु जनोनी संगति, ज्ञानी पुरुषो साथे गोष्टी,  
वाक्चतुराश्, शुद्धकरणीमां कुशलता, न्या-  
योपार्जित लक्ष्मी, सद्गुरुना चरणकमलनी  
उपासना, निर्मलशील अने शुद्धमति, ए-  
टलां वानां प्रबल पुण्ययोगेज प्राप्त थइ शके ठे.

## उपोद्घात.

जैन कोममां वांचन पठननो बहोलो फे-  
लावो करवाना उद्देशथी अमो विद्वान् मुनि-  
महाराजाउं अने सुइ श्रावकोनी चालु जमा-  
नानी कसायेली कलमथी लखायेला पूर्वा-  
चार्यप्रणीत ग्रंथोनां ज्ञावांतरो अने मूल ग्रंथो  
उदार दीलना सदृग्हस्थोनी उत्तम सहानुभू-  
तिवडे मुद्रित करावी, तेना खपी जीवोने विना-  
मूढ्ये यातो नजीवी कीमते आपीए ठीए; जेना  
परीणामे आ सत्तरमुं पुस्तक बहार पारुवामां  
अमे फतेहमंद थया ठीए.

श्री ज्ञावनगर जैनधर्मप्रसारक सन्ना तर-  
फथी प्रसिद्ध थयेला पंचप्रतिक्रमणना पुस्तकमां  
केटलाक फारफेर साथे योग्य सुधारो वधारो  
करी, आ ग्रंथ प्रसिद्ध विद्वान् मुनिवर्य पासे  
जुनी प्रतो अने संस्कृत अवचूरीजना आधारे  
बारीकीथी संशोधन करावी प्रसिद्ध कराव्यो  
ठे, जेथी अत्यार सुधीमां उपायेला प्रतिक्रम-  
णना पुस्तकोना करतां कोइ कोइ पाठ फेरफार

लागशे. माटे सज्जन बंधुर्जने विज्ञप्ति करवानी के तेमणे आ ग्रंथनी कंश् चूलनो सुधारो करवा पहेला हरकोश् विद्वान् मुनिराजनी सलाह पूढवी. आ ग्रंथ ठपाववामां शुद्धि तरफ पूरतुं लक्ष्य आपवामां आव्युं ठे, तेम ठतां मतिदोषथी या तो प्रमादवशथी कांश् पण चूल चूक अश् होय तो ते सुधारीने वांचवा जणवा विनंति करवामां आवे ठे.

आ ग्रंथनी पहेली आवृत्ति थोका वखतमां खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति ताकीदे बहार पाववानी जरूरपकी ठे. आ वखत ठपामणी वगेरेनो खर्च वधवा ठतांकीमत सरखीजराखीठे.

आ ग्रंथ ठपाववामां जे महाशयोए द्रव्यनी सहाय आपी ठे अने जे महाशयोए प्रुफ सुधारवामां कीमति मदद आपी ठे ते सर्वनो अंतःकरणथी आज्ञार मानवा साथे आवां कार्योंमां ते महाशयो तरफथी वधारे सहानुचूति मळे एम इठी विरमुं तुं.

ली. प्रसिद्धकर्ता.

( ६ )

## शुद्धिपत्रकम्.



पृष्ठ	लीटी	अशुद्धम्	शुद्धम्.
३१	१	उ	उं
३९	७	झी	झीं
३९	७	झ	झूं
४७	१	अर्हत-	अर्हन्त-
६१	१२	जमी	जूमी
१५२	१	चउसीस	चउतीस
१७३	१२	उन्निद्रहमे-	उन्निद्रहेम-
१७६	१७	विञ्चूर्वि-	विञ्चूर्विधातुम्.
१७२	१३	नमन्त्रि-	नमन्त्रि-



# अनुक्रमणिका.



नाम.	पानुं.
नवकार ( नमस्कारसूत्रम् )....	३
पंचिंदित्र सुत्तं .....	१
खमासमण सुत्तं .....	२
सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा .....	२
इरियावहियं सुत्तं .....	२
तस्स उत्तरी सुत्तं .....	३
अन्नत्थ ऊससिण्णं सुत्तं .....	४
लोगस्स सुत्तं .....	४
सामायिकनुं पच्चखाण .....	५
सामायिक पारवानुं सूत्रम् .....	६
जगचिंतामणि चैत्यवन्दनम् .....	७
जंकिंचि सुत्तं .....	७
नमुत्थुणं वा शक्रस्तवः .....	९
जावंति चेइत्थाइं सुत्तं .....	१०
जावंत केविसाहू सुत्तं .....	१०
परमेष्ठि नमस्कारः .....	११
उवसग्गहरंस्तवनं .....	११

जयवीथरायसुत्तं	....	....	१२
अरिहंत चेश्याणं सुत्तं	....	....	१३
कङ्घाणकंदंस्तुतिः	....	....	१३
स्नातस्थानी स्तुतिः	....	....	१४
संसारदावानी स्तुतिः	....	....	१५
पुस्करवरदीसुत्तं	....	....	१६
सिद्धाणं बुद्धाणंसुत्तं	....	....	१७
वेयावच्चगराणं सुत्तं	....	....	१८
जगवानादि वन्दनम्	....	....	१९
देवसिञ्च पक्कमणे ठाठं	....	....	१९
इहामि ठामिसुत्तं	....	....	१९
अतिचारनी आठ गाथा	....	....	२०
सुगुरुवांदणा सूत्रम्	....	....	२१
देवसिञ्चं आलोठं	....	....	२२
सातलाख	....	....	२३
अठार पापस्थानक	....	....	२४
सवस्सवि सुत्तं	....	....	२४
श्रावकवंदितासूत्र	....	....	२५
अञ्जुठिठं	....	....	३२

आय रिश्रजवज्जाए	....	....	३३
नमोऽस्तु वर्द्धमानाय	....	....	३३
विशाललोचनदलम्	....	....	३४
श्रुतदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती	....	....	३५
कमलदलस्तुतिः	....	...	३५
शुवनदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती		....	३५
अष्टाश्लोसु मुनिवन्दन सूत्र		....	३६
वरकनक	....	....	३६
लघुशान्तिस्तवः	....	....	३७
चतुष्कसायसुत्तं	....	...	४०
जरहेसरनी सज्जाय	....	....	४०
मण्हजिणाणं सज्जाय	....	....	४३
तीर्थवन्दना	....	....	४३
सकलार्हत	....	....	४६
श्रीपादिकादि संक्षेप अतिचार		....	५१
श्रीपादिकादि अतिचार	....	....	७२
प्रज्ञातना पञ्चरूपाण (नमुक्कारसहिनुं)		....	१०१
पोरिसि साढपोरिसिनुं	....	....	१०१
बियासणा एकसणानुं	....	....	१०२



आयंबिलनुं पञ्चस्काण	....	१०३
तिविहार उपवासनुं	....	१०४
चउविहार उपवासनुं	....	१०५
सांजनां पञ्चस्काण ( पाणहारनुं )	....	१०६
चउविहारनुं पञ्चस्काण	....	१०६
तिविहारनुं पञ्चस्काण	....	१०७
डुविहारनुं पञ्चस्काण	....	१०७
देसावगासिकनुं पञ्चस्काण	....	१०७
पोसहनुं पञ्चस्काण	....	१०८
पोसह पारवानी गाथा	....	१०८
संधारा पोरिसी	....	१०९
चैत्यवंदनस्तवनवगेरेनो समुदाय—		
सीमंधर जिन चैत्यवंदन	....	१११
सीमंधर जिन द्वितीय चैत्यवंदन	....	११३
सिद्धाचलनुं त्रीजुं चैत्यवंदन	....	११४
सिद्धाचलनुं चोथुं चैत्यवंदन	....	११५
परमात्मानुं पांचमुं चैत्यवंदन	....	११६
प्रथम सीमंधरजिनस्तवन	....	११६
द्वितीय श्रीसुबाहुजिनस्तवन	....	११८
तृतीय श्रीदेवजसाजिनस्तवन	....	११९

चोथुं वीश विहरमाननुं स्तवन	....	१२०
पांचमुं श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन	....	१२२
षष्ठ श्रीसिद्धाचलस्तवन	....	१२३
सप्तम सिद्धाचलस्तवन	....	१२४
अष्टम सिद्धाचलस्तवन	....	१२६
श्रीतीर्थमाला स्तवन	....	१२७
श्रीमहावीरजिनठंद	....	१२९
श्रीगौतमाष्टक ठंद	....	१३२
पञ्चतीर्थ चैत्यवंदन	....	१३३
पञ्चमीनी थोयो ( संस्कृत )	....	१३४
एकादशी स्तुति ( संस्कृत )	....	१३५
पञ्चतीर्थ थोयो	....	१३७
शङ्खेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः	....	१३८
प्रथम श्रीविनयअध्ययननी सज्जाय	....	१३९
द्वितीय शिखामणनी सज्जाय	....	१४१
अनाथी मुनिनी सज्जाय	....	१४२
श्री नेम राजुलनी सज्जाय	....	१४३
आपखजावनी सज्जाय	....	१४५
नव स्मरण—		
नवकार—उवसग्गहरं	....	१४७

संतिकरस्तवन	....	१४७
तिजयपहुत्त	....	१५०
नमिऊण	....	१५३
अजितशान्ति	....	१५६
अक्तामरस्तोत्र	....	१६६
कढ्याणमन्दिरस्तोत्र	....	१७६
म्होटी शान्ति	....	१७६
रत्नाकरपञ्चविंशिका	....	१७९
सामायिक लेवानो विधि	....	१७७
सामायिक पारवानो विधि	....	१७७
चैत्यवंदन करवानो विधि	....	१७९
गुरुवंदन करवानो विधि	....	१७९
पञ्चरूपाण पारवानो विधि	....	१७९
परिलेहण करवानो विधि	....	१७९
देववांदवानो विधि	....	१७९
देवसिप्रतिक्रमण विधि	....	१७९
राष्ट्रप्रतिक्रमण विधि	....	१८१
परिक्रमण विधि	....	१८६
चण्डीमासी प्रतिक्रमण विधि	....	१९०
संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	....	१९०



॥ अथ ॥

॥ श्रावकस्य पञ्चप्रतिक्रमणादिसूत्राणि ॥

१ प्रथमं नमस्कारसूत्रं (पंचमंगलरूपम्) ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं

॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो

उवञ्जायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सबसाहूणं

॥ ५ ॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥ सब-

पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सब्बेसिं

॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

पद [ए] संपदा [८] गुरुवर्ण [९] लघुवर्ण [६१] सर्ववर्ण [६८]

२ ॥ अथ पंचिदिअसुत्तं ॥

पंचिदिअसंवरणो, तह नवविहबंज-

चेरगुत्तिधरो ॥ चउविहकसायमुक्को, इअ

अठारसंगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह-

व्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ॥

पंचसमिञ्च तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु  
मञ्ज ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

गाथा [३] पद [८] गुरु [१०] लघु [१०] सर्ववर्ण [८०]

३ ॥ अथ खमासमणसुत्तं ॥

इञ्चामि खमासमणो ! वंदिञ्चं, जावणि-  
ज्जाए निसीहिञ्चाए, मत्थएण वंढामि  
॥ इति ॥ ३ ॥

गुरु [ ३ ] लघु [ ३५ ] सर्ववर्ण [ ३८ ]

४ ॥ अथ सुगुरुने साता सुखपृञ्चा ॥

॥ इञ्चकार सुहराई सुहदेवसि<sup>२</sup>, सुख-  
तप शरीर निराबाध ॥ सुखसंजमजात्रा  
निर्वहो बेजी, स्वामी साता बेजी ? चात-  
पाणीनो वाञ्छ देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

५ ॥ अथ इरियावहियसुत्तं ॥

॥ इञ्चाकारेण संदिसह जगवन् ! इरि-  
यावहियं पङ्कमामि ? इञ्चं, इञ्चामि पङ्क-  
कमिञ्चं ॥ १ ॥ इरियावहियाए, विराह-

णाए ॥ १ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाण-  
 क्रमणे वीयक्रमणे हरियक्रमणे; उंसाजत्ति-  
 गपणगदगमट्टीमक्रमासंताणासंकमणे ॥ ४ ॥  
 जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया  
 बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया  
 ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया व्हेसिया संघा-  
 इया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद-  
 विया ठाणाउं ठाणं संकामिया जीवि-  
 याउं ववरोवियां तस्स मिञ्जामि उक्कडं  
 ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

पद [३६] संपदा [७] गुरु [१४] लघु [१३६] सर्ववर्ण [१५०]

६ ॥ अथ तस्सउत्तरीसुत्तं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायञ्चित्तकरणेणं,  
 विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं  
 कम्माणं, निग्घायण्ठाए, ठामि काउस्सग्गं  
 ॥ ७ ॥ इति ॥ ६ ॥

पद [६] संपदा [१] गुरु [१०] लघु [३९] सर्ववर्ण [४९]

७ ॥ अथ अन्नत्थजससिएणंसुत्तं ॥

अन्नत्थ जससिएणं नीससिएणं खा-  
सिएणं ढीएणं जंजाइएणं उडुएणं वाय-  
निसग्गेणं जमलीए पित्तमुञ्जाए ॥ १ ॥

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेत्तसं-  
चालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥

एवमाइएहिं आगारेहिं, अजग्गो अविरा-  
हिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव

अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं नपारेमि  
॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥

पद[१७]संपदा[ए] गुरु[१३] लघु[१२७]सर्ववर्ण[१४०]

८ ॥ अथ लोगस्ससुत्तं ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे  
जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि  
केवली ॥ १ ॥ उसजमजिअं च वंदे, संज-  
वमज्जिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं

सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥१॥ सुविहिं  
 च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥  
 विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि  
 ॥३॥ कुंथुं अरं च मद्धिं, वंदे सुणिसुवयं नमि-  
 जिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह व-  
 माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अज्जिथुआ, विहुय-  
 रयमला पहीणजरमरणा ॥ चञ्जीसंपि जि-  
 णवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिव-  
 दियमहिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥  
 आरुग्गबोहिलान्नं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु  
 ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल्लयरा, आइच्चेसु अ-  
 हियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा, सिद्धा  
 सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ८ ॥

गाथा [७] पद [३८] संपदा [३८] गुरु [३७] लघु [३३ए]  
 सर्ववर्ण [३५६]

ए ॥ अथ सामायिकसूत्रम् ॥

॥ करेमि जंतं ! सामाह्यं, सावज्जं



जोगं पञ्चस्कामि ॥ जाव नियमं पञ्जुवा-  
सामि, उविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए  
काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स ञ्ते !  
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं  
वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

गुरु [ ७ ] लघु [ ६९ ] सर्ववर्ण [ ७६ ]

१० ॥ अथ सामायिक पारवानुं सूत्र ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होइ  
नियमसंजुत्तो ॥ विन्नइ असुहं कम्मं, सा-  
माइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइ-  
अंमि उ कए, समणो इव सावर्जं हवइ  
जम्हा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामा-  
इअं कुज्जा ॥१॥ सामायिक विधे लीधुं विधे  
पार्युं, विधि करतां जे कोइ अविधि हुर्जं  
होय ते सवि हुं मनवचनकायाए करी  
मिहामि उक्कमं ॥ दश मनना, दश वचनना,  
वार कायाना, ए बत्रीश दोषमांहे जे कोइ

दोष लाग्यो होय ते सवि हुं मन-वचन-  
कायाए करी मिळामि डुकरुं ॥ इति ॥१०॥

गाथा [ १ ] गुरु [ ७ ] लघु [ ६७ ] सर्ववर्ण [ ७४ ]

२२ ॥ अथ जगचिंतामणिचैत्यवंदनम् ॥

इडाकारेण संदिसह जगवन् ! चैत्य-  
वंदन करुं ? इहं ॥ जगचिंतामणि जग-  
नाह, जगगुरु जगरक्षण ॥ जगबंधव  
जगसत्थवाह, जगजावविअरण ॥ अ-  
ठावयसंठविअ-रुव कम्मठविणासण ॥  
चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय-  
सासण ॥ १ ॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं,  
पढमसंघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय, जिण-  
वराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केव-  
लिण, कोहिसहस्स नव साहु गम्मइ ॥  
संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुंकोडिहिं  
वरणाण ॥ समणहकोमि सहसइअ, थुणि-  
जाइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु  
 नेमिजिण, जयउ वीर सच्चरिमंडण ॥ न-  
 रुअच्चहिं मुणिमुवय, मुहरिपास उहडरि-  
 अखंमण ॥ अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं  
 दिसि विदिसि जिं केवि ॥ तीआणागयसं-  
 पइअ, वंदू जिण सबेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणव-  
 इसहस्सा, लस्का बप्पन्न अठकोडिउ ॥  
 बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे  
 ॥ ४ ॥ पनरसकोडिसयाइं, कोडिवा-  
 याल लस्क अडवन्ना ॥ बत्तीससहस अ-  
 सिइं, सासयविंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥  
 इति ॥ ११ ॥

१२ ॥ अथ जंकिंचिसुत्तं ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि  
 माणुसे लोए ॥ जाइं जिणविंबाइं, ताइं  
 सद्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

गाथा [१] पद [४] संपदा [४] गुरु [३] लघु [१६] सर्ववर्ण [३३]

१६ ॥ अथ नमुत्थुणंसुत्तं वा शक्रस्तवः ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥  
आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥  
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरी-  
आणं, पुरिवसरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लो-  
गुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोग-  
पईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अज-  
यदयाणं, चक्कुदयाणं, मग्गदयाणं, सर-  
णदयाणं, बोहिदयाणं, ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं,  
धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार-  
हीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अ-  
प्पडिहयवरणाण-दंसणधराणं, विअट्ठज-  
माणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तार-  
याणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं  
॥ ८ ॥ सबन्नूणं, सबदरिसीणं, सिवमयल-  
मरुअमाणंतमक्कयमवावाहमपुणरावित्ति-  
सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जि-

णाणं, जिञ्जयाण ॥ए॥ जे अ अइञ्जा  
सिन्हा, जे अ ञविस्संतिणागए कावे ॥  
संपइ अ वट्टमाणा, सब्बे तिविहेण वंदामि  
॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

पद [ ३३ ] संपदा [ ए ] गाथा [ १ ] गुरु [ ३३ ] लघु  
[ ३६४ ] सर्ववर्ण [ ३९७ ]

१४ ॥ अथ जावंतिचेइञ्जाइंसुत्तं ॥

॥ जावंति चेइञ्जाइं, उहे अ अहे अ  
तिरिञ्जलोए अ ॥ सवाइं ताइं वंदे, इह  
संतो तत्थ संताइं ॥ १४ ॥

गाथा[१]संपदा[४]पद[४]गुरु[३]लघु[३२]सर्ववर्ण[३९]

१५ ॥ अथ जावंतकेविसाहूसुत्तं ॥

॥ जावंत केवि साहू, ञरहेरवयमहा-  
विदेहे अ ॥ सब्बेसिं तेसिं पणञं, तिविहेण  
तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

पद[४]संपदा[४]गाथा[१]लघु[३७]गुरु[१]सर्ववर्ण[३८]

१६ ॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सि-शाचार्योपाध्यायसर्वसा-  
धुच्यः ॥ १६ ॥

१७ ॥ अथ उवसग्गहरंस्तवनम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-  
घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं, मंगलक-  
द्धानाआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुळिगमंतं,  
कंठे धारेइ जो सया मणुजं ॥ तस्स गह-  
रोगमारी—इठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥  
चिद्धज दूरे मंतो, तुज्ज पणामोवि बहु-  
फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति  
न इस्कदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लब्धे,  
चिंतामणिकप्पपायवञ्जहिण ॥ पावंति अ-  
विग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥  
इअ संथुजं महायस !, जत्तिञ्जरनिञ्ज-  
रेण हिअएण ॥ ता देव ! दिज्ज बोहिं, जवे

ऋवे पासजिणचंद ! ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

गाथा [ ५ ] लघु [ १५६ ] गुरुवर्ण [ १६ ] सर्ववर्ण [ १७५ ]

१८ ॥ अथ जयवीयरायसुत्तं ॥

॥ जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं  
तुह पजावउं ऋयवं ! ॥ ऋवनिवेउं मग्गा-

णुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगवि-

रुद्धचाउं, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥

सुहगुरुजोगो तवय-णसेवणा आऋवम-

खंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआ-णवं-

धणं वीयराअ ! तुह समए ॥ तहवि मम

हुज्जा सेवा, ऋवे ऋवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

हुक्खखउं कम्मखउं, समाहिमरणं च बो-

हिलानो अ, संपजाउ मह एअं, तुह नाह !

पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं,

सर्वकल्याणकरणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां,

जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

गाथा [ ५ ] पद [ १० ] संपदा [ १० ] गुरु [ १६ ] लघु  
[ १७२ ] सर्ववर्ण [ १६१ ]

१ए ॥ अथ अरिहंतचेइयाणंसुत्तं ॥

अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं

॥ १ ॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए,

सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-

लान्नवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥

सधाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पे-

हाए वडुमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ ० ॥ इति ॥ १ए ॥

संपदा [३] पद [१ए] गुरु [१६] लघु [७३] सर्ववर्ण [७ए]

१० ॥ अथ कद्धाणकंदंस्तुतिः ॥

कद्धाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तउं

नेमिजिणं मुणिंदं, पासं पयासं सुगुणिक-

ठाणं ॥ जत्तीइ वंदे सिखिइमाणं ॥ १ ॥

अपारसंसारसमुहपारं, पत्ता सिवं दिंतु

सुइक्कसारं ॥ सब्बे जिणिंदा सुरविंदवंदा ॥

कद्धाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निवा-

णमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवा-



इदृप्पं ॥ मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, न-  
मामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदि-  
ङ्गोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले  
निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सु-  
हाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥

११ ॥ अथ स्नातस्यास्तुतिः ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या  
विजोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहतर-  
सन्नान्त्या त्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्र-  
चाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया ॥ वक्त्रं  
यस्य पुनः पुनः स जयति, श्रीवर्धमानो  
जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षी-  
रण्वाम्नोन्नतैः ॥ कुम्भैरप्सरसां पयोध-  
रत्तरप्रस्पर्धिभिः काञ्चनैः ॥ येषां मन्दररत्न-  
शैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्व-  
सुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥१॥  
अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं

विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभै-  
र्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतच-  
रणफलं ज्ञेयज्ञावप्रदीपं, प्रकृत्या नित्यं  
प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम्  
॥ ३ ॥ निष्पङ्कव्योमनीलद्युतिमलसदृशं  
बालचन्द्राभ्रदंष्ट्रं, मत्तं घण्टारवेण प्रसृतम-  
दजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥ आरूढो दि-  
व्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी,  
यद्गुः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्व-  
कार्येषु सिद्धिम् ॥ ७ ॥ इति चतुर्दशीया  
श्रीमहावीरजिनस्तुतिः ॥ ११ ॥

११ ॥ अथ संसारदावानलस्तुतिः ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधू-  
लीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसार-  
सीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥  
ज्ञावावनामसुरदानवमानवेन—चूलाविलो-  
खकमलावलिमाहितानि ॥ संपूरिताग्नि-

तलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनरा-  
जपदानि तानि ॥ ९ ॥ बोधागाधं सुपद-  
पदवीनीरपूराजिरामं, जीवाहिंसाविरल-  
लहरीसङ्गमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुग-  
ममणीसङ्कुलं दूरपारं, सारं वीरागमजल-  
निधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूलालो-  
लधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला,  
झङ्कारारावसारामलदलकमलागारजूमिनि-  
वासे ॥ गथासम्भारसारे वरकमलकरे तार-  
हाराजिरामे, वाणीसन्दोहदेहे जवविर-  
हवरं देहि मे देवि ! सारम् ॥ ७ ॥

गाथा [४] पद [१६] संपदा [१६] सर्व (लघु) वर्ण [३५३]

९३ ॥ अथ पुस्करवरदीसुत्तं ॥

पुस्करवरदीवहे, धायइसंडे अ जंबु-  
दीवे अ ॥ जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे  
नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविधंस-  
णस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाध-

रस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ १ ॥

जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कद्धाण-  
पुखलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाण-

वनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुव-  
लब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे नो ! पयउ

णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं-  
नागसुवण्णकिन्नरगण-स्सब्भूअजावच्चिए॥

लोगो जत्थ पइठिउं जगमिणं, तेलुक्कम-  
चासुरं ॥ धम्मो वडुउ सासउं विजयउं,

धम्मुत्तरं वडुउ ॥ ४ ॥

सुअस्स जगवउं करेमि काउस्सग्गं, वंद-  
णवत्तिआए० इति ॥ १३ ॥

गाथा [४] पद [१६] संपदा [ १६] गुरु [३४] लघु [१७२]  
सर्ववर्ण ( ११६ )

१४ ॥ अथ सिद्धाणंबुद्धाणंसुत्तं ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥  
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं

॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं-  
सन्ति ॥ तं देवदेवमहिञ्चं, सिरसा वंदे म-  
हावीरं ॥ १ ॥ इकोवि नमुक्कारो, जिणवर-  
वसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराजं,  
तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेल-  
सिहरे, दिस्का नाणं निसीहिञ्चा जस्स ॥ तं  
धम्मचक्रवट्ठिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥  
चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिणवरा  
चउब्बीसं ॥ परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

गाथा [ ५ ] पद [ ३० ] संपदा [ ३० ] गुरु [ ३५ ]  
लघु [ १५१ ] सर्ववर्ण [ १७६ ]

१५ ॥ अथ वेयावच्चगराणंसुत्तं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्महिठि-  
समाहिगराणं ॥ १५ ॥ करेमि काउस्स-  
ग्गं, अन्नत्थं ॥

१६ ॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

जगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्या-

य हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ १६ ॥

१७ ॥ अथ देवसिअपडिक्रमणे ठाउं सुत्तं ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! देव-  
सिअपडिक्रमणे ठाउं ? इच्छं, सबस्स-  
वि देवसिअ इच्चिंतिअ, इब्जासिअ, इ-  
च्चिठिअ, मिच्छामि इक्कडं ॥ इति ॥ १७ ॥

१८ ॥ अथ इच्छामि ठामिसुत्तं ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देव-  
सिउं अइआरो कउं, काइउं वाइउं माण-  
सिउं, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो, अकर-  
णिज्जो, इज्जाउं, इच्चिंतिउं, अणायारो,  
अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे  
दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिएहं  
गुत्तीणं, चउएहं कसायाणं, पंचएहमाणुव-  
याणं, तिएहं गुणवयाणं, चउएहं सिख्खा-

वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं  
खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्चामि  
डुक्कडं ॥ इति १८ ॥

गुरु [ १९ ] लघु [ १३० ] सर्ववर्ण [ १६७ ]

१९ ॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह  
य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो  
पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे,  
उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥ वंजणअत्थ-  
तडुजए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥  
निस्संकिअ, निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्चा अ-  
मूढदिठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्चद्व  
पजावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो,  
पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस च-  
रित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥  
बारसविहंमिवि तवे, सब्बिजतरबाहिरे कुस-  
लदिठे ॥ अगित्ताइ अणाजीवी, नायवो

सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअ-  
रिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाउं ॥ कायकि-  
लेसो संवी-णया य बज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥  
पायञ्चित्तं विणउं, वेयावच्चं तद्देव स-  
ज्जाउं ॥ जाणं उस्सग्गोवि य, अठिंनतरउं  
तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअवलविरिउं,  
परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥ जुंजइ अ  
जहाथामं, नायवो वीरिआयारो ॥ ८ ॥  
इति १९ ॥

३० ॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इत्थामि खमासमणो ! वंदिउं, जाव-  
णिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे  
मिउग्गहं, निसीहि ॥ अहोकायं कायसं-  
फासं, खमणिज्जो ने किलामो ॥ अप्पकि-  
लंताणं बहुसुजेण ने दिवसो वइक्कंतो ? ॥  
जत्ता ने ? जवणिज्जां च ने ? खामेमि ख-  
मासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सि-



आए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देव-  
 सिआए, आसायणाए, तितीसन्नयराए  
 जं किंचि मिञ्जाए, मण्डुक्कडाए, वयडुक्क-  
 डाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मा-  
 याए, लोजाए सब्बकालिआए, सब्बमि-  
 ञ्चोवयाराए, सब्बधम्माइक्कमणाए, आसा-  
 यणाए, जो मे अइयारो कज्जं, तस्स खमास-  
 मणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा-  
 णं वोसिरामि ॥३०॥

बीजीवारने वांदणे “आवस्सिआए” पद  
 न कहेवुं, अने राइये “राइ वइक्कंता”, पस्कीये  
 “पस्को वइक्कंतो”; चउमासीये “चउमासी  
 वइक्कंता” अने संवत्तरीए “संवत्तरो वइ-  
 क्तंतो” ॥ एवी रीते पाठ कहेवो ॥ इति ३० ॥

पद ( ५७ ) गुरु ( ३५ ) लघु ( ३०१ ) सर्ववर्ण ( ३३६ )

३१ ॥ अथ देवसिअं आलोउंसुत्तं ॥

॥ इञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ! देव-

सिञ्चं आलोउं ? इञ्चं, आलोएमि जो  
मे० इति ॥ ३१ ॥

३२ ॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख  
अपूकाय ॥ सात लाख तेजकाय ॥ सात  
लाख वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वन-  
स्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वन-  
स्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंजिय ॥ बे लाख  
तेइंजिय ॥ बे लाख चौरिंजिय ॥ चार  
लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार  
लाख तिर्यंच पंचेंजिय ॥ चौद लाख मनुष्य  
॥ एवंकारे चोराशी लाख जीवयोनि-  
मांदि, महारे जीवे जे कोइ जीव ह्णयो  
होय, ह्णव्यो होय, ह्णतां प्रत्ये अनुमोद्यो  
होय, ते सर्वे मनवचनकायाए करी तस्स  
मिञ्चामि उक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

३३ ॥ अथ अठारपापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपातं, बीजे मृषावादं,  
 त्रीजे अदत्तादानं, चोथे मैथुनं, पांचमे परि-  
 ग्रह, षष्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे  
 माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे  
 द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अज्ञ्याख्यानं,  
 चौदमे पैशून्यं, पन्नरमे रति-अरति, सो-  
 लमे परपरिवादं, सत्तरमे मायामृषावाद,  
 अठारमे मिथ्यात्वशब्द, ए अठार पाप-  
 स्थानमांहि, म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं  
 होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनु-  
 मोद्युं होय, ते सर्वे मने, वचने, कायाए  
 करी तस्स मिळामि डुकडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

३४ ॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ, डुव्जा-

१ जीवहिंसा. २ जुवुं. ३ चोरी. ४ स्त्रीसेवन, ५ कलंक.  
 ६ चामी. ७ परनिंदा.

सिञ्च, डच्चिठिञ्च, इञ्चाकारेण संदिस हञ्जग-  
वन् ! इञ्चं, तस्स मिञ्चामि डक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

३५ ॥ अथ श्रावकवंदितासूत्रम् ॥

॥ वंदित्तु सबसिद्धे, धम्मायरिए अ  
सबसाहू अ ॥ इञ्चामि पडिक्कमिजं, साव-  
गधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइ-  
आरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सु-  
हुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरि-  
हामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे  
बहुविहे अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे,  
पडिक्कमे देसिञ्चं सबं ॥ ३ ॥ जं बध्मिंदि-  
एहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रा-  
गेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि  
॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंक्क-  
मणे अणाप्पोगे ॥ अज्जिज्जगे अ निज्जगे,  
पडिक्कमे ॥ ५ ॥ संकां कंखं विगिच्छां, पसंसं  
तह संथवो कुळिंगीसुं ॥ सम्मत्तस्सइ-

आरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ ठक्कायसमारंजे,  
 पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठा  
 य परठा, उन्नयठा चेव तं निदे ॥ ७ ॥  
 पंचाहमणुवयाणं, गुणवयाणं च तिण्ह-  
 मइयारे ॥ सिक्काणं च चउण्हं, पडिक्कमे०,  
 ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलगपाणाइवा-  
 यविरईउं ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ प-  
 मायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहं बंधं ठविञ्जेएँ, अइ-  
 जारेँ जत्तपाणवुञ्जेएँ ॥ पढमवयस्सइआरे,  
 पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयंमी,  
 परिथूलगअत्तिअवयणविरईउं ॥ आयरि-  
 अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥  
 ११ ॥ सहसाँ रहस्सैँ दारेँ, मोसुवएसेँ अ  
 कूडलेहेँ अ ॥ बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे०  
 ॥ १२ ॥ तइए अणुवयंमी, थूलगपरदव-  
 हरणविरईउं ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ  
 पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडंप्पजंगेँ,

तप्पन्निह्वे<sup>३</sup> विरुद्धगमणे<sup>०</sup> अ ॥ कूडतुल-  
 कूडमाणे<sup>०</sup>, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अ-  
 णुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईजं ॥ आय-  
 रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥  
 अपरिग्गहिअं इत्तरं, अणंगं वीवाहंतिव्वअ-  
 णुरांगे ॥ चउत्थवयस्सइअरे, पडिक्कमे०  
 ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं-चमंमि आयरि-  
 अमप्पसत्थंमि ॥ परिमाणपरिच्छेए, इत्थ प-  
 मायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न १ खित्त-  
 वत्थू २, रूप्प सुवण्णे ३ अ कुविअपरिमा-  
 णे ४ ॥ डुपए चउत्थयंमि य ५, पडिक्क-  
 मे० ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसा-  
 सु उहं १ अहे २ अतिरिअं ३ च ॥ बुद्धि  
 ४ सइअंतरद्धा ५, पढमंमि गुणव्वए निंदे  
 ॥ १९ ॥ मज्झंमि १ अ मंसंमि २ अ, पु-  
 प्फे ३ अ फले ४ अ गंधमल्ले ५ अ ॥ उव-  
 जोग परीजोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥

१० ॥ सञ्चित्ते १ पडिबद्धे २, अपोल ३ ड-  
 प्पोलिञ्चं ४ च आहारे ॥ तुच्चोसहिन्नकण-  
 या ५, पडिक्रमे ० ॥ ११ ॥ इंगादीवर्णसाडी-  
 नाडी फोमी सुवज्राए कम्मं ॥ वाणिज्जं चैव  
 दंतलक्करसंकेसं विसविसयं ॥ १२ ॥ एवं खुजं-  
 तपिह्वणकम्मं १ निह्वंणं २ च दवदाणं  
 ३ ॥ सरदहतलायसोसं ४, असईपोसं ५  
 च वज्जिजा ॥ १३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-  
 तणकठे मंतमूलजेसजे ॥ दिन्ने दवाविए वा,  
 पडिक्रमे ० १४ ॥ एहाणुवट्टणवण्णगविलेवणे  
 सदरूवरसगंधे ॥ वत्थासणआजरणे, पडिक्र-  
 मे ० ॥ १५ ॥ कंदप्पे १ कुक्कुइए २, मोहरि ३  
 अहिगरण ४ जोगअइरित्ते ५ ॥ दंडंमि  
 अण्ठाए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६  
 ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे ३, अणवठाणे  
 ४ तहा सइविहूणे ५ ॥ सामाइअ वित-  
 हकए, पढमे सिक्कावए निंदे ॥ १७ ॥

( १९ )

आणवणे १ पेसवणे २, सहे ३ रूवे ४  
अ पुग्गल्लेकेवे ५ ॥ देसावगासिअंमी,  
बीए सिखावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-  
विही, पमायं तह चेव ज्ञोय(अ)णाजोएँ ॥  
पोसहविहिविवरीएँ, तइए सिखावए निंदे  
॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्खिवणे १, पिहिणे २  
ववएस ३ मञ्जरे ४ चेव ॥ कालाइक्कम-  
दाणे ५, चउथे सिखावए निंदे ॥ ३० ॥  
सुहिएसु अ इहिएसु अ, जा मे अस्संज-  
एसु अणुकंपा ॥ रागेण व दोसेण व, तं  
निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु  
संविजागो, न कळं तवचरणकरणजुत्तेसु ।  
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि  
॥ ३२ ॥ इहलोएँ परलोएँ, \*जीविअमरणे  
अ आसंसपज्जे ॥ पंचविहो अइआरो,  
मा मज्जं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण  
काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥

\* जीविअमरणेसु आससपज्जे



मणसा माणसिअस्स, सबस्स वयाइआ-  
 रस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्कागा-रवेसु  
 सन्नाकसायदंमैसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ,  
 जो अइआरो (तयं) अ तं निंदे ॥ ३६ ॥  
 सम्महिठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किं-  
 चि ॥ अप्पो सि होइ बंधो, जेण न नि-इंधसं  
 कुणइ ॥ ३५ ॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-  
 आवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई,  
 वाहिब्व सुसिक्किउं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा  
 विसं कुठगयं, मंतमूलविसारया ॥ विज्जा  
 हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ॥  
 ॥ आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ  
 सुसावउं ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो<sup>१</sup>,  
 आलोइअ निदिअ गुरुसगासे ॥ होइ अइ-  
 रेगलहुउं, उहरिअजरुब्व जारवहो ॥ ४० ॥

आवस्सएण एएण, सावत्तं जइवि बहुरज  
होइ ॥ इक्काणमंतकिरिअं, काही अचिरेण  
कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा,  
न य संत्तरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगुण-  
उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥  
तस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स ॥ अब्भु-  
ठ्ठिउमि आराहणाए, विरत्तमि विराहणाए  
॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-  
वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं ॥४४॥  
जावंत केवि साहू ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय-  
पावपणासणीइ ञवसयसहस्समहणीए ॥  
चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ वोत्तंतु मे  
दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता,  
सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥ सम्म-  
दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥  
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडि-  
क्कमणं ॥ असद्दहणे अ तथा, विवरीयपरू-

दधत्या ॥ सदृशैरितिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं  
 सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ १ ॥ कषाय-  
 तापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमु-  
 खाम्बुदोजतः ॥ स शुक्रमासोज्ज्वलवृष्टिसन्नि-  
 जो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥

गाथा ( ३ ) पद ( १२ ) गुरु ( १९ ) लघु ( ९१ ) सर्व-  
 वर्ण ( ११० )

४० ॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यदन्तांशुके-  
 सरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पु-  
 नातु वः ॥ १ ॥ येषामन्निषेककर्म कृत्वा,  
 मत्ता हर्षजरात् सुखं सुरेन्द्राः ॥ तृणमपि  
 गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय  
 ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कलङ्कनिर्मुक्तममुक्त-  
 पूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ-  
 पूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रप्राषितं, दिनागमे नौ-

मि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ४० ॥

४१ ॥ अथ श्रुतदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं ॥

सुअदेवया जगवई, नाणावरणीअकम्म-  
संघायं ॥ तेसिं खवेज सययं, जेसिं सुअ-  
सायरे जत्ती ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं च-  
रणसहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सां दे-  
वी हरज उरिआइं ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

४२ ॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क  
मलगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगव-  
ती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ १ ॥ इ-  
ति ॥ ४२ ॥

४३ ॥ अथ जुवनदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

जुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ॥

वणाए अ॥४७॥खामेमि सव्वजीवे,सव्वे जीवा  
 खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वजूएसु, वेरं मज्झ  
 न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ,  
 निंदिअ गरहिअ दुगंढिअं सम्मं ॥  
 तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-  
 व्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥ ३५ ॥

३६ ॥ अथ अब्भुठिउंसुत्तं ॥

इडाकारेण संदिसह जगवन् !, अब्भु-  
 ठिउंसि ( अब्भुठिउंहं ), अब्भिज्जतरदेव-  
 सिअं खामेउं ? इहं, खामेमि देवसिअं, जं  
 किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं जत्ते पाणे  
 विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे, उच्चासणे  
 समासणे, अंतरजासाए, उवरिजासाए, जं  
 किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा  
 बायरं वा तुव्वे जाणह, अहं न जाणामि  
 तस्स मिडामि डक्कडं ॥ ३६ ॥

३७ ॥ अथ आयरिञ्च उवञ्जाए सुत्तं ॥

आयरिञ्च उवञ्जाए, सीसे साहम्मिए  
कुल गणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सबे  
तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण-  
संघस्स, ञ्गवउ अंजलिं करिञ्च सीसे ॥  
सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयं-  
पि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, ञ्जावउ  
धम्मनिहिञ्चनिञ्चचित्तो ॥ सबं खमावइ-  
त्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥३॥३७॥

३८ ॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

इत्थामो अणुसठिं, नमो खमासमणा-  
णां, नमोऽर्हत्तु ॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय,  
स्पर्द्धमानाय कम्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोहा-  
य, परोहाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां वि-  
कचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं

दधत्या ॥ सदृशैरितिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं  
 सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ ९ ॥ कषाय-  
 तापादितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमु-  
 खाम्बुदोऽतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्नि-  
 जो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३९ ॥

गाथा ( ३ ) पद ( १२ ) गुरु ( १९ ) लघु ( ९१ ) सर्व-  
 वर्ण ( ११० )

४० ॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दन्तांशुके-  
 सरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पु-  
 नातु वः ॥ १ ॥ येषामग्निषेककर्म कृत्वा,  
 मत्ता हर्षजरात् सुखं सुरेन्द्राः ॥ तृणमपि  
 गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय  
 ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कलङ्कनिर्मुक्तममुक्त-  
 पूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ-  
 पूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रजाषितं, दिनागमे नौ-

मि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ४० ॥

४१ ॥ अथ श्रुतदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥

सुअदेवया जगवई, नाणावरणीअकम्म-  
संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ-  
सायरे जत्ती ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि० ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं च-  
रणसहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा दे-  
वी हरउ डुरिआइं ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

४२ ॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क-  
मलगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगव-  
ती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ १ ॥ इ-  
ति ॥ ४२ ॥

४३ ॥ अथ जुवनदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

जुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०



ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसं-  
यमरतानाम् ॥ विदधातु जुवनदेवी, शिवं  
सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः सा-  
ध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञया-  
न्नः सुखदायिनी ॥ २ ॥ इति ॥ ४३ ॥

४४ ॥ अथ अड्डाश्जेसु मुनिवन्दनसूत्रम् ॥

अड्डाश्जेसु दीवसमुद्देशु, पन्नरससु क-  
म्मज्जमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण-  
गुह्वपग्गिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अ-  
ठारससहस्ससीलंगधारा ॥ अक्कुयायारच-  
रित्ता, ते सब्बे सिरसा मणसा मत्थएण वं-  
दामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

४५ ॥ अथ वरकनकसूत्रम् ॥

॥ वरकनकशङ्खविज्जुममरकतधनसन्नि-

ञं विगतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वा-  
मरपूजितं वन्दे ॥ १ ॥ इति ॥ ४५ ॥

४६ ॥ अथ लघुशान्तिस्तवः ॥

॥ शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ता-  
शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शान्तिनिमित्तं,  
मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति-  
निश्चितवचसे, नमो नमो ऋगवतेऽर्हते पू-  
जाम् ॥ शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने  
स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष-  
कमहा-संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रै-  
लोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवा-  
य ॥ ३ ॥ सर्वासुरसुसमूह -स्वामिकसंपू-  
जिताय न जिताय ॥ जुवनजनपावनोद्यत-  
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुःख-  
तौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥  
दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥

॥५॥ यस्येति नाममन्त्र-प्रधानवाक्योपयो-  
 गकृततोषा॥ विजया कुरुते जनहित-मिति  
 च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ ऋवतु नम-  
 स्ते ऋगवति !, विजये ! सुजये ! परापरैरजिते !  
 ॥ अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे  
 ऋवति ! ॥७॥ सर्वस्यापि च सङ्घस्य, ऋक-  
 ह्याणमङ्गलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव-सु-  
 तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ ऋव्यानां कृ-  
 तसिद्धे !, निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम्  
 ॥ अत्रयप्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्ति-  
 प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ ऋक्तानां जन्तूनां, शु-  
 ऋावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां  
 धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिन-  
 शासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति  
 जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो-वर्द्धनि ! ज-  
 यदेवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल-  
 विषविषधर-इष्टग्रहराजरोरणत्रयतः ॥ रा-

हसरिपुगणमारी-चौरेतिश्वापदादिच्यः १२  
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च  
 कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,  
 कुरु कुरु स्वरिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥  
 जगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति-तुष्टिपु-  
 ष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति  
 नमो नमो ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ यः हः  
 ह्रीं फुद् फुद्\* स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना-  
 माक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ॥ कुरुते  
 शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै  
 ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित-मन्त्रपदविद्-  
 र्जितः स्तवः शान्तेः ॥ सखिखादित्रयवि-  
 नाशी, शान्त्यादिकरश्च त्रक्तिमताम् ॥ १६ ॥  
 यश्चैनं पठति सदा, शृणोति त्रावयति वा  
 यथायोगम् ॥ स हि शान्तिपदं यायात्

सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः  
 ह्यं यान्ति, विद्यन्ते विघ्नवद्वयः । मनः  
 प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥  
 सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्  
 ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शास-  
 नम् ॥ १९ ॥ इति लघुशान्तिस्तवः ॥ ४६ ॥  
 ४७ ॥ अथ चणकसाय ॥

चणकसायपडिमल्लुन्नूरणु, दुक्तयम-  
 यणबाणमुसुमूरणु ॥ सरसपिअंगुवणु गय-  
 गामिण, जयण पासु चुवणत्तयसामिण ॥ १ ॥  
 जसु तणुकंतिकडप्पसिणिधुण, सोहइ  
 फणिमणिकिरणाविधुण ॥ नं नवजलहर-  
 तडिद्वयलंबिण ॥ सो जिणु पासु पयण्ण  
 वंणिण ॥ २ ॥ इति चणकसाय ॥ ४७ ॥

४८ ॥ अथ ऋरहेसरनी सज्झाय ॥

ऋरहेसर बाहुवली, अजयकुमारो

अ ढंढणकुमारो ॥ सिरिञ्च अणियाञ्चो,  
 अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज  
 थूविञ्चदो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी  
 ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिञ्च केसि  
 करकंमू ॥ २ ॥ हह्व विहह्व सुदंसण, साल  
 महासाल सालिञ्चदो अ ॥ ञ्चदो दसण्ण-  
 ञ्चदो, पसन्नचंदो अ जसञ्चदो ॥ ३ ॥ जं-  
 बुपहु वंकचूळो, गयसुकुमालो अवंतिसु-  
 कुमालो ॥ धन्नो इवाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो  
 अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जर-  
 किअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥  
 कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ  
 ॥ ५ ॥ पञ्चवो विणहुकुमारो अहकुमारो  
 दढप्पहारी अ॥सिज्जांस कूरगडुअ, सिज्जां-  
 ञ्चव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा-  
 सत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥  
 जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति

॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मय-  
 णरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरी सीया,  
 नंदा नृदा सुनृदा य ॥ ८ ॥ रायमई रिसि-  
 दत्ता, पञ्जमावइ अंजणा सिरीदेवी ॥  
 जिठ सुजिठ मिगावइ, पञ्जावई चिह्नणा-  
 देवी ॥ ९ ॥ बंजी सुंदरी रुपिणि, रेवइ  
 कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धा-  
 रणी, कलावई पुष्पचूला य ॥ १० ॥  
 पञ्जमावई य गोरी, गंधारी लस्कमणा  
 सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चामा, रुपिणि  
 कण्ठ महिसीर्ज ॥ ११ ॥ जस्का य जस्क-  
 दिन्ना, नूआ तह चैव नूअदिन्ना य ॥ सेणा  
 वेणा रेणा, नयणीर्ज थूलिन्नहस्स ॥ १२ ॥  
 इच्चाइ महासइर्ज, जयंति अकलंकसीलक-  
 लिआर्ज ॥ अज्जावि वज्जाइ जासिं, जसप-  
 डहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सता  
 सतीर्जनी सज्जाय ॥ ४८ ॥

४ए ॥ अथ मण्डजिणाणं सज्झाय ॥

॥मण्ड जिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह  
धरह सम्मत्तं ॥ ब्विह आवस्सयंमि, उज्जु-  
त्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहव-  
यं, दाणं सीलं तवो अ ज्ञावो अ ॥ स-  
ज्जाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ  
॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथूणाणं, गुरुथुअ-  
साहम्मिआण वच्छद्धं ॥ ववहारस्स य सु-  
द्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥ उवसम  
विवेग संवर, ज्ञासासमिई ब्वीवकरुणा य  
॥ धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चर-  
णपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो,  
पुत्थयव्विहणं पज्ञावणा तित्थे ॥ सहाण कि-  
च्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ४ए ॥

५० ॥ अथ तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंडं करजोड, जिनवर



नामे मंगल कोड ॥ पहलेले स्वर्गे लाख ब-  
त्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥  
बीजे लाख अठाविश कल्यां, त्रीजे बार  
लाख सह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अड लाख  
धार, पांचमे वंडुं लाखज चार ॥ २ ॥  
ठेठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चा-  
लिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ  
हजार, नव दशमे वंडुं शत चार ॥ ३ ॥  
अग्यार बारमे त्रणशें सार, नव ग्रैवेके त्र-  
णशें अठार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली,  
लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ स-  
हस सत्ताणु त्रैविश सार, जिनवर चुवन  
तणो अधिकार ॥ लांबां सो जोजन वि-  
स्तार, पचास जंचां बोहोंतेर धार ॥ ५ ॥  
एकसो एंशी बिंब परिमाण, सजासहित  
एकचैत्ये जाण ॥ सो कोड बावन कोड संजा-  
ख, लाख चोराणुं सहस चौंआला ॥ ६ ॥ सा-

तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं  
त्रणकाळ ॥ सात कोडने बोहोंतेर लाख ॥  
जुवनपतिमां देवल जाख ॥७॥ एकसो एंशी  
बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण  
॥ तेरशें कोरु नेव्याशी कोड, साठ लाख वंडुं  
करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने उंगणसाठ,  
तिर्गलोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख  
एकाणु हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार  
॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वळी जेह, शा-  
श्वता जिन वंडुं तेह ॥ ऋषज चंडानन वा-  
रिषेण, वर्धमान नामे गुणसेण ॥ १० ॥  
समेतशिखर वंडुं जिन वीश, अष्टापद वंडुं  
चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार,  
आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखे-  
श्वर केशरियो सार, तारंगे श्री अजित  
जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पास, जीराव-  
लोने थंजण पास ॥ १२ ॥ गामनगर पुर पा-

टण जह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥  
विहरमान वंडं जिन वीश, सिध अनंत  
नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्रीपमां जे  
अणगार, अढार सहस सिद्धांगना धार ॥  
पंच महाव्रत समिती सार, पाखे पखावे  
पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अच्यन्तर तप  
उजमाल, ते मुनि वंडं गुणमणिमाल ॥  
नित नित उठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे  
नवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५० ॥

५१ ॥ अथ सकलार्हत ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठानमधिष्ठानं शिव-  
श्रियः ॥ नूर्नुवःस्वस्त्रयीशानमार्हन्त्यं प्र-  
णिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्वयत्रावैः,  
पुनतस्त्रिजगज्जानम् ॥ क्षेत्रे काले च सर्व-  
स्मिन्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं  
पृथिवीनाथमादिमं निष्परिग्रहं ॥ आदिमं  
तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥

अर्हतमजितं विश्वकमलाकरजास्करम् ॥  
 अम्बानकेवलादर्शसंक्रान्तजगतं स्तुवे ॥४॥  
 विश्वन्नव्यजनारामकुट्यातुट्या जयन्ति ताः  
 ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंभवजगत्पतेः ॥  
 ५ ॥ अनेकान्तमताम्नोधिसमुद्धासनच-  
 न्द्रमाः ॥ दद्यादमन्दमानन्दं, जगवानजिन-  
 न्दनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रोत्तेजितां-  
 ङ्घिनखावलिः ॥ जगवान् सुमतिस्वामी, त-  
 नोत्वजिमत्तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रन्नप्रन्नोर्दे-  
 हजासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ॥ अन्तरङ्गारि-  
 मथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसु-  
 पार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ॥ नम-  
 श्चतुर्वर्णसङ्घगगनाजोगजास्वते ॥ ९ ॥  
 चन्द्रप्रन्नप्रन्नोश्चन्द्रमरीचिनिचयोज्ज्वला ॥  
 मूर्त्तिर्मूर्त्तिसितध्याननिर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥  
 १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवल-  
 श्रिया ॥ अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः ॥

बौधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमा-  
 नन्दकन्दोद्भेदनवाम्बुदः ॥ स्याद्वादामृत-  
 निस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥  
 ज्वरोगार्त्तजन्तूनामगदङ्कारदर्शनः ॥ निः-  
 श्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः  
 ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चततीर्थकृत्कर्मनि-  
 र्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः  
 पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाचः,  
 कतकदोदसोदराः ॥ जयन्ति त्रिजगच्चेतो-  
 जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयम्भूरमण-  
 स्पर्धिकरुणारसवारिणा ॥ अनन्तजिदन-  
 न्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥ १६ ॥  
 कल्पद्रुमसधर्माणमिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम्  
 ॥ चतुर्धा धर्मद्वेषारं, धर्मनाथमुपास्महे  
 ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्नानिर्ममली-  
 कृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमःशान्त्यै,  
 शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री-

कुन्थुनाथो जगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः  
॥ सुरासुरनृनाथानामेकनाथोऽस्तु वः श्रिये  
॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवाँश्चतुर्थारन-  
जोरविः ॥ चतुर्थपुरुषार्थश्रीविदासं वित-  
नोतु वः ॥ २० ॥ सुरासुरनराधीशमयूरन-  
ववारिदम् ॥ कर्मजूनमूलने हस्तिमह्वं  
मह्वीमज्जिष्टुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिजा-  
प्रत्यूषसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,  
देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ बुठन्तो न-  
मतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ॥ वारि-  
प्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥ २३ ॥  
यडुवंशसमुडेन्दुः, कर्मकदहुताशनः ॥  
अरिष्टनेमिर्जगवान्, जूयाद्वोऽरिष्टनाशनः  
॥ २४ ॥ कमठे धरणेन्दे च, स्वोचितं  
कर्म कुर्वति ॥ प्रचुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्व-  
नाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीर-  
नाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानन्दस-

शेरजमरात्रायार्हते नमः ॥ १६ ॥ कृता-  
 पराधेऽपि जने, कृपामन्धरतारयोः ॥ ईष-  
 द्वाष्यार्द्धयोर्जडं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ १७ ॥  
 जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसे-  
 वितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहितस्त्रि-  
 ञ्जुवनचूडामणिर्जगवान् ॥ १८ ॥ वीरः  
 सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता,  
 वीरेणाग्निहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं  
 नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य  
 घोरं तपो, वीरे श्रीघृतिकीर्तिकान्तिनिचयः  
 श्रीवीर जडं दिश ॥ १९ ॥ अवनितलगताना-  
 म्, कृत्रिमाकृत्रिमानां; वरञ्जुवनगतानां,  
 दिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां,  
 देवराजार्चितानां; जिनवरञ्जनानां, ज्ञाव-  
 तोऽहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामा-  
 द्यमादिमं परमेष्ठिनाम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं

श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकज-  
वार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो, देवः सि-  
ध्विधूविशालहृदयालङ्कारहारोषमः - ॥

देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्जेदपञ्चान-  
नो, ज्ञव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं श्री-  
वीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापद-  
पर्वतो गजपदः सम्मेतशैलान्निधः, श्रीमान्  
रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥  
वैजारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकू-  
टादयस्तत्र श्रीरुषजादयो जिनवराः कुर्व-  
न्तु वो मङ्गलम् ॥ ३३ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ अथ श्रीपादिकादि संक्षेपअतिचार ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि  
तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ  
एसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार,  
तप आचार, वीर्याचार ए पंचविध आचार-



मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिव-  
स मांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां  
हुओ होय ते सवि हुं मन वचन कायाए  
करी मिळामि डकडं. ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ का-  
ले विणए बहुमाणे उवहाणे तह य निह-  
वाणे ॥ वंजण अत्य तड्जए, अडुविहो  
नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलाए  
जणयो गुणयो. विनयहीन, बहुमानहीन,  
योगउपधानहीन, अनेरा कन्हे जणी  
अनेरो गुरु कह्यो; देववंदन वांदणे पडिक-  
माणे सज्जायकरतां जणतां गुणतां कूडो  
अदर कान्हामात्रे आगलो ओगो जणयो;  
सूत्र अर्थ विहुं कूडां कल्यां; साधु तणे  
धमें काजो डांडो अणपडिलेह्यां काजो  
उधरिउ; असज्जाइ, अणोजामांहि दशवै-  
कालिकप्रमुख सिधांत जणयो गुण्यो;

श्रावक तणे धर्मे शिविरावलि, पडिक्कमणा-  
सूत्र, उपदेशमाला प्रमुख, कालवेला का-  
जो अणुधरिए पढियो; ज्ञानध्व्य, ज-  
दित उपेदित प्रज्ञापराध विणास्यो; विण-  
सतां उवेस्यो; सार संज्ञाल न कीधी;  
तथा ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी,  
कवली, नोकारवाली, सांपडा, सांपडी, दस्त-  
री, वैही, उलियाँ प्रत्ये पग लाग्यो; थुंक लाग्यां  
थुंके करी अद्धर मांज्यो; कन्हे उतां आ-  
हार नीहार कीधो; ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, म-  
त्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी; आपणा  
जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो; ज्ञानाचार-  
व्रतविषइउं अनेरो जे कोइ० पद० ॥१॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्सं-  
किय निक्कंखिय, निव्वितिगिळा अमूढदिठी

१ नाश कर्यो. २ उपेक्षा करी ३ चोपसो.

४ लखेला कागळना वींटा.

अ ॥ उववूह शिरीकरणे, वड्डह पत्रावणे  
अठ ॥ ३ ॥

देवगुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न  
कीधुं, तथा एकांतनिश्चय न कीधो; धर्म-  
संबंधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी  
नहिं; तपोधन तपोधनी प्रत्ये मलमलिन-  
गात्र देखी डुगंठा कीधी; मिथ्यात्वितणी  
पूजा प्रज्ञावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं  
तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा  
कीधी; अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्री-  
ति अज्ञक्ति कीधी; तथा देवद्रव्य, गुरुद्र-  
व्य साधारण द्रव्य, चकित उपेक्षित, प्रज्ञा-  
पराध विणास्थो, विणसतो उवेख्यो; ठती  
शक्तें सार संजाल न कीधी; तथा साधर्मि-  
कशुं कलह कर्मबंध कीधो; अधोती अष्ट-  
पट मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी; वास-  
कूपी, धूपघाणुं, कलश तणो ठबको लाग्यो;

देहरा पोसालमांहि मल श्लेषम बुह्यां; हास्य  
केली कुतुहल कीधां; जिनजवने चोराशी  
आशातना , गुरुप्रत्ये तेत्रीश आशातना,  
ठवणायरीय हाथ थकी पाड्युं; पडिवेहवुं  
विसार्युं; गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं  
नहि; दर्शनाचारव्रत विषइओ अनेरो जे  
कोइ अतिचार पद० ॥ ९ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणि-  
हाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं  
गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अडविहो  
होइ नायवो ॥ ४ ॥

ईर्यासमिति, ज्ञाषासमिति, एषणास-  
मिति, आदानजंडमत्तनिस्केवणासमिति,  
पारिष्ठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचन-  
गुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचनमाता सा-  
धुतणे धर्म सदैवं, श्रावकतणे धर्म सामा-  
यिक पोसह बीधे, रुडी पेरे पाळ्यां नहि

खंडणा विराधना दुःश, चारित्राचारव्रत  
विषडुं अनेरो जे कोइ अतिचार. पक्ष ० ३

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे सम्यकृत्व-  
मूल बारव्रत, सम्यकृत्व तणा पांच अति-  
चार ॥ संका कंख विगिह्या ॥ शंका-श्री  
अरिहंततणां बल, अतिशय, ज्ञानल-  
क्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा,  
चारित्र्यानां चारित्र, जिनवचनतणो सं-  
देह कीधो; आकांक्षा-ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर,  
क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादर-  
देवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रजाव  
देखी रोग आवे इहलोकपरलोकार्थे पू-  
ज्या, मान्या; बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, ज-  
रडा, जगत, लिंगीया, जोगी, दरवेश, अ-  
नेरा दर्शनीयानुं कष्ट मंत्र चमत्कार देखी  
परमार्थ जाण्या विना जूलाव्या, मोह्या; कुशा-  
स्त्र शीख्यां, सांजळ्यां; श्राद्ध, संवत्सरी, होली,

बलेव, माहीपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज,  
 गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपांचम,  
 जीवणाढठी, शीयलसप्तमी, ध्रुवअष्टमी,  
 नौखीनवमी, अहवाद्दशमी, व्रतअग्या-  
 रसी, वत्सवारसी, धनतेरसी, अनंतचौ-  
 दशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरा-  
 यन, नैवेद्य, याग, जोग मान्या; पीपले  
 पाणी रेड्यां, रेडाव्यां; घरबाहिर कूवे, तला-  
 वे, नदी, जह, कुंड, वावि समुडे, पुण्यहेतु  
 स्नान कीधां; वितिगिडा—धर्म संबंधीया  
 फल तणो संदेह कीधो; जिन अरिहंत ध-  
 र्मना आगर, विश्वोपकारसागर, मोक्षमा-  
 र्गना दातार, इस्या गुणजणी पूज्या नहिं;  
 इहलोकपरलोक संबंधीया जोग वंठित  
 पूजा कीधी; रोग आतंक कष्ट आवे क्षीण-  
 वचन याग मान्या; महात्मानां ज्ञात, पा-  
 णी मल शोभा तणी निंदा कीधी; प्रीति

मांडी; तेहनी दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म  
मान्यो, श्री सम्यक्त्वव्रतविषय्यो अ-  
नेरो ॥ ४ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रते  
पांच अतिचार. वहबंधवविज्ञेए ॥ द्विपद  
चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो,  
गाढ बंधण बांध्युं, घणे जारे पीड्यो, निद्वं-  
बण कर्म कीधुं, चारा पाणी तणी वेलाए  
सार संजाल न कीधी. वेहणे देणे कुणहने  
ओढ्युं, लंघाव्युं. तेणे जूरुख्ये आपण जि-  
म्या. सल्यां धान्य रुडीपेरे जोयां नहि.  
पाणी गलतां ढोळ्युं, जीवाणी सूकव्युं, ग-  
ळतां जाळक नांखी, गळणुं रुडुं न कीधुं.  
इंधण बाणां अणशोध्यां बाढ्यां; ते मांदि  
साप, खजुरा, विंढी, सरोला, जूवा, गिंगो-  
डा, साहतां मूआ, इहव्या, रुडे स्थानके  
न मूक्या; कीडी, मंकोडी, उदेही, घीमेल

कातरा, चूडेल, पतंगीया, देडकां, अलसीयां,  
इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा; विणसतां  
उवेख्या, चांप्यां; डुहव्या, हलावतां चला-  
वतां पाणी बांटतां अनेराइ कामकाज क-  
रतां निध्वंसपणुं कीधुं, जीवरक्षा रुडी न की-  
धी. पहेले स्थूल प्राणातिपात व्रत विषइउं०.

बीजे स्थूलमृषावादविरमण व्रते पांच  
अतिचार. सहसा रहस्स दोरे० ॥ सहसा-  
त्कारे कुणह प्रत्ये अयुक्त आल दीधुं.  
स्वदारा मंत्र नेद कीधो. अनेराइ कुणहनो  
मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहने अ-  
पाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी. कूडो लेख  
लख्यो. जूठी साख नरी. थापणमोसो की-  
धो. कन्या, ढोर, जूमि संबंधीया लेहणे देहेणे  
वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोड्या.  
बीजे स्थूलमृषावाद व्रत विषइयो अनेरो०  
त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रते पांच



अतिचार. तेनाहडप्पजगे० घर बा-  
 हार, क्षेत्र, खले, परायुं अणमोकट्युं लीधुं,  
 वावर्युं; चोराई वस्तु लीधी; चोर प्रत्ये सं-  
 बल दीधुं; विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं; कूडां  
 मान, मापां कीधां; माता, पिता, पुत्र, मित्र,  
 कलत्र वंची कुणहने दीधुं; जूदी गांठ की-  
 धी; नवा जूना, सरस नीरस, वस्तुतणा जे-  
 लसंजेल कीधां. त्रीजे अदत्तादान व्रत विष-  
 इयो अनेरो० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविर-  
 मण व्रते पांच अतिचार. अपरिग्रहिा  
 ईतर० ॥ अपरिग्रहिता गमन कीधुं; अनंग  
 क्रीडा कीधी; विवाहकरण कीधुं; काम जोग  
 तणे विषे अति अजिलाष कीधो; दृष्टि वि-  
 पर्यास कीधो; आठम चउदशी तणा नियम  
 लेइ ज्ञांग्या; अतिक्रम, व्यतिक्रम, अति-  
 चार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुआ.

चोथे मैथुन विरमण व्रत विषईयो अनेरो ० ०  
पांचमे स्थूलपरिग्रहपरिमाण व्रते  
पांच अतिचार. धण धन्न खित्त वथ्थू ० ॥  
धण धन्न विगेरे परिमाण उपरुं रखाव्युं,  
सोनुं रुपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं  
नहि, पठवुं विसायुं, पांचमे परिग्रह परि-  
माण व्रत विषइयो अनेरो ० ॥ ९ ॥

बठे दिग्विरमण व्रते पांच अतिचार.  
गमणस्स य परिमाणे ० ॥ उह्ठ दिशे, अहो-  
दिशे, तिर्यग् दिशे जावा आववातणा नि-  
यम लेइ ज्ञांग्या; एक दिशी संक्षेपी बीजी-  
दिशि वधारी; विस्मृति लगे अधिक जमि  
गया, पाठवणी आघी पाढी मोकली; व-  
हाण व्यवसाय कीधो; वर्षाकाले गामतरुं  
कीधुं. बठे दिग्विरमण व्रत विषइयो  
अनेरो ० ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोग व्रते पांच अति-

चार. सञ्चिते पडिवधे ॥ सचित्त आहारे,  
 सचित्तप्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहि  
 ञ्कणया, डप्पोलसहि ञ्कणया, अपक्व  
 आहारे, डपक्व आहारे, तुर्गौषधि, कुली  
 आंबली, ओला, उंबी, पहुंक, पापडीतणां  
 ञ्कण कीधां; अनंतकाय, अथाणां तणां  
 ञ्कण कीधां; तथा रिंगण, विंगण पीळू,  
 पीचू, पंपोटा, महुडां, वरुबोर, प्रमूख बहु-  
 बीज तणां ञ्कण कीधां. ॥ गाथा ॥ सचि-  
 त्त दब्व विगई, वाणह तंबोल वथ्थ कुसुमेसु;  
 वाहण सयण विलेवण, बंजदिसी नाण  
 ञ्कतेसु. ॥ १ ॥ ए चौद् नियम दिन प्रत्ये  
 लीधा नहि, लेइ ने संक्षेप्या नहि; सचित्त,  
 डव्य, विगय, खासडा, वाहन, तंबोल, फो-  
 फल, बेसण, सयन, पाणी अंधोलण, फल,  
 फूल, जोजन, आठादने जे कोई नियम लेइ  
 जांग्या; बावीश अञ्कय, बत्रीश अनंत-

कायमांहि आदू, मूला, गाजर, पिंड, पिं-  
 डालू, कचूरो, सूरण, खिलोडां, मोरडा,  
 सेलरां, कुली आंबली, वाघरडां, गरमर,  
 नीली गलो, वाढहोल खाधी; वाशी कठोल,  
 पोली, रोटली, त्रण दिवसना उदन, मधु,  
 महुडां, विष, हीम, करहा, घोलवडां, अ-  
 जाण्यां फल, टींबरु, गुदां, बोर, अथाणु,  
 काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिबडां खा-  
 धां; लगजग वेलाए वालु कीधां; दिन उ-  
 ग्याविण शिराव्या; जे कोइ अनेरो अति-  
 चार हुउं होय; तथा कर्मतः-इंगालकम्मे,  
 वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीकम्मे  
 ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लखवाणिज्य,  
 रसवाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, ए  
 पांच वाणिज्य ॥ जंतपिह्वणकम्मे, निह्वं-  
 ळणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलाय-  
 सोसणया, असइपोसणया, ए पांच सा-

मान्य ॥ ए पन्नर कर्मादान मांहे जे कोइ  
कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरा जे कां-  
इ सावद्य कर्म समाचर्या होय, सातमे ज्यो-  
गोपज्ञोग व्रत विषइयो अनेरो ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंडविरमणव्रते पांच  
अतिचार. कंदप्पे कुकुइए ॥ अनर्थदंम  
जे कहिये काम काज पाखे सुधा पाप ला-  
ग्यां; मुख हास्य खेल, कुतूहल, अंग कु-  
चेष्टा कीधी; निरर्थक लोकने कर्षण, गां  
वाही गांमंतरे कमावानी बुद्धि दीधी; कण  
कुवस्तु ढोर लेवराव्यां; अनेराइ पापोपदेश  
दीधां; कोश, कूहाडा, रथ, जखल, मुशल,  
घर, घंटी प्रमुख सज्ज करी म्हेट्यां; मा-  
ग्यां आप्यां; अंधोल, नाहणे, पग धोयणे,  
खाले पाणी ढोट्यां, अथवा जीलणा जी-  
ट्यां; जूवटुं रम्यां; नाटक पेखणां जोयां;  
पुरुष स्त्रीनां रुप शृंगार वखाण्यां; राज-

कथा, देश कथा, प्रकृत कथा, स्त्री कथा,  
पराइ तांत कीधी; कर्कश वचन बोढ्या; सं-  
जेडा लग्गाड्या; सरज, कूकडा प्रमुख जूझ-  
तां जोयां, कलह करता जोयां; लोक  
तणी उपार्जना कीधी; सुख कीर्ति देश लइ-  
चितवी; लूण, पाणी, माटी, कण, कपा-  
शिया, काजविण चांप्या, ते उपर बेठा;  
आळी वनस्पति चूटी, अंगीठा काष्ट व-  
णिज कीधा; बाश, पाणी, घी, तेल, गोळ,  
अम्लवेतस, बेरंजातणां प्राजन उघामां  
महेढ्यां; ते मांदि कीमी, मंकोमी, कुंथुआ,  
उधेही, घीमेल, गिरोळी प्रमुख जे कोइ  
जीव विणठा; सुडा, सालही, क्रीडा हेतु  
पांजरे घाढ्या; अनेराइ जीवने रागद्वेष  
लगे एकने ऋद्धि परिवार वंठी, एकने  
मृत्यु हाणी वंठी. आठमे अनर्थदंडवि-  
रमाण व्रत विषइओ अ० ॥ १९ ॥

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार.  
 तिविहे डुप्पणिहाणे ० ॥ सामायिकमांहि  
 मनमां आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. वचन  
 सावद्य बोल्यां. शरीर अणपडिलेह्युं ह-  
 लाव्युं. बती शक्तिए सामायिक लीधुं  
 नहि. उघाडे मुखे बोल्यां, सामायिक मांहि  
 उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही  
 लागी; विकथा कीधी; कण, कपाशिया,  
 माटी, पाणीतणा संघट्ट हुआ; मुहपत्ति  
 संघट्टी; सामायिक अणपूगे पार्युं, पारवुं  
 विसार्युं. नवमे सामायिक व्रत विषइओ  
 अनेरो जे कोइ अतिचार ० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिक व्रते पांच अति-  
 चार. आणवणे पेसवणे ० ॥ आणवण-  
 पयोगे, पेसवणपयोगे, सहाणुवाइ, रू-  
 वाणुवाइ, बहियापुग्गल पस्केवे. निमी नूमि-  
 कामांहि बाहिरथी अणाव्युं. आपण कन्हैथी

बाहिर मोकळ्युं. शब्द संजलावी, रूप दे-  
खाडी, कांकरो नांखी आपणपणुं बतुं  
जणाव्युं, पुद्गलतणो प्रक्षेप कीधी. दशमे  
देशावगाशिक व्रत विषइओ अनेरो ० १४

अग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अ-  
तिचार. संथारुच्चारविहि ० ॥ पोसहलीधे  
संथारातणी जूमि बाहिरलां थंमिलां सं-  
दिसे रुडां शौध्यां नहि, पडिलेह्यां नहि,  
थंमिल मात्रू परठवतां चिंतवणी न कीधी;  
“अणुजाणह जस्सुग्गहो” न कह्यो, पर-  
ठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न  
कह्यो. देहरा पोसालमांहे पेसतां निसरतां  
निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी. पु-  
ढवी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय  
तणा संघट्ट परिताप उपडव कीधा; सं-  
थारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो,  
अविधिण संथार्या; पारणादिकतणी चिंता



निपजावी. कालवेलाए देव न वाद्या; पो-  
सह असुरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्वतिथे  
पोसह लीधो नहि. अग्यारमे पोषधोप-  
वास व्रत विषइयो अनेरो ० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविजाग व्रते पांच अ-  
तिचार. सच्चिते निस्किवणे ० ॥ सच्चित  
वस्तु हेठ उपर ठतां असुऊतुं दान दीधुं;  
वहोरवा वेलाए टळी रह्या; मत्सर लगे  
दान दीधुं; देवातणी बुध्दे पराइ वस्तु ध-  
णीने अणकहे दीधी; अथवा आपणी करी  
दीधी; अणदेवातणी बुध्दे सुऊतुं फेमी  
असुऊतुं कीधुं; गुणवंत आवे ऋक्ति न  
साचवी; अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां ठती  
शक्ते उधर्यां नहि, दीन क्षीण प्रत्ये अ-  
नुकंपादान दीधुं नहि, देतां वार्युं; बारमे  
अतिथिसंविजाग व्रत विषइयो अ-  
नेरो ० ॥ १६ ॥

संक्षेपणा तणा पांच अतिचार. इह-  
लोए परलोए ० ॥ इहलोगासंसप्पओगे,  
परलोगासंसप्पओगे, जीविआसंसप्पओगे,  
मरणासंसप्पओगे, कामओगासंसप्प-  
ओगे, इहलोके धर्मतणा प्रजावलगे रा-  
जक्रुद्धि ओग वांढ्या; परलोके देव, दे-  
वेंड, चक्रवर्तितणी पदवी वांढी; सुख  
आवे जीववातणी वांढ कीधी, दुःख आवे  
मरवातणा वांढ कीधी; काम ओग तणी  
वांढ कीधी, संक्षेपणाव्रतविषइयो अनेरो  
जे कोइ अतिचार पद ० ॥ २७ ॥

तपाचार बार जेद ॥ ठ बाह्य ठ अ-  
च्यंतर अणसणमूणोअरिया ० ॥ अणसण  
अणो उपवासादिक पर्वतिथे तप न  
कीधुं; उणोदरी बे चार कवल ऊणा न  
उठ्या; उव्यअणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप  
न कीधो; रस त्याग न कीधो; कायक्लेश

लोचादिक कष्ट कर्मां नहि; संलीनता  
 अंगोपांग संकोची राख्यां नहि; पञ्चस्काण  
 ज्ञांग्या. पाटलो डगतो फेड्यो नहि; गं-  
 ठसहि पञ्चस्काण ज्ञांग्युं; उपवास, आं-  
 विल, नीवी कीधे मुखे सचित्त पाणी  
 घाल्युं, वमन हुओ. बाह्यतप विषइओ  
 अनेरो ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ पायञ्चित्तं विणओ ॥  
 सुधुं प्रायश्चित्त पडिवज्युं नहि, आलो-  
 यण तणी सुधी टीप कीधी नहि; सुधो  
 तप पहुंचाड्यो नहि; साते जेदे विनय  
 साचव्यो नहि; दश जेदे वैयावच्च न कीधो,  
 पंचविध सज्जाय न कीधो; कषाय वोस-  
 राव्यो नहि; दुःखद्वय कर्मद्वय निमित्त  
 कानसग्ग न कीधो; शुक्लध्यान, धर्मध्यान  
 ध्यायां नहि; आर्त्त तथा रौद्र ध्यान

ध्यायां. अच्यंतर तप विषइओ अ-  
नेरो० ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार. अणिगूहिय-  
बलविरियो० ॥ मनोवीर्य-धर्मध्यान तणे  
विषे उद्यम न कीधो, पडिक्कमणे देवपूजा,  
धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप, चावना,  
बती शक्तिण गोपवी, आलसे उद्यम  
न कीधो, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं, रुडां  
खमासण न दीधां, वीर्याचार विषइओ  
अनेरो० ॥ २० ॥

पडिसिद्धानं करणे० ॥ प्रतिषेध-अ-  
जक्ष्य, अनंतकाय, महारंज परिग्रह, जे  
कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,  
मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोचन, राग,  
द्वेष, कलह, अच्यारुख्यान, पैशुन्य, रति  
अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्या-  
त्वशक्य, ए अढार पापस्थानक मांहे कीधां,

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, ते सवि हुं मने, व-  
चने, कायाए करी मिच्छामि डुकडं ॥ ११ ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे सम्यकृत्व मू-  
ल बार व्रत एकसो चोवीश अतिचार,  
पद्द दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर जाणतां,  
अजाणतां हुवो होय, ते सवि हुं मनव-  
चनकायाए करी मिच्छामि डुकडं ॥ ११ ॥

इति पादिकादि संक्षिप्त अतिचार.

॥ अथ श्री पादिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि  
तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय  
एसो पंचहा भणिजं ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, द-  
र्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्या-  
चार ॥ ए पंचविध आचारमांहे अनेरो जे  
कोइ अतिचार पद्द दिवसमांहे सूक्ष्म बा-  
दर जाणतां अजाणतां हुजं होय, ते सवि

हुं मने, वचने, कायाए करी तस्स मिच्छा-  
मि डुकडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ काले  
त्रिणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्ह-  
वणे ॥ वंजण अत्थ तडुअए, अठविहो ना-  
णमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाए ज्ञ-  
णयो गुणयो नहीं, अकाले ज्ञणयो. विनय-  
हीन, बहुमानहीन, योग उपधान हीन,  
अनेराकन्दे ज्ञणी अनेरो गुरु कह्यो. देव  
गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सज्जाय करतां, ज्ञ-  
णतां, गुणतां, कूडो अकर काने मात्राये  
अधिको ओगे ज्ञणयो. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ  
कूडो कह्यो. तडुअय कुडां कह्यां. ज्ञणीने  
विसार्यो. साधुतणे धर्म काजे काजो अण-  
उद्धर्ये, डांडो अणपमिलेहे, वसति अण-  
शोधे, अणपवेसे, असजाइ, अणोकाय-  
मांहे श्री दशवैकालिकप्रमुख, सिद्धांत ज्ञ-

प्यो गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थविरावलि,  
 पम्किमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत  
 ज्ञप्यो गुण्यो. कालवेला काजो अणउद्धर्ये  
 पढ्यो. ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी,  
 कवली, नोकारवाली, सांपडा, सांपडी, द-  
 स्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्ये पग ला-  
 ग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो,  
 उंशीसे धर्यो; कने बतां आहार नीहार  
 कीधो. ज्ञानद्वय ज्ञतां उपेक्षा कीधी.  
 प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो,  
 बती शक्ति ए सार संजाल न कीधी. ज्ञा-  
 नवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर चिंतव्यो. अ-  
 वज्ञा आशातना कीधी. कोइप्रत्ये ज्ञतां;  
 गणतां अंतराय कीधो. आपणा जाण-  
 पणातणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुत  
 ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवल-  
 ज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असदहणा

कीधी. कोइ तोतडो बोबडो हस्यो, वि-  
तक्यो, अन्यथा प्ररूपणाकीधी ॥ ज्ञाना-  
चारव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अति-  
चार पद्व दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्सं-  
किय . निक्कंखिय, निव्वितिगिन्हा अमूढदि-  
ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्चद्ध प-  
जावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्मतणे  
विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत  
निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फलतणे  
विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं. साधुसा-  
ध्वीनां मल मलिन गात्र देखी डुगंठा नि-  
पजावी. कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उ-  
पर अजाव हुं. मिथ्यात्वीतणी पूजा-  
प्रजावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा  
संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी.  
अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अ-



ऋक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं. तथा  
 देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण-  
 द्रव्य, ऋक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणा-  
 श्या, विणसता उवेख्या, षती शक्तिए सार  
 संज्ञाल न कीधी. तथा साधर्मिकसाथे  
 कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपड  
 मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी. विंबप्रत्ये,  
 वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशतणो ठबको-  
 लाग्यो. विंब हाथथकी पाड्युं. उसास  
 निःसास लाग्यो. देहरे, उपाश्रये मलश्ले-  
 ष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेळ, केलि,  
 कुतूहल, आहार नीहार कीधां; पान, सो-  
 पारी, निवेदीअं खाधां. ठवणायरिय हा-  
 थथकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्यां. जिन-  
 ऋवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी  
 प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गु-

रुचन तद्वत्ति करी पडिवज्युं नहीं ॥ द-  
र्शनाचारव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ  
अतिचार पद्व दिवस० ॥ १ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणि-  
हाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं  
गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो  
होइ नायवो ॥ १ ॥ ईर्या समिति ते अण-  
जोए हिंइया. ज्ञाषा समिति ते सावद्य व-  
चन बोल्या. एषणा समिति ते तृण, डंगल,  
अन्न पाणी असूऊतुं लीधुं. आदानजंड-  
मत्तनिस्केवणा समिति ते आसन, शयन,  
उपकरण मातरुं प्रमुख अणपुंजी जीवा-  
कुल जूमिकाये मूक्युं लीधुं. पारिष्ठाप-  
निका समिति ते मलमूत्रश्लेष्मादिक अण-  
पुंजी जीवाकुल जूमिकाये परठव्युं. मनो-  
गुप्ति, मनमां आर्त्त रौड ध्यान ध्यायां.

वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोद्ध्यां. काय-  
 गुप्ति, शरीर अणपमिलेह्युं हलाव्युं; अ-  
 णपुंजे बेठा. ए अष्टप्रवचन माता ( ते,  
 सदैव साधुतणे धर्मे अने ) श्रावकतणे  
 धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रूडीपेरे पा-  
 ह्यां नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारि-  
 त्राचार व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अ-  
 तिचार पद दिवस मांही सूक्ष्मबादर जा-  
 णतां अजाणतां हुउं होय, ते सवि हुं  
 मने वचने कायाए करी तस्स मिञ्चामि  
 डुकुडं ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्री सम्यक्-  
 त्वमूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अ-  
 तिचार ॥ संकाकंखविगिञ्जा ० ॥ शंका-श्री-  
 अरिहंततणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी,  
 गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारि-  
 त्रीयानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो सं-

देह कीधो ॥ आकांक्षा-ब्रह्मा, विष्णु, महे-  
 श्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादर-  
 देवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, ह-  
 नुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक  
 देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूआ  
 देव, देहेरांना प्रजाव देखी रोग आतंक  
 कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्थे पूज्या  
 मान्या. सिद्ध विनायक जीराऊलाने मान्युं,  
 इब्बुं, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी, ऋरडा,  
 ऋगत, विंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश,  
 अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र, चम-  
 त्कार देखी परमार्थ जाण्या विना झूलाव्या,  
 मोह्या. कुशास्त्र शीख्यां, सांज्ञह्यां. श्राद्ध,  
 संवच्चरी, होलि, बलेव, माहिपूनम, अजा-  
 पडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायक चोथ,  
 नागपांचमी, क्लिणाढठी, शीलसातमी, ध्रु-

वआठमी, नौली नौमी, अहवा दशमी, व्र-  
 तअग्यारशी, वल्लवारशी, धनतेरशी, अनं-  
 तचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उ-  
 त्तरायण, नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, ज्ञो-  
 ग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां,  
 पीपले पाणी घाट्यां, घलाव्यां. घर बाहिर  
 क्षेत्र, खले, कूवे, तलावे, नदीए, जहे,  
 वाविए, समुज्जे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां,  
 कराव्यां, अनुमोद्यां. दानदीधां. ग्रहण, श-  
 निश्वर, माहामासे, नवरात्री, न्हायां. अ-  
 जाणना थाप्यां, अनेराइ व्रत व्रतोळां की-  
 धां, कराव्यां ॥ वितिगिच्छा-धर्मसंबंधी-  
 आफलतणे विषे संदेह कीधो. जिन अरि-  
 हंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर,  
 मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणत्रणी न  
 मान्या, न पूज्या. महासती, महात्मांनी  
 इहलोक परलोक संबंधीया ज्ञोग वांठित

पूजा कीधी. रोग आतंक कष्ट आव्ये खी-  
ण वचन जोग मान्या. महात्माना ज्ञात,  
पाणी, मल शौजातणी निंदा कीधी. कु-  
चारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुजा-  
व हुजं. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रजावना  
देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दाक्षिण्य  
लगे तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्री सम्य-  
कूत्वव्रत विषयिजं अनेरो जे कोइ अति-  
चार, पद्द दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रते  
पांच अतिचार ॥ वहबंधंबविज्ञेए० ॥  
द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव  
घाल्यो, गाढे बंधने बांध्यो. अधिक जार  
घाल्यो. निर्लाभन कर्म कीधां. चारापाणी-  
तणी वेलाए सारसंजाल न कीधी. लेहेणे  
देहेणे किणहिप्रत्ये लंघाव्यो, तेणे जूखे  
आपणे जम्या. कन्हे रही मराव्यो. बंधी-

खाने घलाव्यो. सदल्यां धान्य तावडे नां-  
रूयां, दलाव्यां, ञरडाव्यां, शोध्दी न वा-  
वर्यां. इंधण ; बाणां, अणशोध्यां बाळ्यां.  
तेमांहि साप, विंठी, खजूरा, सरवला, मां-  
कड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ; उह-  
व्या, रुडेस्थानके न मुक्या. कीडि मको-  
डिनां इंडां विगोह्यां. लीख फोडि, उदेही,  
कीडी, मकोडि, घीमेल, कातरा चूमेल, पतं-  
गिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंतां,  
डांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख  
जीव विण्ठा. माला हलावतां हलावतां  
पंखी, चडकलां, कागतणां इंडां फोड्यां.  
अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चां-  
प्या, उहव्या. कांइ हलावतां, चलावतां,  
पाणी बांटां अनेरा कांइ कामकाज करतां,  
निध्वर्सपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी.

संखारो सूकाव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं.  
अणगलपाणी. वावर्युं. रूडीजयणा न  
कीधी. अणगल पाणीए जीट्यां. बुगडां  
धोयां. खाटला तावडे नाख्या, जाटक्या.  
जीवाकुल जूमि लींपी. वाशीगार राखी.  
दलणे, खांडणे, लींपणे, रूडी जयणा न  
कीधी. आठम चउदशना नियम जांग्याः  
धूणी करावी ॥ पहिले स्थूलप्राणातिपात-  
विरमणव्रत विषडुं अनेरो जे कोइ  
अतिचार पद दिवसमांहि ० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रते पांच अ-  
तिचार ॥ सहसारहस्सदारे ० ॥ सहसातकारे  
कुणह प्रत्ये अजुगतुं आळ अभ्याख्यान  
दीधुं. स्वदारा मंत्र जेद कीधो. अनेरा कु-  
णहनो मंत्र, आलोच मर्म प्रकाश्यो. कु-  
णहने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी.



कूडो लेख लख्यो. कूडी साख जरी. थापण  
 मोसो कीधो. कन्या, गौ, ढोर, जूमिसंबंधि  
 लेहणे देणे व्यवसाये वाद वढवाड करतां  
 मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ पगतणी गाळी  
 दीधी. कडकडा मोड्या. मर्म वचन बोल्या  
 ॥ बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रत विष-  
 इजं अनेरो जे कोइ अतिचार पद ० ॥१॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रते  
 पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पजंगे ० ॥ घर  
 बाहिर खेत्र, खळे, पराइ वस्तु अणमो-  
 कली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी.  
 चोर धाड प्रत्ये संकेत कीधो. तेहने सं-  
 बल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्ध-  
 राज्यातिक्रम कीधो. नवा, पुराणा, सरस,  
 विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना जेव सं-  
 जेल कीधा. कूडे काटले, तोले, माने, मापे  
 व्होर्यां. दाणचोरी कीधी. कुणहने लेखे

वरांस्यो. साटे लांच लीधी. कूडो. करहो  
 काढ्यो. विश्वासघात कीधो, परवंचना की-  
 धी. पासंग कूडां कीधां. डांडी चढावी, ल-  
 हके त्रहके कूडां काटलां मान मापां कीधां.  
 माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुण-  
 हिने दीधुं. जूदी गाठ कीधी. था-  
 पण उलवी. कुणहिने लेखे पलेखे जू-  
 लव्युं. पडी वस्तु उळवी लीधी ॥ त्रिजे  
 स्थलअदत्तादानविरमणव्रत विषयिउं अ-  
 नेरौ जे कोई अतिचार पद्द दिवस० ॥३॥

चोथे स्वदारासंतोष, परस्त्रीगमनविर-  
 मणव्रते पांच अतिचार ॥ अपरिगृहि-  
 याइत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वर  
 परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या,  
 परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोक्तणे विषे

१ वेश्यागमन. २ थोडा काल माटे कोईए राखेली  
 स्त्री साथे गमन.

दृष्टि विपर्यास कीधो. सराग वचन बोढ्यां.  
 आठम, चतुदश, अनेरी पर्वतिथीना नियम  
 लइ प्रांग्या. घरंघरणां कीधां कराव्यां. वर-  
 बहु वखाण्यां. कुविकटप चिंतव्यो. अंनं-  
 गक्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां.  
 पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली  
 परणाव्यां. कामजोगतणे विषे तीव्र अ-  
 जिदाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अ-  
 तिचार, अनाचार, सुदृष्टे स्वप्नांतरे दुःखा  
 कुस्वप्न लाध्यां. नट, विट स्त्रीशुं हांसुं  
 कीधुं ॥ चोथे स्वदारासंतोषव्रत विष-  
 यिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द ॥४॥

पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रते पांच अ-  
 तिचार ॥ धणधन्न खित्त वत्थू ॥ धन,  
 धान्य, क्षेत्र, वास्तुं, रूप्य, सुवर्ण, कुर्पे,

१. नातरुं-पुनर्लभ. २ व्यवहार विरुद्ध अंगोवने काम-  
 क्रिया करवी. ३ घर वगेरे इमारत. ४ त्राबुं पित्तल वगेरे धातु.

द्विपद, चतुष्पद, ए नवविध परिग्रहतणा  
 नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्त्ता लगे सं-  
 क्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे  
 लेखे कीधो. परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं.  
 लइने पढिउं नहीं. पढवुं विसार्युं. अलीधुं  
 मेढ्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रह-  
 परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ  
 अतिचार पद दिवसमांदि ० ॥ ५ ॥

बढे दिग्परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥  
 गमणस्स उ परिमाणे ० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अ-  
 धोदिशि, तिर्यग्दिशि ए जावा आववातणा  
 नियम लइ ज्ञांग्या. अनाज्ञोगे विस्मृतलगे  
 अधिकजूमि गया. पाठवणी आधीपाढी मो-  
 कली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले  
 गामतरुं कीधुं. जूमिका एकगमा संखेपी,  
 बीजीगमा वधारी ॥ बढे दिग्परिमाण-

व्रत विषयिञ्च अनेरो जे कोइ अतिचार  
पक्ष दिवसमांहि ॥ ६ ॥

सातमे जोगोपजोगविरमणव्रते जो-  
जन आश्री पांच अतिचार, अने कर्महुंती  
पंद्र अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥  
सचित्ते पडिबधे ॥ सचित्त नियम लीधे  
अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार,  
डपक्काहार, तुडोषधितणुं जकरण कीधुं.  
जंला, जंबी, पौक, पापडी खाधां ॥ सचित्त-  
द्वविगई, -वाणहतंबोदवत्यकुसुमेसु ॥  
वाहणसयणविलेवण, -बंजदिसिन्हाण-  
जत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगत,  
रात्रिगत लीधां नहीं, लेइने जांग्यां. वा-  
वीश अजक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि  
आड, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालू, कचूरो,  
सूरण, कुंलि आंबली, गलो, वाघरडां

खाधां. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण  
दिवसनं उदन लीधुं. मधु, महुडा, माखण,  
माटी, वेंगण, पीबु, पीचु, पंपोटा, विष,  
हिम, करहा, घोखवडां, अजाण्यां फल,  
टिंबरु, गुंदा, महोर, अथाणुं, आम्बलबोर,  
काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां  
खाधां. रात्रि नोजन कीधां. लग्नग वे-  
ळाए वाळु कीधुं, दिवस विणजगे शीराव्या.  
तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान—इंगालकम्मे,  
वणकम्मे, साडिकम्मे, जाडिकम्मे, फोडिकम्मे,  
ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिजे, लखवाणिजे,  
रसवाणिजे, केसवाणिजे, विसवाणिजे,  
ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निहं-  
ञ्चणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहत-  
त्तायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच  
सामान्य ॥ ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य,  
पांच सामान्य . पन्नर कर्मादान .

वद्य महारंज, रागण लीह्याला कराव्या.  
 इंटनिजाडा पचाव्या. धाणी, चणा, पकान  
 करी वेच्या. वाशी माखण तवाव्यां. तिव  
 वोहोर्या, फागणमास उपरांत राख्या. द-  
 लीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान,  
 बिलाडा, सूफा, सालहि पोष्या. अनेरा जे  
 कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचर्या.  
 वाशीगार राखी. लींपणे, गूपणे, महारंज  
 कीधो. अणशोध्या चूलासंधुक्क्या. घी, तेल,  
 गोल, बशतणां जाजन उघाडां मूक्यां.  
 तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, घीरोली पडी,  
 कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी ॥ सा-  
 तमे जोगोपजोगविरमणव्रत विषयिज अने-  
 रो जे कोइ अतिचार पद्द दिवसमांदि ० ७  
 आठमे अनर्थदंडविरमणव्रते पांच  
 अतिचार ॥ कंदप्पे कुकुईए ० ॥ कंदर्प

लगे विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधाः  
 पुरुष स्त्रीना हाव, जाव, रूप, शृंगार, वि-  
 षयरस त्रखाण्यां. राजकथा, जर्तकथा, दे-  
 शकथा स्त्रीकथा कीधी. पराङ् तातै कीधी,  
 तथा पैशुन्यपणुं कीधूं. आर्त्त-रौडध्यान  
 ध्यायां. खांडा, कटार, कोश, कूहाडा, रथ,  
 उखल, मुशल, अग्नि, घरंटी, निसाहे, दा-  
 तरडां प्रमुख अधिकरण मैली दाक्षिण्य  
 लगे माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो.  
 अष्टमी चतुर्दशीए खांडवा दलवातणा नि-  
 यम जांग्या. मूखरंपणा लगे असंबंध वा-  
 क्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. अंधोळे,  
 नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेल पाणि  
 तेल गंध्यां. जीवणे जील्या, जुवटे रम्या,  
 हिंचोळे हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां.

१ जोजन आश्री कथा. २ वात ३ खाणीयो. ४  
 सांबेळुं. ५ दाळ वाटवानी गीपर. ६ एकठा करी. ७ वाचाळपणे.



कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश व-  
चन बोल्या. आक्रोश कीधा. अबोला लीधा.  
करकडा मोड्या. मञ्जर धर्यो. संजेडा ल-  
गाड्या. श्राप दीधा, जेंसा, सांढ, हुंडु,  
कूकडा, श्वानादिक झुळार्या, झुळतां जोयां,  
खादिलगे अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं,  
कण, कपाशीया, काजविण चांप्या, ते उपर  
बेठा. आळी वनस्पति खुंदि. सूइ, शस्त्रा-  
दिक निपजाव्यां. घणी निजा कीधी. राग  
द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांढी, ए-  
कने मृत्यु हानी वांढी ॥ आठमे अनर्थ-  
दंडविरमणव्रत विषइज अनेरो जे कोइ  
अतिचार पळदिवसमांदि ॥ ७ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ ति-  
विहे डुप्पणिहाणे ॥ सामायिक लीधे मने  
आहट्टदोहट्ट चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्यां.

शरीर अणपन्निह्युं हलाव्युं. ठती वेलाए  
सामायिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघाडे  
मुखे बोढ्यां. उंघ आवी. वात विकथा घ-  
रतणी चिंता कीधी. बीज दीवा तणी उ-  
जेहि हुइ. कण, कपाशीया, माटी, मीठुं,  
खडी, धावडी, अरणेटो पाषाणप्रमुख चां-  
प्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरीयका-  
य, बीयकाय, इत्यादिक आज्ञ्यां. स्त्री, ति-  
र्यंच तणा निरंतरं परम्परं संघट्ट हुआ. मु-  
हपत्तियो संघट्टी. सामायिक अणपूग्युं पार्युं,  
पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयि-  
उं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिवस० ए  
दशमे देशावगाशिकव्रते पांच अति-  
चार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवण-  
प्पजंगे, पेसवणप्पजंगे, सहाणुवाइ, रूवा-  
णुवाइ, बहियापुग्गलपकेवे ॥ नियमित

भूमिकामांहि बाहेरथी कांई अणाव्युं,  
आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकळ्युं. अ-  
थवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, सांद करी  
आपणपणुं बतुं जणाव्युं॥ दशमे देशावगा-  
शिकवत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति-  
चार पद्द दिवसमांहि० ॥ १० ॥

अग्यारमे पौषधोपवासव्रते पांच अ-  
तिचार ॥ संधारुच्चारविही० ॥ अप्पडिले-  
हिय डुप्पडिलेहिय सज्जासंधारण ॥ अप्प-  
डिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण  
भूमि ॥ पोसह लीधे संधारा तणी भूमि  
न पुंजी, बाहिरला लहुडां वडां स्थंडिल  
दिवसे शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं. मातरुं  
अणपुंज्युं हलाव्युं, अणपुंजी भूमिकाए प-  
रठव्युं, परठवतां “अणुजाणहजस्सुग्गहो”  
न कह्यो, परठव्या पुंठे वार त्रण “वोसिरे  
वोसिरे” न कह्यो. पोसहशाळामांहि पे-

सतां “ निसीहि ” निसरतां “आवस्सहि”  
 वार त्रण त्रणी नही. पुढवी, अप्, तेउ, वाउ,  
 वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप,  
 उपडव हुआ. संथारापोरिसीतणो विधि  
 त्रणवो विसार्यो. पोरिसीमाहे उंध्या. अ-  
 विधे संथारो पाथर्यो. पारणादिकतणी  
 चिंता कीधी. कालवेलाए देव न वांध्या.  
 पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो लीधो,  
 सवेरो पार्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो नहीं.  
 ॥ अग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइउं अ-  
 नेरो जे कोई अतिचार पदु ॥ ११ ॥

वारमे अतिथिसंविजागव्रते पांच अ-  
 तिचार ॥ सचित्ते निस्खिवणे ॥ सचित्त  
 वस्तु हेठ उपर बतां महात्मा महासती  
 प्रत्ये असूऊतुं दान दीधुं. देवानी बुधे  
 असूऊतुं फेडी सूऊतुं कीधुं, परायुं फेडी  
 आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुधे सूऊतुं फेडी

असू ऊतु कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वो-  
 होरवा वेला टली रह्या. असुर करी महात्मा  
 तेज्या, मञ्जर धरी दान दीधुं. गुणवंत आव्ये  
 प्रक्ति न साचवी, बती शक्ते स्वामीवात्सल्य  
 न कीधुं. अनेरा धर्मक्षेत्र सीदाता बती श-  
 क्ति ए उधर्या नहीं, दीन दीणं प्रत्ये अनु-  
 कंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिधिसंवि-  
 ज्ञागव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति-  
 चार पद्द दिवसमांहि ० ॥ १९ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए  
 परलोए ० ॥ इहलोगासंसप्पजंगे, परलोगा-  
 संसप्पजंगे, जीवियासंसप्पजंगे, मरणासंस-  
 प्पजंगे, कामजोगासंसप्पजंगे ॥ इह लोके  
 धर्मना प्रजाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य,  
 परिवार, वांछ्या. परलोके देव, देवेंद्र, वि-  
 द्याधर, चक्रवर्तीतणी पदवी वांछी. सुख

आव्ये जीवितव्य वाढ्युं. दुःख आव्ये  
मरण वाढ्युं. कामजोगतणी वांग कीधी ॥  
संक्षेपणाव्रत विषयिञ्च अनेरो जे कोइ  
अतिचार पद्द दिवसमांदि ० ॥ १३ ॥

तपाचार बार जेद ब बाह्य, ब अर्ज्य-  
तर ॥ अणसण मूणोयरिआ ० ॥ अणसण  
जणी उपवास विशेष पर्व तिथे बती श-  
क्तिए कीधो नहीं. उणोदरीव्रत ते को-  
दिया पांच सात उणा रह्या नहीं. वृत्ति-  
संक्षेप ते डव्य जणी सर्व वस्तुनो संक्षेप  
कीधो नहीं. रसत्याग ते विगयत्याग न  
कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट कर्या  
नहीं. संक्षीनता अंगोपांग संकोची राख्यां  
नहीं. पच्चरकाण जाग्यां. पाटलो डगतो  
फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि,  
पुरिमह, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि;

१ स्निग्ध रस ( विगय ) नो त्याग-लोडुपतानो त्याग.

आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पारवुं विसार्युं.  
बेसतां नवकार न ज्ञायो. उठतां पञ्च-  
स्काण करवुं विसार्युं. गंठसीजं भांग्युं.  
नीवि, आंबिल, उपवासादिक तप करी  
काचुं पाणी पीधुं. वमन हुजं. बाह्यतप विष-  
यिजं अनेरो जे कोइ अतिचार पद ॥ १४ ॥

अच्यंतरतप ॥ पायञ्चित्तं विणजं ॥  
मनशुद्धे गुरु कन्दे आलोअण लीधी  
नहीं, गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धे  
पहुंचाड्यो नहीं. देव, गुरु, संघ, साहामी  
प्रत्ये विनय साचव्यो नहीं. बाल, वृद्ध,  
ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं.  
वांचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा,  
धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वाध्याय न  
कीधो. धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायां.  
आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मद्वय  
निमित्ते लोगस्स दश काउस्सग

न कीधो ॥ अर्च्यन्तर तप विषयिञ्च अनेरो  
जे कोइ अतिचार पद्ददिवसमांहि ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणि-  
गूहिअबलविरिञ्च ॥ पढवे, गुणवे, वि-  
नय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह,  
दान, शील, तप, जावनादिक धर्मकृत्यने  
विषे मन, वचन, कायातणुं बतुं बल  
वीर्य गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न  
दीधां. वांदणातणा आवर्त्तविधि साचव्या  
नहीं. अन्यचित्त निरादरपणे बेठा, उता-  
वळुं देववंदन, पम्किमणुं कीधुं ॥ वीर्या-  
चार विषयिञ्च अनेरो जे कोइ अतिचार  
पद्द ॥ १६ ॥

नाणाइअठ पइवय, सम संलेहण पण  
पन्नर कम्मेसु ॥ बारसतप विरिअतिगं, च-  
उव्वीसंसय अइयारा ॥ पडिसि-धाणंकरणे ॥  
प्रतिषेध-अन्नदय, अनंतकाय, बहुबीज-



ऋक्षणा, महारंजपरिग्रहादिक कीधा, जीवा-  
 जीवादिक सूक्ष्म विचार सर्वह्या नहीं.  
 आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा  
 कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अद-  
 तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान,  
 माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अज्या-  
 ख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद,  
 मायामृषावाद, मिथ्यात्वशय्य ए अठार  
 पापस्थान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय;  
 दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न  
 कीधां, अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आझा  
 विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥  
 ए चिहुं प्रकार मांहे अनेरो जे कोइ अ-  
 तिचार पद दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर जा-  
 णतां अजाणतां हुजं होय ते सवि हुं  
 मने, वचने कायाए करी तस्स मि-  
 ङ्गामि उक्कडं ॥ १७ ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित  
मूल बारव्रत, एकसोचोवीश अतिचार-  
मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिव-  
समांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां  
हुज होय ते सवि हुं मने वचने कायाए  
करी तस्स मिञ्चामि डुक्कडं.

इति श्री श्रावक पस्की, चोमासी, संवहरी  
अतिचार समाप्त ॥ ५३ ॥

॥ अथ प्रजातनां पञ्चस्काण ॥

॥ प्रथम नमुक्कारसहिअमुठिसहिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, मुठि-  
सहिअं पञ्चस्काइ ॥ चउब्विहंपि आहारं,  
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थ-  
णाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ ५४ ॥

॥ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं,

साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चस्काइ ॥ उ-  
ग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं,  
पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाजोगेणं  
सहसागारेणं, पच्चन्नकालेणं, दिसामोहेणं,  
साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहि-  
वत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ ५५ ॥

॥ त्रीजुं एकासणा बियासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं,  
मुठिसहिअं, पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे, च-  
उव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं  
साइमं ॥ अन्नत्थणाजोगेणं सहसागारेणं,  
पच्चन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं,  
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं,  
विगइजं पच्चस्काइ अन्नत्थणाजोगेणं,  
सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं,  
उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमस्सिएणं, पारिठा-  
वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमा-

द्वित्तियागारेणं ॥ बियासणं पञ्चखाइ, ति-  
विहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं,  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, सागारि-  
यागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअञ्जुठा-  
णेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सव्वसमाद्वित्तियागारेणं ॥ पाणस्स ले-  
वेण वा, अलेवेण वा, अचेण वा, बहुले-  
वेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वो-  
सिरइ ॥ जो एकासणानुं पञ्चखाण करवुं  
होय तो, बियासणंने ठेकाणे एकासणंनो  
प्राठ केहेवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं  
पञ्चखाण समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ चोथुं आयंबित्तनुं पञ्चखाण ॥

॥ जग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पो-  
रिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं पञ्चखाइ ॥  
जग्गए सूरे चउद्विहंपि आहारं, असणं,  
पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाजोगेणं,

साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चकाइ ॥ उ-  
ग्गए सूरे, चउविहंपि आहारं, असणं,  
पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाजोगेणं  
सहसागारेणं, पच्चनकालेणं, दिसामोहेणं,  
साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहि-  
वत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ ५५ ॥

॥ त्रीजुं एकासणा वियासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं,  
मुठिसहिअं, पच्चकाइ ॥ उग्गए सूरे, च-  
उविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं  
साइमं ॥ अन्नत्थणाजोगेणं सहसागारेणं,  
पच्चनकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं,  
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं,  
विगइउ पच्चकाइ अन्नत्थणाजोगेणं,  
सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं,  
उक्कित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठा-  
वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमा-

द्विवक्तियागारेणं ॥ बियासणं पच्चस्काइ, ति-  
विहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं,  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, सागारि-  
यागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुठा-  
णेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सव्वसमाद्विवक्तियागारेणं ॥ पाणस्स ले-  
वेण वा, अलेवेण वा, अत्तेण वा, बहुले-  
वेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वो-  
सिरइ ॥ जो एकासणानुं पच्चस्काण करवुं  
होय तो, बियासणंने ठेकाणे एकासणंनो  
प्राठ केहेवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं  
पच्चस्काण समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ चोथुं आयंबिल्लनुं पच्चस्काण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पो-  
रिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चस्काइ ॥  
उग्गए सूरे चउद्विहंपि आहारं, असणं,  
पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाजोगेणं,

सहसागारेणं, पञ्चन्नकालेणं, दिसामोहेणं,  
साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सबसमा-  
हिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पञ्चस्काइ ॥  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, लेवाले-  
वेणं, गिहत्थसंसठेणं, उस्कित्तविवेगेणं, पा-  
रिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब-  
समाहिवत्तियागारेणं ॥ एगासणं पञ्चस्काइ  
तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, सागारि-  
आगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्जुठा-  
णेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण  
वा, अलेवेण वा अच्चेण वा, बहुलेवेण  
वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ  
॥ इति आयंबिलनुं पञ्चस्काण ॥ ५७ ॥

॥ पांचमुं तिविहारउपवासनुं ॥

॥ सूरेज्जगए, अब्जत्तठं पञ्चस्काइ

तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, सा-  
इमं अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, पा-  
रिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब-  
समाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसिं,  
साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चस्काइ अन्न-  
त्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, पच्चन्नकालेणं,  
दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं  
सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण  
वा, अलेवेण वा, अच्चेण वा, बहुलेवेण  
वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइं  
इति तिविहार उपवासनुं पच्चस्काण॥५७॥

॥ बहुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सुरे उग्गए अब्भत्तठं पच्चस्काइ च-  
उविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं,  
साइमं, अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं,  
पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, स-



सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति  
चउविहार उपवासनुं ॥ ५ए ॥

॥ अथ सांऊनां पञ्चस्काण ॥

॥ तिहां प्रथम बीयासणं, एकासणं,  
आयंबिल, तिविहार उपवास अने ठठ  
जो करे तो तेणे पाणहारनुं पञ्चस्काण क-  
रवुं ते आवी रीते-

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चस्काइ ॥  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा-  
गारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसि-  
रइ ॥ इति ॥ ६० ॥

॥ बीजुं चउविहारनुं पञ्चस्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ चउविहंपि  
आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥  
अन्नत्थणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा-  
गारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसि-  
रइ ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ त्रीजुं तिविहारनुं पञ्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पञ्चस्काइ ॥ तिविहंपि  
आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्य-  
णाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,  
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति  
तिविहारनुं ॥ ६२ ॥

॥ चोथुं इविहारनुं पञ्चस्काण ॥

दिवस चरिमं पञ्चस्काइ इविहंपि आ-  
हारं, असणं, खाइमं, अन्नत्यणाजोगेणं,  
सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-  
वत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगा-  
सियनुं पञ्चस्काण करवुं तेनो पाठ ॥

॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं प-  
ञ्चस्काइ अन्नत्यणाजोगेणं, सहसागारेणं,  
महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं,  
वोसिरइ ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ बहुं पोसहनुं पञ्चस्काण ॥

॥ करेमि ज्ञते ! पोसहं, आहारपोसहं  
देसजं सबजं, सरीरसक्कारपोसहं सबजं,  
वंजचेरपोसहं सबजं, अवावारपोसहं सबजं,  
चजविहे पोसहे ठामि ॥ जाव दिवसं अ-  
होरत्तं पज्जुवासामि ॥ इविहं तिविहेणं ॥  
मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न का-  
रवेमि, तस्स ज्ञते ! पडिक्कमामि, निंदामि,  
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ६५ ॥

॥ इति पञ्चस्काणानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदं-  
सणो धन्नो ॥ जेसिं पोसहपडिमा, अखं-  
डिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्ना सत्ताह-  
णिज्जा, सुत्तसा आणंद कामदेवा य ॥ जास  
पसंसइ जयवं, दढवयत्तं महावीरो ॥ २ ॥  
पोसह विधे लीधो, विधे पार्यो, विधि क-

रतां जे कोइ अविधि हुउं होय ते सवि  
हुं मनवचनकायाए करी मिच्छामि डुकडं ॥  
इति ॥ ६६ ॥

६७ ॥ अथ संधारा पोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो  
खमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणीणं.  
ए पाठ तथा नवकार तथा करेमिचंते सा-  
माइअं ॥ एटला सर्वपाठ त्रणवार क-  
हीने ॥ अणुजाणह जिडिजा अणुजाणह  
परमगुरु, गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा ॥  
बहुपडिपुण्णा पोरिसि, राइयसंधारए  
ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं, बाहु-  
वहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुडिपायपसारण,  
अतरंत पमजाए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ  
संडासा, उवटंते अ कायपडिलेहा ॥ द-  
वाइ उवउंगं, ऊसासनिरुंजणालोए ॥ ३ ॥  
जइ मे हुजा पमाउं, इमस्स देहस्सिमाइ

रयणीए ॥ आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिवि-  
 हेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥ चत्तारि मंगलं-  
 अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू  
 मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥  
 चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा,  
 सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केव-  
 लिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि  
 सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पव-  
 ज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू  
 सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं  
 पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाईवायमलिअं, चो-  
 रिक्कं मेहुणं दविणमुत्तं ॥ कोहं माणं मायं,  
 लोअं पिज्जं तथा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अ-  
 ब्भस्काणं, पेसुन्नं रइअरइ समाजत्तं ॥ पर-  
 रिवायं माया, मोसं मिच्चत्तसद्धं च ॥ ९ ॥  
 वोसिरिसु इमाइं, मुक्कमग्गसंसग्गविग्घ-  
 ज्जूआइं ॥ डग्गइनिबंधणाइं, अठारस पा-

वठाणाइं ॥ १० ॥ एगोऽहं नत्थि मे कोई,  
 नाहमन्नस्स कस्सई ॥ एवं अदीणमणसो,  
 अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥ एगो मे सा-  
 सउं अप्पा, नाणदंसणसंजुउं ॥ सेसा मे  
 बाहिरा जावा, सब्बे संजोगलक्खणा ॥ १२ ॥  
 संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥  
 तम्हा संजोगसंबंधं, सब्बं तिविहेण वोसि-  
 रिअं ॥ १३ ॥ अरिहंतो मह देवो, जाव-  
 जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं,  
 इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥ ख-  
 मिअ खमाविअ मइ खमह, सब्बह जी-  
 वनिकाय ॥ सिद्धह साख आलोयणह,  
 मुज्जह वइर न जाव ॥ १५ ॥ सब्बे जीवा  
 कम्मवस, चउदह राज जमंत ॥ ते मे सब्ब  
 खमाविआ, मुज्जवि तेह खमंत ॥ १६ ॥  
 जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण जासिअं

पावं ॥ जं जं काण्ण कयं, मिहामि डुकुडं  
तस्स ॥ १७ ॥ इति संधारा पोरिसि ॥ ६७ ॥

॥ अथ चैत्यवंदननो समुदाय ॥

॥ तत्र प्रथम सीमंधरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना  
दाता ॥ पुक्कलवइ विजये जयो, सर्व जी-  
वना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंडरीगिणी,  
नयरीए सोहे ॥ श्रीश्रेयांस राजा तिहां,  
अविअण्णनां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सु-  
पन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ॥  
कुंधुअरजिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात  
॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रजु जनमीया, वली यौ-  
वन पावे ॥ मातपिता हरखे करी, रुक-  
मिणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसा-  
रनां, संजम मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमि  
अंतरे, दीक्षा प्रजु पावे ॥ ५ ॥ घाती

कर्मनो ह्य करी, प्राम्या केवलनाण ॥  
 ऋषज्ञ लंठने शोचता, सर्व प्रावना जाण  
 ॥ ६ ॥ चोरासी जस गणधरा, मुनिवर  
 एकसो कोड ॥ त्रण चुवनमां जोअतां,  
 नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दश लाख  
 कह्या केवली, प्रचुजीनो परिवार ॥ एक-  
 समय त्रण कावना, जाणे सर्व विचार  
 ॥ ८ ॥ उदय पेढाल जिनांतरेए, याशे  
 जिनवर सिद्ध ॥ जसविजय गुरु प्रणमतां,  
 शुभ वंठित फल लीध ॥ ९ ॥ इति ॥६८  
 अथ सीमंधरजिन द्वितीय चैत्यवंदन ॥  
 श्री सीमंधर जगधणी, आ नरते आवो ॥  
 करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥१॥  
 सकल नक्त तुमे धणीए, जो होवे अम  
 नाथ ॥ नवोन्नव हुं बुं ताहरो, नहीं मेबुं  
 हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग बंडी करीए,  
 चारित्र लेइशुं ॥ पाय तमारा सेवीने, शिव-



रमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने  
घणो ए, पूरो सीमंधर देव ॥ इहां थकी  
हुं वीनवुं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ ६ए

अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं त्रीजुं चैत्यवंदन ॥  
विमलकेवलज्ञानकमला, कलित त्रिचु-  
वन हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज,  
नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमलगिरिव-  
रशृंगमंडण, प्रवरगुणगणचूधरं ॥ सुरअ-  
सुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥  
करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन  
गुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अहनिश ॥  
नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीकगणपति सिद्धि  
साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री वि-  
मल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥  
निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडि-  
नंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥  
नमो० ॥ ५ ॥ पातालनरसुरलोक मांही,

विमलगिरिवरतो परं ॥ नहि अधिक तीरथ  
तीर्थपति कहे ॥ नमो ० ॥ ६ ॥ इम विमल  
गिरिवरशिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्या-  
ईये ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम  
ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह  
विगोह निजा, परमपदस्थित जयकरं ॥  
गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सु-  
हितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चोथुं चैत्यवंदन ॥  
॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे ॥  
जाव धरीने जे चढे, तेने जवपार उतारे  
॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल  
तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणु रिखवदेव,  
ज्यां ठविआ प्रजुपाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड  
सोहामणो, कवडजद अजिराम ॥ नाजि-  
राया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥  
इति चतुर्थ चैत्य ० ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्री परमात्मानुं पांचमुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठा ॥  
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिठ

॥ १ ॥ अचल अकल अविकारसार, करु-  
णारस सिंधु ॥ जगती जन आधार एक,  
निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रचु  
ताहरा, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रचु  
जिनध्यानथी, चिदानंद सुख आय ॥ ३ ॥  
इति ॥ ७९ ॥

॥ अथ स्तवनानि प्रारब्धयन्ते ॥

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनस्तवनं ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे  
जाज्यो ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीने ए-  
णिपरे तुमे संजलावजो ॥ ए आंकणी ॥  
जे त्रण जुवननो नायक ठे, जंस चौसठ  
इंज पायक ठे ॥ नाण दरिसण जेहने खा-

एक ठे, सुणो० ॥ १ ॥ जस कंचनवरणी  
 काया ठे, जस धोरी लंबन प्राया ठे ॥  
 पुंडरीगिणि नगरीनो राया ठे, सुणो० ॥ २ ॥  
 बार पर्षदा मांहि बिराजे ठे, जस चोत्रीश  
 अतिशय बजे ठे ॥ गुण पांत्रीश वाणीए  
 गाजे ठे, सुणो० ॥ ३ ॥ ऋविजनने जे  
 पडिबोहे ठे, जस अधिक शितल गुण  
 सोहे ठे ॥ रूप देखी ऋविजन मोहे ठे  
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीउं बुं,  
 पण ऋरतमां दूरे वसीउं बुं ॥ महामोह-  
 राय कर फसीउं बुं, सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
 साहिव चित्तमां धरीयो ठे, तुम आणा  
 खड्ग कर ग्रहीयो ठे ॥ ते कांइक मुजथी  
 डरीयो ठे, सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ  
 हवे पूरो, कहे पद्म विजय थाउं शूरो ॥ तो  
 वाधे मुज मन अति नूरो, सुणो० ॥ ७ ॥  
 ॥ इति सीमंधरजिनस्तवनं ॥ ७३ ॥

॥ अथ द्वितीयं श्री सुबाहुजिनस्तवनं ॥  
॥ चतुरसनेही मोहना ॥ ए देशी ॥  
॥ स्वामी सुबाहु सुहंकरु, अनंदा नंदन  
प्यारो रे ॥ निसढ नरेसर कुलतिलो, किंपु-  
रुषानो भरतारो रे ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ क-  
पिलंबन नलिनावती, विप्र विजय अजो-  
ध्या नाहो रे ॥ रंगे मलिये तेहश्युं, एह  
मणुय जनमनो लाहो रे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ते  
दिन सवि एले गया, जिहां प्रचुशुं गोठ  
न बांधीरे ॥ अक्ति दूतीकाए मन हर्युं, पण  
वात कही ठे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ अ-  
नुअव मित्र जो मोकलो, तो ते सघली  
वात जणावे रे ॥ पण तेह विण सुऊ नवि  
सरे, कहो तो पुत्र विचार ते आवेरे ॥ स्वा०  
॥ ४ ॥ तेणे जइ वात सर्व कही, प्रचु म-  
ल्या ते ध्यानने टाणेरे ॥ श्री नयविजय  
विबुध तणो, इम सेवक सुजस वखाणे रे ॥  
स्वा० ॥ ५ ॥ इति सुबाहु स्तवन ॥ ७४ ॥

॥ तृतीयं श्रीदेवजसाजिनस्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ देवजंसा दरिसण करो, विघटे मोह वि-  
जाव लाव रे ॥ प्रगटे शुद्धस्वजावता, आ-  
नंद लहरी दाव लावरे ॥ देव० ॥ १ ॥

स्वामी वसो पुखरवरे, जंबू जरते दास  
लाव रे ॥ क्षेत्र विनेद घणो पड्यो, केम  
पहोंचे उद्धास लावरे ॥ देव० ॥ २ ॥ होवत  
जो तनु पांखडी, तो आवत नाथ हजूर  
लावरे ॥ जो होवत चित्त आंखडी, देखत  
नित्य प्रभु नूर लावरे ॥ देव० ॥ ३ ॥

शासन जक्त जे सुरवरा, वीनबुं शीश नमाय  
लावरे ॥ कृपा करो मुऊ उपरे, तो जिन-  
वंदन थाय लावरे ॥ देव० ॥ ४ ॥ पूबुं पूर्व  
विराधना, शी कीधी एणे जीव लावरे ॥  
अविरति मोह टली नहि, दीठे आगम  
दीव लावरे ॥ देव० ॥ ५ ॥ आतमतत्त्व

स्वप्नावने, बोधन शोधन काज लावरे ॥  
रत्नत्रयी प्राप्तितणो, हेतु कहो महाराज  
लावरे ॥ देव० ॥ ६ ॥ तुज सरिखो साहिब  
मले, जांजे नवत्रम टेव लावरे ॥ पुष्टालं-  
बन प्रजु लही, कोण करे पर सेव लावरे ॥  
देव० ॥ ७ ॥ दीनदयाल कृपाल तुं, नाथ  
नविक आधार लावरे ॥ देवचंद्र जिन  
सेवना, परमामृत सुखकार लाव रे ॥ देव०  
॥ ८ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ चोथुं वीश विहरमाननुं स्तवन ॥  
राग रामकली

सीमंधर युगमंधर बाहु, चोथा स्वामी  
सुबाहु ॥ जंबुद्वीप विदेहे विचरे, केवल  
कमला नाहुरे ॥ १ ॥ नविका विहरमान-  
जिन वंदो ॥ आतम पाप निकंदोरे ॥  
न० ॥ ए आंकणी ॥ सुजात स्वयंप्रज  
ऋषजानन, अनंतवीरज चित्त धरीये ॥

सुरप्रज्ञ श्रीविशाल वज्रंधर, चंद्रानन धा-  
तकी एरे ॥ ऋवि० ॥ १ ॥ चंद्रबाहु जुजं-  
ग ने ईश्वर, नेमिनाथ वीरसेन ॥ देवजस  
चंद्रजसा जितवीरिय, पुस्करद्वीप प्रसन्न  
रे ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ आठमी नवमी चोवीश  
पचवीशमी, विदेह विजय जयवंता ॥  
दश लाख केवली सो कोड साधु, परिवारे  
गहगहंतारे ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ धनुष पांचशें  
उंची सोहे, सोवनवरणी काया ॥ दोष  
रहित सुर महि महीतल, विचरे पावन पा-  
यारे ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चोराशी लाख पूरव  
जिन जीवित, चोत्रीश अतिशयधारी ॥  
समवसरण बेठा परमेश्वर, पडिबोहे नर-  
नारी रे ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ खिमाविजय जिन  
करुणासागर, आप तर्या पर तारे ॥ धर्म-  
नायक शिवमारगदायक, जन्म जरा दुःख  
वारैरे ऋ० ॥ ७ ॥ ७६ ॥



॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीयेरे में आज, शत्रुंजय दीठोरे ॥  
सवा लाख टकानो दहाडोरे, लागे मुने  
मीठोरे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयो मारा  
मननो उमाहो ॥ वाला मारा ॥ जवनो  
संशय जांग्योरे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर  
निवारी, चरणे प्रज्जुजीने लाग्योरे ॥ शत्रुं०  
॥ १ ॥ मानव जवनो लाहो लीधो ॥ वा० ॥  
देहडी पावन कीधीरे ॥ सोना रुपाने फू-  
लडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीधीरे ॥ शत्रुं०  
॥ २ ॥ डुधडे पखाळी ने केसर घोळी ॥  
वा० ॥ श्री आदीश्वर पूज्यारे ॥ श्री सि-  
द्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धूज्यारे  
शत्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयंमुख सुधर्मासुरपति  
आगे ॥ वा० ॥ वीरजिणांद इम वोळोरे ॥  
त्रण जुवनमां तीरथ मोढुं, नहिं कोइ शे-

त्रुंजा तोक्षेरे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरिखा  
ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चा-  
हेरे ॥ कायानी तो कासल टाळे, सूरज  
कुंडमां नाहेरे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे  
श्रीसिद्धक्षेत्रे ॥ वा० ॥ साधु अनंता सीध्यारे ॥  
ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धर अनंता कीधारे  
॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नागिराया सुत नयणे जोतां  
॥ वा० ॥ मेह अमीरस बुढ्यारे ॥ उदयरतन  
कहे आज मारे पोते, श्रीआदीश्वर त्रुढ्यारे  
॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥ ७७ ॥

॥ अथ षष्ठं श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जसोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणु करीए विमलगिरि ॥  
जात्रा नवाणु करीए ॥ ए आंकणी ॥  
पूरव नवाणु वार शेत्रुंजागिरि, रिखज्जिणंद  
समोससरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोडि सहस

जव पातक त्रुटे ॥ शेत्रुंजा साहामो डग  
जरीये ॥ वि० ॥ १ ॥ सात बठ दोय अ-  
ठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये वि०  
॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अर्ध-  
वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी  
अजवि न नजरे देखे, हिंसक पण ऊ-  
रीये ॥ वि० ॥ ५ ॥ जुंइ संधारो ने नारी  
तणो संग, दूरथकी परिहरीये ॥ वि० ॥ ६ ॥  
सचित्त परिहारी ने एकलआहारी, गुरु  
साथे पदचरीये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्रमणा  
दोय विधिशुं करीये, पापपडल विखरीये ॥  
वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोहोडुं,  
प्रवहण जिम जर दरीये ॥ वि० ॥ ९ ॥  
उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे जव  
तरीये ॥ विमल० ॥ १० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ सप्तमं श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो चालोने राज, श्रीसिद्धाचल-

गिरिये ॥ ए आंकणी ॥ श्रीविमलाचल-  
तीरथ फरसी, आतम पावन करीये ॥  
चाखो ॥ २ ॥ इण गिरिउपर मुनिवर  
कोडी, आतम तत्व निपायो ॥ पूर्णानंद  
सहज अनुभवरस, महानंद पद पायो  
चाखो ॥ ३ ॥ पुंडरिक पमुहा मुनिवर  
कोडि, सकल विज्ञाव गमायो ॥ जेदाजेद  
तत्व परिणतिथी, ध्यान अजेद उपायो ॥  
चाखो ॥ ४ ॥ जिनवर गणधर मुनिवर  
कोडी, ए तीरथ रंग राता ॥ शुद्ध शक्ति  
व्यक्ते गुण सिद्धि, त्रिभुवन जनना त्राता  
चाखो ॥ ५ ॥ ए गिरि फरसें अव्य प-  
रीक्षा, दुर्गतिनो होये ठेद ॥ सम्यक् द-  
रिसण निर्मल कारण, निज आनंद अ-  
जेद ॥ चाखो ॥ ६ ॥ संवत अठार च-  
म्मोतरा वरसे, शुद्धि मागशिर तेरशीये ॥  
श्रीसूरतथी जक्ति हरखथी, संघ सहित

उद्धसीये ॥ चालो० ॥ ६ ॥ कचरा कीका  
जिनवर ऋक्ति, रूपचंडजी इंड ॥ श्री श्री-  
संघने प्रभु जेटाव्या, जगपति प्रथम जि-  
णंद ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ज्ञानानंदी त्रिभु-  
वनवंदित, परमेश्वर गुण जीना ॥ देवचंड  
पद पामे अद्भुत, परम मंगल लयलीना ॥  
चालो० ॥ ८ ॥ इति ॥ ७९ ॥

॥ अथ अष्टमं श्रीसिंहाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल नितु वंदीये, कीजे ए-  
हनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिव-  
तरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्वल जि-  
नगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं  
हिमगिरि विन्नमे, आइ अंबरगंगा ॥ वि० ॥  
॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ  
तोले ॥ एम श्रीमुख हरिआगले, श्रीसीमं-  
धर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां ती-  
रथ कर्यो, जात्रा फल लहीये ॥ तेहथी ए

गिरि जेटतां, शतगणुं फल कहीये ॥ वि०  
॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए  
गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते  
नर चिर नंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ७० ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाळास्तवनं ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्वा, जला गुण  
ज्यारै ॥ सिद्ध्या साधु अनंत, तीर्थ ते न-  
मुंरे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते  
ग्यारै ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥  
अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥ ज-  
रते जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख  
अति जलो, त्रिजुवन तिजोरे ॥ विमल व-  
सइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेत शि-  
खर सोहामणो, रलीयामणोरे ॥ सिद्ध्या  
तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निर-  
खीये, हैये हरखीये रे ॥ सिद्ध्या श्रीवासु-

पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्व दिशे पावापुरी,  
ऋद्धे जरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥  
जेशलमेर जूहारीये, दुःख वारीयेरे ॥ अ-  
रिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज  
वंदीये, चिर नंदीयेरे ॥ अरिहंत देहरां  
आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो, पं-  
चासरोरे ॥ फलोधी थंजण पास ॥ ती०  
॥ ५ ॥ अंतरिक अंजारवो, अमीऊरोरे ॥  
जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य-  
दीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपुरे रि-  
सहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्री नाडुलाइ जा-  
दवो, गोडिस्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥  
ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन जलां रे ॥  
रुचक कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
अशाश्वती, प्रतिमा बतीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पा-  
ताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो  
मुज इहारे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८

॥ अथ श्रीमहावीरजिनछंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमा नित्य धारो, अ-  
रिक्कोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ति  
धरो चित्तमांदि, राग द्वेषथी दूर थाउं उ-  
च्चाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह  
प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी वात तेणे न जाणी ॥  
मनुष जन्म पामी वृथा कां गमो बो, जैन  
मार्ग ठंडी जुला कां जमोबो ॥ २ ॥ अ-  
लोत्री अमानी निरागी तजो बो, सलोत्री  
समानी सरागी जजोबो ॥ हरिहरादि अ-  
न्यथी शुं रमो बो, नदी गंग मूकी गळीमां  
पडो बो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्र-  
धारा, केइ देव घाले गळे रुंड माळा ॥  
केइ देव उत्संगे राखेबे वामा, केइ देव  
साथे रमे वृंदरामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे  
लेइ जपमाला, केइ मांसजही महा वीक-



रात्रा ॥ केइ योगिणी जोगिणी जोगरागे,  
 केइ रुद्रणी बागनो होम मागे ॥५॥ इस्या  
 देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना  
 सुखने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकनो  
 पार नाव्यो, तदा मधनो विंहुउ मन्न जा-  
 व्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश-  
 राखे, जेह पिंडने मनशुं लेअ चाखे ॥  
 दीन हीननी जीड ते केम जांजे, फुटो  
 ढोल होए कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे  
 मूढ ज्ञातो ज्ञो मोहदाता, अलोत्री  
 प्रजुने ज्ञो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंता-  
 मणि सारिखो एह साचो, कलंकी का-  
 चना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि  
 जेह प्राणी कहे ठे, सवि धर्म एकत्व जू-  
 लो जमेठे ॥ कीहां सर्षवा ने कीहां मेरु  
 धीरं, कीहां कायरा ने कीहां शूरवीरं ॥९॥  
 कीहां स्वर्णयात्रं कीहां कुंजखंडं, कीह

कोडवा ने कीहां खीरमंडं ॥ कीहां खीर-  
सिंधु कीहां द्वारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां  
बागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां  
कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥  
कीहां नारकी ने कीहा देव जोगी, कीहां  
इंद्रदेही कीहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ कीहां  
कर्मघाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वा-  
मी जजो अन्य वारी ॥ जिंसी सेजमां  
स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी  
जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अधिर सुख संसा-  
रमां मन माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं  
इष्ट बाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंज-  
रोशी, सजो पुण्य पोशी जजो ते अरोशी  
॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी,  
आव्या आश धारी प्रजु पाय स्वामी ॥  
तुहीं तुहीं तुहीं प्रजु पर्मरागी, जवफेरनी  
शंखदा मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीये वी-

रजी अर्ज ठे एक मोरी, दीजे दासकुं से-  
वना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुँ गुरु  
आज मेरो, विवेके लह्यो में प्रभु दर्श  
तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ८९ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टकबंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम  
नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजे गौतमनुं  
ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥  
गौतम नामे गिरिवर चढे, मनवांबित हेला  
संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम  
नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ  
वंकमा, तस नामे नावे हुंकडा ॥ चूत प्रेत  
नवि मंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण  
॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम  
नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन  
शाणगार, गौतम नामे जयजयकार ॥ ४ ॥  
शाल दाख सुरहा घृत गोख, मनवांबित

कापड तंबोल ॥ घर सुघरणी निर्मल चित्त,  
गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम  
उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो  
जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरुसमान,  
गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर  
मयगल घोडानी जोड, वारु पोहोंचे वंढि-  
त कोड ॥ महीयल माने मोहोटा राय,  
जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्र-  
णम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत  
मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम  
नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो  
सहु, गुरु गौतमना गुण ठे बहु ॥ कहे  
लावण्यसमय करजोड, गौतम तूठे सं-  
पत्ति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ ८३ ॥

॥ अथ पंचतीर्थां चैत्यवंदन ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं  
नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां

करुं प्रणाम ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, तेम  
नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ,  
आबु ऋषभ जुहार ॥ १ ॥ अष्टापदगिरि  
ऊपरे, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिमय मू-  
रति मानशुं, नरते नरावी सोय ॥ ३ ॥  
समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन  
पाय ॥ वैजारगिरिवर ऊपरे, श्रीवीरजि-  
नेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजीयो,  
नामे देव सुपास ॥ ऋषभ कहे जिन स-  
मरतां, पोहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ पञ्चमीनी थुइ लिख्यते ॥

पञ्चानन्तकसुप्रपञ्चपरमानन्दप्रदानकर्म,  
पञ्चानुत्तरसीमदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोप-  
मम् । येन प्रोज्ज्वलपञ्चमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारणं, श्रीपञ्चाननलाञ्छनः स तनुतां  
श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पञ्चाश्रवरो-  
धसाधनपराः पञ्चप्रमादाहराः, पञ्चाणुव्रत-

पञ्चसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा प-  
ञ्चहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पञ्चमीं,  
तेऽमी संयमपञ्चमीव्रतचृतां तीर्थङ्कराः श-  
ङ्कराः ॥ १ ॥ पञ्चाचारधुरीणपञ्चमगणा-  
धीशेन संसूत्रितं, पञ्चज्ञानविचारसार-  
कलितं पञ्चेषुपञ्चत्वदम् । दीपात्रं गुरुपञ्च-  
मारतिमिरे एकादशीरोहिणी-पञ्चम्यादिकु-  
खप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥  
पञ्चानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपञ्चमेरु-  
श्रियं, ऋक्तानां ऋविनां गृहेषु बहुशो या  
पञ्चदिव्यं व्यधात् । प्रह्वे पञ्च जगन्म-  
नोमतिकृतौ स्वारत्नपाञ्चालिका, पञ्चम्या-  
दितपोवतां ऋवतु सा सिद्ध्यिका त्रा-  
यिका ॥ ४ ॥ इति ॥ ८५ ॥

॥ अथ एकादशीस्तुतिर्विख्यते ॥

श्रीपञ्चमेभिर्ब्रजाषे जलशयसविधे स्फूर्-  
तिमेकादशीयां, माद्यन्मोहावनीन्द्रप्रशमन-

विशिखः पञ्चबाणार्चिरर्णः । मिथ्यात्वध्वान्तवान्तौ रविकरनिकरस्तीव्रलोजाद्विज्जं, श्रेयस्तत्पर्व वस्ताञ्चिवसुखमिति वा सुव्रतश्रेष्ठिनोऽभूत् ॥ १ ॥ इन्द्रैरञ्ज्रमद्भिर्मुनिपगुणरसास्वादनानन्दपूर्णैर्दिव्यद्भि स्फारहारैर्ललितवरवपुर्यष्टिभिस्स्वर्वधूमिः । सार्धं कल्याणकौघो जिनपतिनवतेर्विन्दुभूतेन्दुसंख्यो, घस्रे यस्मिन् जगे तद् भवतु सुभविनां पर्व सच्चर्महेतुः ॥ २ ॥ सिद्धान्ताब्धिप्रवाहः कुमतजनपदान् प्लावयन् यः प्रवृत्तः, सिद्धिधीपं नयन् धीधनमुनिवणिजः सत्यपात्रप्रतिष्ठान् । एकादश्यादिपर्वेन्दुमणिमतिदिशन्धीवराणां महार्ष्यं, सन्न्यायाम्भश्च नित्यं प्रवितरतु स नः स्वप्रतीरे निवासम् ॥ ३ ॥ तत्पूर्वोद्यापनार्थं समुदितसुधियां शम्भुसंख्याप्रमेया-मुत्कृष्टां वस्तुवीथीमञ्जयदसदने प्रा-

ऋतीकुर्वतां ताम् । तेषां सव्याहपादैः  
प्रलपितमतिभिः प्रेतऋतादिभिर्वा, उष्टै-  
र्जन्यं त्वजन्यं हरतु हरितनुन्यस्तपादा-  
म्बिकाख्या ॥ ४ ॥ ८६ ॥

॥ अथ पंचतीर्थ शोयो

॥ श्लोक ॥ श्रीशत्रुञ्जयमुख्यतीर्थतिलकं  
श्री नागिराजाङ्गजं, वन्दे रैवतशैलमौलि-  
मुकुटं श्रीनेमिनाथं तथा । तारङ्गेऽप्य-  
जितं जिनं ऋगुपुरे श्रीसुव्रतं स्तम्भने, श्री-  
पार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं  
त्रिधा ॥१॥ वन्देऽनुत्तरकल्पतल्पचुवने श्रै-  
वेयकव्यन्तर-ज्योतिष्कामरमन्दरादिवसतीं-  
स्तीर्थङ्करानादरात् । जम्बूपुष्करधातकीषु  
रुचके नन्दीश्वरे कुण्डले, ये चान्येऽपि जिना  
नमामि सततं तान् कृत्रिमाकृत्रिमान् ॥२॥  
श्रीमद्वीरजिनास्यपद्महृदतो निर्गम्य तं गौ-  
तमं, गङ्गावर्तनमेत्य या प्रविजिदे मिथ्या-



त्ववैताढ्यकम् । उत्पत्तिस्थितिसंहतित्रिपथ-  
गा ज्ञानाम्बुधावृद्धिगा, सा मे कर्ममलं ह-  
रत्वविकलं श्रीछादशाङ्गी नदी ॥३॥ शक्र-  
श्चन्द्ररविग्रहाश्च धरणब्रह्मेन्द्रशान्त्यम्बिका,  
दिकूपालाः सकपर्दिगोमुखगणिश्चक्रेश्वरी  
भारती । येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रत-  
विधिश्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसङ्घस्य तुरा  
चतुर्विधसुरास्ते सन्तु ऋष्यङ्कराः ॥ ४ ॥  
इति श्रीपंचतीर्थस्तुतिः ॥ ७७ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजिये, नरचवनो  
छाहो लीजीये ॥ मन वंढित पूरण सु-  
रतरु, जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥  
दोय राता जिनवर अति ऋदा, दोय  
धोदा जिनवर गुणनिदा ॥ दोय लीदा  
दोय शामळ कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण  
लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर जाखीयो,

( ३३९ )

गणधर ते हृद्दे राखीयो ॥ तेहनो रस  
जेणे चाखीयो, ते हुज शिवसुख साखीयो  
॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पा-  
श्वतणा गुण गावती ॥ सहु संघनां संकट  
चूरती, नयविमलनां वंभित पूरती ॥ ४ ॥  
इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ सज्जायो प्रारंभ ॥

॥ तत्र प्रथम श्री विनयअध्ययननी सज्जाया ॥

॥ श्रीनैमीसर जिनतणुंजी ॥ ए देशी ॥  
पवयण देवी चित्त धरी जी, विनय वखा-  
णीश सार ॥ जंबुने पूढये कह्यो जी, श्री-  
सोहम गणधार ॥ १ ॥ नविक जन वि-  
नय वहो सुखकार ॥ ए आंकणी ॥ प-  
हिले अध्ययने कह्यो जी, उत्तराध्ययन  
मकार ॥ सघला गुणमां मूलगोजी, जे  
जिनशासन सार ॥ २ ॥ नविठ ॥ नाण  
विनयथी पामीए जी, नाणे दरिसण शुद्ध ॥

चारित्र दरिसणथी हुए जी, चारित्रथी  
 पुण सिद्ध ॥ ३ ॥ ऋवि० ॥ गुरुनी आण  
 सदा धरेजी, जाणे गुरुनो जाव ॥ वि-  
 नयवंत गुण रागीजंजी, ते मुनि सरल  
 स्वजाव ॥ ४ ॥ ऋवि० ॥ कणनुं कुंडुं प-  
 रिहरीजी, विष्टाशुं मन राग ॥ गुरुजोही  
 ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग ॥ ५ ॥  
 ऋवि० ॥ कोह्या काननी कूतरीजी, ठाम  
 न पामीरे जेम ॥ शीलहीण अकह्याग-  
 राजी, आदर न लहे तेम ॥ ६ ॥ ऋवि० ॥  
 चंद्रतणीपेरे उजली जी, कीरति तेह ल-  
 हंत ॥ विषय कषाय जीती करी जी, जे  
 नर शील वहंत ॥ ७ ॥ ऋवि० ॥ विजय-  
 देव गुरुपाटवीजी, श्रीविजयसिंह सूरिंद ॥  
 शिष्य उदय वाचक ऋणेजी, विनय सयल  
 सुखकंद ॥ ८ ॥ ऋवि० ॥ इति ॥ ८ए ॥

॥ अथ द्वितीय शिखामण सञ्जाय ॥

॥ जीव वारुं छुं मोरा वालमा, परना-  
रीथी प्रीति म जोड ॥ परनारीनी संगत  
नहीं जली, तारा कूलमां लागशे खोड ॥  
जीव० ॥ १ ॥ जीव आ संसार ठे का-  
रमो, दीसे ठे आळ पंपाळ ॥ जीव एहवुं  
जाणी चेतजो, आगल माठीडे नाखीठे  
जाल ॥ जीव० ॥ २ ॥ जीव मात पिता  
जाइ बेनडी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥  
जीव वेती वारे सहु सगुं, पठे लांबा कीधा  
जूहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगे सगी  
अंगना, शेरी अ लगे सगी माय ॥ जीव  
सीम लगे साजन जलो, पठे हंस एकीलो  
जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां अका  
नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥  
जीव गाडुं जरीयुं इंधणे, वळी खोखरी  
हांडली सार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठम

पाखि न जलखी, जीव बहुलां कीधां पाप ॥  
जीव सुमतिविजय मुनि एम ज्ञणे, जीव  
आवागमन निवार ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ए० ॥

॥ अथ अनाथी मुनिनी सज्जाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चड्यो, पेखीयो मुनि  
एकंत ॥ वररूप कांते मोहिजं, राय पूठेरे  
कहोने विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे  
अनाथी निर्ग्रथ ॥ तिणे में लीधोरे साधु-  
जीनो पंथ ॥ श्रेणिक० ॥ ए आंकणी ॥  
इणे कोसंबी नयरी वसे, मुळ पिता परि-  
घल धन ॥ परिवार पूरे परिवर्यो, हुं छुं ते-  
हनोरे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दि-  
वस मुज वेदना, उपनी में न खमाय ॥ मा-  
त पिता झूरी मरे, पण समाधि किणे न वि-  
थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुणमणि जं-  
रडी, चोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा  
में सही, कोणे न कीधी मोरडी सार ॥

श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बोलाविया, की-  
 धला कोटि उपाय ॥ बावनाचंदन चरचियां,  
 तोहि पणरे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥  
 जगमांहि को केहनो नहीं, ते जणी हुंरे  
 अनाथ ॥ वीतरागना धरम सारिखो, नहिं  
 कोइ बीजोरे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥  
 वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं संजम  
 जार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत लीधुं  
 में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ करजोडी राय-  
 गुण स्तवे, धन्य धन्य ए अणगार ॥ श्रे-  
 णिक समकित पामियो, वांदी पोहोतोरे  
 नगर मजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी  
 गुण गावतां, तूटे कर्मनी कोड ॥ गणि स-  
 मयसुंदर तेहना, पाय वंदेरे बे करजोड ॥  
 श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथी सज्जाय ॥ ९१ ॥

॥ अथ श्रीनेम राजकुलनी सज्जाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां.

ए देशी ॥ पिउजी पिउजीरे नाम, जपुं दिन  
 रातियां ॥ पिउजी चाह्या परदेश, तपे मोरी  
 भातीयां ॥ पग पग जोती वाट, वाखेसर  
 कब मिले ॥ नीर विबोह्यां मीन के, ते ज्युं  
 टलवले ॥ २ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साह्विब  
 विण नवि गमे ॥ जिहारै वाखेसर नेम,  
 तिहां मारुं मन जमे ॥ जो होवे सज्जन  
 दूर, तोहि पासे वसे ॥ किहां सायर किहां  
 चंद, देखि मन उद्धसे ॥ १ ॥ निःस्नेहीशुं  
 प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे  
 देह, दीपक मनमें नहीं ॥ वाला माणसनो  
 विजोग, म होजो केहने ॥ साखेरे साख-  
 समान, हइयामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह  
 व्यथानी पीड, जोबन अति दहे ॥ जेनो  
 पियु परदेश ते, माणस इःख सहे ॥ झुरी  
 झुरी पंजर कीध, काया कमल जिसी ॥ ह-  
 जीअन आव्या नेम, मदी नयणे हसी

॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग, टाळ्यो ते नवि  
 टखे ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दि-  
 वसे मखे ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबु ते  
 नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते बि-  
 छर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या माळती फूल,  
 धतूरे केम रमे ॥ जेहने घीयशुं प्रेम,  
 ते तखे किम जमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह, ते  
 अवरने शुं करे ॥ नव जोवन तजी नेम, वै-  
 रागी थइ फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान,  
 पोहोती सहसावने ॥ जइ वांच्या प्रभु नेम,  
 संजम लइ एक मने ॥ पाम्या केवलज्ञान,  
 पोहोती मननी रळी ॥ रूपविजय प्रभु  
 नेम, जेव्ये आशा फळी ॥ ७ ॥ इति ॥ ८९ ॥

॥ अथ आप स्वप्नावनी सञ्ज्ञाय ॥

॥ आप स्वप्नावमां रे, अवधु सदा म-  
 गनमें रहता ॥ जगत जीव हे कर्माधिना,  
 अचरिज कबुअन लीना ॥ आ० ॥ १ ॥



तुम नही केरा कोइ नही तेरा, क्या करे  
मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अ-  
वर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ १ ॥ वपु वि-  
नाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकुं वि-  
लासी ॥ वपु संग जब दूर निकासी, तब  
तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग  
ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥  
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम ज-  
गका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आशा  
सदा निराशा, ए हे जगजन पासा ॥ ते  
काटनकुं करो अच्यासा, लहो सदा सुख-  
वासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक  
पाजी, कबहीक हुवा अपत्राजी ॥ कबहीक  
जगमें कीर्ती गाजी, सब पुद्गळकी बाजी ॥  
आ० ॥ ६ ॥ शुध उपयोगने समताधारी, ज्ञान  
ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी,  
जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ नवस्मरणप्रारम्भः ॥

१ ॥ प्रथमं नवकारपंचमङ्गलरूपम् ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिं-  
धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥  
नमो उवज्जायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सब-  
साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥  
सबपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च स-  
ब्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

२ ॥ अथ उवसग्गहरं स्तवनम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-  
घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलक-  
द्धाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुळिंमंतं,  
कंठे धारेइ जो सया मणुजं । तस्स गह-  
रोगमारी-इठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥  
चिठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामोवि बहुफलो  
होइ । नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न  
इसकदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लब्धे,

चिंतामणिकप्पपायवञ्जहिए । पावन्ति अ-  
 विग्धेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥  
 इअ संथुउं महायस !, जत्तिञ्जरनिञ्जरेण  
 हिअण्ण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, जवे  
 जवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥ इति ॥ ९ ॥

३ ॥ अथ संतिकरस्तवनम् ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जय-  
 सिरीइ दायारं । समरामि जत्तपावग-नि-  
 द्वाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ उं स नमो वि-  
 प्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं । झ्रौं  
 स्वाहामंतेणं, सव्वासिवडुरिअहरणाणं ॥ २ ॥  
 उं संतिनमुक्कारो, खेदोसहिमाइलहिप-  
 त्ताणं । सौं झ्री नमो सव्वोसहिपत्ताणं च  
 देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणि,  
 सिरिदेवी जक्करायगणिपिडगा । गहदिसि-  
 पावसुरिंदा, सयावि रक्कंतु जिणजत्ते ॥ ४ ॥  
 रक्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जासिखदा

य सया । वज्रकुसि चक्रेसरि, नरदत्ता  
 कालि महकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी,  
 महजाला माणवी अ वश्रुद्धा । अत्रुत्ता  
 माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥  
 जस्का गोमुह महजस्क, तिमुह जस्केस  
 तुंबरु कुसुमो । मायंगविजयअजिआ, वं-  
 ज्ञो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ बम्मुह पयाव  
 किन्नर, गरुडो गंधव तह य जस्किदो ।  
 कूबर वरुणो जिउडी, गोमेहो पासमा-  
 थंगा ॥ ८ ॥ देवीउ चक्रेसरि, अजिआ  
 इरिआरि कालि महकाली । अत्रुअ संता  
 जाला, सुतारयासोअ सिरिवञ्जा ॥ ९ ॥  
 चंडा विजयंकुसि पन्नइत्ति निवाणि अत्रु-  
 आ धरणी । वश्रुद्धुत्त गंधारिअंबपउमा-  
 वई सिंधा ॥ १० ॥ इअ तित्थरस्करणया,  
 अन्नेवि सुरा सुरी य चउहावि । वं-

चउसीसअइसयजुआ, अठमहापाडिहेर-  
 कयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, जाएअवा  
 पयत्तेणं ॥ १८ ॥ ॐ वरकणयसंखवि-  
 द्दुम-मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । स-  
 त्तरिसयं जिणाणं, सबामरपूइअं वंदे ॥  
 स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ ञवणवइ वाणवंतर,  
 जोइसवासी विमाणवासी अ । जे केवि  
 इठ देवा, ते सबे उवसमंतु ममं ॥ स्वाहा  
 ॥ २० ॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहि-  
 ऊण खात्तिअं पीअं । एगंतराइगहजू-  
 अ-साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ २१ ॥ इअ  
 सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं इवारि पडि-  
 लिहिअं । इरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं  
 निच्चमच्चेह ॥ २२ ॥ इति ॥ ४ ॥

५ ॥ अथ नमिऊणनामकं स्मरणंम् ॥  
 नमिऊण पणयसुरगण-चूडामणिकिरण-  
 रंजिअं मुणिणो । चलणजुअलं महा-

ज्ञय-पणासणं संथवं वुञ्चं ॥ १ ॥ स-  
 डियकरचरणनहमुह, निबुड्डनासा विवन्न-  
 लायएणा।कुठमहारोगानल-फुलिंगनिदड्ड-  
 सवंग्गा ॥ २ ॥ ते' तुह चवणाराहण-स-  
 विलंजलिसेयवुड्डियञ्जाया ( उञ्जाहा ) ।  
 वणदवदड्डा गिरिपा-यवव पत्ता पुणो लडिं  
 ॥ ३ ॥ उवायखुजियजलनिहि, उब्जडक-  
 द्धोवञ्जीसणारावे । संजंतनयविसंठुल-  
 निवामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ-  
 जाणवत्ता, खणेण पावंति इञ्चिअं कूलं ।  
 पासजिणचवणजुअलं, निच्चं चिअ जे न-  
 मंति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुअवणदव-  
 जालावलिमिलियसयलडमगहणे । डज्जं-  
 तमुअमयवहु-ञ्जीसणरवञ्जीसणंमि वणे  
 ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निवा-  
 विअसयलतिहुअणाओअं । जे संजरंति

पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ १० ॥  
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो  
य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ सय-  
लज्जुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते  
कमठा-सुरम्मि जाणाउं जो न संचल्लिउं ।  
सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुउं जयउ पास-  
जिणो ॥ ११ ॥ एअस्स मज्जयारे, अठार-  
सअस्करेहिं जो मंतो । जो जाणइ सो  
जायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥ १३ ॥ पा-  
सह समरण जो कुणइ, संतुठे हियएण ।  
अहुत्तरसयवाहिज्जय, नासइ तस्स दूरेण  
॥ १४ ॥ इति श्रीमहाजयहरनामकं स्म-  
रणं संपूर्णम् ॥ ५ ॥

६ ॥ अथ अजितशान्तिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च प-  
संतसवगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो-  
वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगयमगुलजावे, तेऽहं विजलतवनिम्म-  
लसहावे । निरुवममहप्पजावे, थोसामि  
सुदिठसब्जावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सबडुक्कप्पसं-  
तीणं, सबपावप्पसंतिणं । सया अजियसं-  
तीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ सिळोगो ॥  
अजियजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम !  
नामकित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं,  
तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ मा-  
गहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकि-  
लेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गु-  
णेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स  
य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं  
मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥  
आळिगणयं ॥ पुरिसा ! जइ डुक्कवारणं, जइ  
अ विमग्गह सुक्ककारणं । अजिअं संतिं  
च जावउं, अजयकरे सरणं पवज्जाहा ॥ ६ ॥



मणुञ्चा, न कुण्ड जलणो ज्ञयं तेसिं ॥७॥  
 विलसंतजोगनीसण, फुरिञ्चारुणनयण-  
 तरलजीहावं । उग्गञ्चुञ्चंगं नवजलय-  
 सत्थं हं नीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडस-  
 रिसं, दूरपरिञ्चूढविसमविसवेगा । तुह  
 नामस्करफुडसिद्धमंतगुरुञ्चा नरा लोए ॥९॥  
 अडवीसु जिह्वतकर-पुलिंदसहूलसहनी-  
 मासु । जयविहुरवुन्नकायर-उद्धूरिअप-  
 हिअसत्थासु ॥ १० ॥ अविबुत्तविहवसा-  
 रा, तुह नाह ! पणाममत्तवावारा । ववगय-  
 विग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्चियं ठाणं ॥११॥  
 पज्जलिअनलनयणं, दूरवियारियमुहं म-  
 हाकायं । नहकुलिसघायविअलिअ-गइं-  
 दकुंजत्थलाजोअं ॥ १२ ॥ पणयससंजम-  
 पत्थिवं-नहमणिमाणिकपडिअपडिमस्स ।  
 तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुधंपि न ग-

णंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीह-  
करुद्धालवुद्धिउच्चाहं । महुपिंगनयणजु-  
अलं, ससखिलनवजलहरारावं ॥ १४ ॥  
जीमं महागइदं, अच्चासन्नंपि ते न वि ग-  
णंति । जे तुम्ह चक्षणजुअलं, मुणिवइ-  
तुंगं समद्धीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख-  
ग्गा-जिग्घायपवि-इउ-इयकबंधे । कुंतविणि-  
जिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥  
निज्जियदप्पु-इररिउ-नरिंदनिवहाअडा जसं  
धवलं । पावंति पावपसमिण, पासजिण !  
तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणवि-  
सहर-चोरारिमइंदगयरणअयाइं । पास-  
जिणनामसंकित्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥  
एवं महाअयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमु-  
अरं । अविजजणाणंदयरं, कद्धाणपरंपर-  
निहाणं ॥ १९ ॥ रायअयजस्करस्स-कु-  
सुमिणइस्सअणरिक्कपीडासु । संजासु दोसु

पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ १० ॥  
 जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो  
 य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेज सय-  
 लज्जुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते  
 कमठा-सुरम्मि जाणान्जो जो न संचलित्तं ।  
 सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुत्तं जयत्त पास-  
 जिणो ॥ ११ ॥ एअस्स मज्जयारे, अठार-  
 सअस्करेहिं जो मंतो । जो जाणइ सो  
 जायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥ १३ ॥ पा-  
 सह समरण जो कुणइ, संतुठे हियएण ।  
 अट्टत्तरसयवाहिज्जय, नासइ तस्स दूरेण  
 ॥ १४ ॥ इति श्रीमहाजयहरनामकं स्म-  
 रणं संपूर्णम् ॥ ५ ॥

६ ॥ अथ अजितशान्तिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसव्वज्जयं, संतिं च प-  
 संतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो-  
 वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगयमगुलजावे, तेऽहं विजलतवनिम्म-  
लसहावे । निरुवममहप्पजावे, थोसामि  
सुदिठसब्जावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब्बडुक्कप्पसं-  
तीणं, सब्बपावप्पसंतिणं । सया अजियसं-  
तीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥  
अजियजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम !  
नामकित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं,  
तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ मा-  
गहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकि-  
लेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गु-  
णेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स  
य संति महामुणियोवि अ संतिकरं, सययं  
मम निव्वुइकरणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥  
आळिंगणयं ॥ पुरिसा ! जइ डुक्कवारणं, जइ  
अ विमग्गह सुक्ककरणं । अजिअं संतिं  
च जावउं, अजयकरे सरणं पवज्जाहा ॥ ६ ॥

मागहिञ्चा ॥ अरइरइतिमिरविरहिञ्चमु-  
 वरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलञ्चुयगवइप-  
 ययपणिवइञ्चं । अजिअमहमविअ सुन-  
 यनयनिउणमन्नयकरं, सरणमुवसरिअ च्चु-  
 विदिविजमहिञ्चं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ सं-  
 गययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्त-  
 धरं, अज्जवमहवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ।  
 संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संति-  
 मुंणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥  
 सोवाणयं॥सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि-  
 मत्थयपसत्थिविच्चिन्नसंथिअं थिरसरिच्चवच्चं  
 मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणप-  
 त्थियं संथवारिहं, हत्थिहत्थिबाहुं धंतकणग-  
 रुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्कणोवचिअ-  
 सोमचारुखवं, सुइसुहमणात्रिरामपरमरम-  
 णिज्जवरदेवउंइहिनिनायमहुरयरसुहगिरं

( ३५९ )

॥ ए ॥ वेङ्कट ॥ अजिअं जिआरिगणं,  
जिअसवन्नयं न्नवोहरिं । पणमामि अहं  
पयउं, पावं पसमेउ मे न्नयवं ॥ १० ॥ रा-  
साब्रु-उं ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरी-  
सरो पढमं तउं महाचक्कवट्टिओए महप्प-  
जावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगर-  
निगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्सा-  
णुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहा-  
निहिचउसठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई,  
चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, उन्नव-  
इगामकोडिसामी आसी जो न्जारहंमि न्न-  
यवं ॥ ११ ॥ वेङ्कट ॥ तं संतिं संतिकरं,  
संतिणं सवन्नया । संतिं थुणामि जिणं,  
संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इ-  
क्कागविदेहनरीसर, नरवसहा सुणिवसहा,  
नवसारयससिसकळाणण, विगयतमा वि-  
हुअरया, अजिउत्तमतेअगुणेहिं म-

हामुणिअमिअबला विजलकुला, पण-  
 मामि ते अत्रयमूरण, जगसरणा मम स-  
 रणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचं-  
 दसूरवंददृठतुठजिठपरम-लठरूवधंतरु-  
 प्पपट्टसेअसु-धनि-धवल । दंतपंतिसंति-  
 सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअ वं-  
 दधेअ सबलोअजाविअप्पजावणेअ प-  
 इस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ वि-  
 मलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरक-  
 राइरेअतेअं । तिअसवइगणाइरेअरूवं,  
 धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥  
 कुंसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं,  
 सारीरे अ बले अजिअं । तव संजमे अ  
 अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं  
 ॥ १६ ॥ अगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं  
 पावइ न तं नवसरयससी,तेअगुणेहिं पावइ  
 न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न

तं तिअसगणवइ, सारगुणोहिं पावइ न तं  
 धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ ति-  
 त्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअ-  
 च्चिअं चुअकलिकबुसं । संतिसुहप्पव-  
 त्तयं तिगरणपयउं, संतिमहं महामुणिं  
 सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ लविअयं ॥ विणउं-  
 णयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं शि-  
 मिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअम-  
 हिअच्चिअं बहुसो । अइरुग्गयसरयदि-  
 वायरसमहिअसप्पन्नं तवसा, गयणं-  
 गणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा  
 ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलप-  
 रिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देवको-  
 डिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥  
 सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं, अरयं अरुयं ।  
 अजिअं अजिअं, पयउं पणमे ॥ २१ ॥  
 विज्जुविलसिअं ॥ आगया वरविमाणदि-



वृकणगरहतुरयपहकरसएहिं ह्रुलिञ्चं । स-  
 संजमोअरणखुन्निअबुलिअचलकुंडलंग-  
 यतिरीडसोहंतमजलिमाळा ॥ ९२ ॥ वेडुज्जा  
 जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविजुत्ता नत्ति-  
 सुजुत्ता, आयरजूसिअसंजमपिंडिअसुहु-  
 सुविम्हिअसव्वबलोघा । उत्तमकंचणरय-  
 णपरुविअजासुरजूसणजासुरिअंगा, गा-  
 यसमोणयनत्तिवसागयपंजलिपेसियसीस-  
 पणामा ॥ ९३ ॥ रयणमाळा ॥ वंदिऊण  
 थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो  
 पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरा-  
 सुरा, पमुइआ सन्नवणाइं तो गया ॥ ९४ ॥  
 खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, रा-  
 गदोसन्नयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरिं-  
 दवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ ९५ ॥  
 खित्तयं ॥ अंवरंतरविआरणिआहिं, ललि-

अहंसं बहुगामि<sup>१</sup> णिआहिं । पीणसोणि-  
 थणसांखिणिआहिं, सकलकमलदललो-  
 अणिआहिं ॥ १६ ॥ दीवयं ॥ पीणनि-  
 रंतरथणअरविणमियगायलयाहिं, मणि-  
 कंचणपसिठिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं।  
 वरखिंखिणिनेजरसतिलयवल्लयविज्जूसणि-  
 याहिं, रइकरचजरमणोहरसुंदरदंसणि-  
 आहिं ॥ १७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंद-  
 रीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स  
 ते सुविक्रमा कमा अप्पणो निमालएहिं  
 मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिंवी अवंग-  
 तिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयं-  
 गयाहिं अत्तिसन्निविठवंदणागयाहिं हुंति  
 ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ १८ ॥ नारायणं ॥  
 तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ।  
 धुयसव्वकिलेसं, पयउं पणमामि ॥ १९ ॥

नंदिअयं ॥ शुअवंदिअयस्सा रिसिगण-  
देवगणेहिं, तो देववहूहिं पयउं पणमि-  
अस्सा । जस्स जगुत्तमसासणअस्सा,  
अत्तिवसागयपिंडिअआहिं । देववरउर-  
सा बहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअआहिं  
॥ ३० ॥ आसुरयं ॥ वंससदतंतितावमे-  
विए तिउक्खराजिरामसदमीसए कए अ,  
सुइसमाणणे अ सुइसज्जगीअपायजाव-  
घंटिआहिं वलयमेहवाकवावनेजराजिरा-  
मसदमीसए कए अ । देवनट्टिआहिं हा-  
वजावविउन्नमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग-  
हारएह वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा  
कमा, तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं प-  
संतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं  
जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउं ॥ उत्तचामरपडा-  
गजूअजवमंडिआ, ऊयवरमगरतुरयसि-  
खिउसुलंबणा । दीवसमुदमंदरदिसाग-

यसोहिञ्चा, सत्थिअवसहसीहरहचक्करं-  
 किया ॥ ३१ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा  
 समप्पइठा, अदोसदुठा गुणोहिं जिठा ।  
 पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा  
 रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते  
 तवेण धुअसव्वपावया, सबलोअहिअमू-  
 लपावया । संथुआ अजिअसंतिपायया,  
 हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अ-  
 परांतिका ॥ एवं तववलविजलं, थुअं मए  
 अजिअसंतिजिणजुअलं । ववगयकम्म-  
 रयमलं, गइं गयं सासयं विजलं ॥ ३५ ॥  
 गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुखसुहेण  
 परमेण अविसायं । नासेज मे विसायं,  
 कुणज अ परिसावि अ प्पसायं ॥ ३६ ॥  
 गाहा ॥ तं मोएज अ नंदिं, पावेज अ  
 नंदिसेणमभिनंदिं । परिसावि अ सुह-

नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥  
 गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ-संवत्तरिए  
 अवरस्स ञ्णिअवो । सोअवो सब्बेहिं, उव-  
 सग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ  
 जो अ निसुणइ, उज्जं कालंपि अजिअ-  
 संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वु-  
 प्पन्नावि नासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्चह प-  
 रमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं जुवणे ।  
 ता तेबुक्कुहरणे, जिणवयणे आयरं कुणह  
 ॥४०॥इति श्रीअजितशान्तिस्तवनम् ॥६॥

७ ॥ अथ ञ्क्कामरस्मरणप्रारम्भः ॥

ञ्क्कामरप्रणतमौलिमणिप्रनाणा-मु-  
 द्योतकं दलितपापतमोवितानम् । सम्यक्  
 प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-वालम्बनं  
 ञ्चवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः सं-  
 स्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-डङ्गूतबु-

धिपटुंनिः सुरलोकनाथैः । स्तोत्रैर्जगत्रि-  
 तयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं  
 प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥ बुद्ध्या विनाऽपि  
 विबुधार्चितपादपीठ!, स्तोतुं समुद्यतमति-  
 विंगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जलसं-  
 स्थितमिन्द्रबिम्ब-मन्यः क इच्छति जनः  
 सहसा ग्रहीतुम्? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गु-  
 णसमुज्ज्वलान्, कस्ते क्षमः सुर-  
 गुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या? । कल्पान्तकालप-  
 वनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बु-  
 निधिं जुजाच्याम्? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि  
 तव शक्तिवशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगत-  
 शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य  
 मृगो मृगेन्द्रं, नाच्येति किं निजशिशोः प-  
 रिपालनार्थम्? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुत-  
 वतां परिहासधाम, त्वङ्गक्तिरेव मुखरीकु-  
 रुते बलात्माम् । यत्कोकिलः किल मधौ

मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरै-  
 कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन प्रवसन्ततिस-  
 न्निबन्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरत्राजाम्।  
 आक्रान्तलोकमक्षिणीक्षमशेषमाशु, सूर्या-  
 शुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ म-  
 त्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद्-मारच्यते  
 तनुधियाऽपि तव प्रजावात् । चेतो हरि-  
 ष्यति सतां नखिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युति-  
 मुपैति ननूद्विन्धुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव  
 स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथाऽपि ज-  
 गतां हरितानि हन्ति । दूरे सहस्रकिरणः  
 कुरुते प्रज्ञैव, पद्माकरेषु जलजानि विका-  
 शजाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं प्रुवनप्रूषण-  
 प्रूतनाथ!, प्रूतैर्गुणैर्प्रुवि प्रवन्तमप्रिष्ठुवन्तः।  
 तुल्या प्रवन्ति प्रवतो ननु तेन किं वा ?  
 प्रूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥  
 दृष्ट्वा प्रवन्तमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र

तौषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः  
शशिकरद्युतिङ्घसिन्धोः, क्षारं जलं जल-  
निधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शा-  
न्तरागरुचिन्निः परमाणुजिस्त्वं, निर्मापित-  
स्त्रिजुवनैकललामञ्जुत ! । तावन्त एव खलु  
तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न  
हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क्व ते सुरनरो-  
रगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयो-  
पमानम् ? । बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व नि-  
शाकरस्य ?, यद्वासरे ज्वति पाण्डुपक्षा-  
शकटपम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमण्डलशशाङ्क-  
कलाकलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिजुवनं तव ल-  
ङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथ-  
मेकं, कस्तास्त्रिवारयति संचरतो यथेष्टम् ?  
॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-  
नाजि-नीतिं मनागपि मनो न विकारमा-  
र्गम् ? । कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,



किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ?  
 ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,  
 कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो  
 न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽप-  
 रस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥  
 नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्प-  
 ष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्नो-  
 धरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिम-  
 हिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्यो-  
 दयं दलितमोहमहान्धकारं, गम्यं न रा-  
 हुवदनस्य न वारिदानाम् । विज्राजते  
 तव मुखाब्जमनदपकान्ति, विद्योतयज्जग-  
 दपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
 शशिनाह्नि विवस्वता वा ?, युष्मन्मुखेन्द्र-  
 दलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्नशाखिव-  
 नशाखिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरै-  
 र्जलप्रारनघैः ? ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि

विजाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-  
 हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु  
 याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले कि-  
 रणाकुलेऽपि ॥ १० ॥ मन्ये वरं हरिहरा-  
 दय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तो-  
 षमेति । किं वीक्षितेन ज्वता जुवि येन  
 नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! ज्वान्तरेऽपि  
 ॥ ११ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति  
 पुत्रान्, नान्या सुतं त्वङ्गपमं जननी प्र-  
 सूता । सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्र-  
 रश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजा-  
 लम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं  
 पुमांस-मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।  
 त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः  
 शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ १३ ॥  
 त्वामव्ययं विजुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्र-  
 ह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं

विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं  
 प्रवदन्ति सन्तः ॥ १४ ॥ बुद्धस्त्वमेव वि-  
 बुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शङ्करोऽसि जु-  
 वनत्रयशङ्करत्वात् । धातासि धीर ! शि-  
 वमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग-  
 वन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुज्यं न-  
 मस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ !, तुज्यं नमः क्षि-  
 तितलामलज्रूषणाय । तुज्यं नमस्त्रिजगतः  
 परमेश्वराय, तुज्यं नमो जिन ! ज्वोदधि-  
 शोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयोऽत्र ? यदि  
 नाम गुणैरशेषै-स्त्वं संश्रितो निरवकाश-  
 तथा मुनीश ! । दोषैरुपात्तविविधाश्रय-  
 यजातगर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद्पी-  
 क्षितोऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रित-  
 मुन्मयूख-माज्जाति रूपममलं ज्वतो नि-  
 तान्तम् । स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवि-  
 तानं, बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ १८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्रा-  
 जते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं  
 वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुङ्गोदयादि-  
 शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदा-  
 तचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः  
 कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्ज-  
 रवारिधार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौ-  
 म्भम् ॥ ३० ॥ तत्रत्रयं तव विभ्राति श-  
 शाङ्ककान्त-मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुक-  
 रप्रतापम् । मुक्ताफलप्रकरजालविवृ-  
 शोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वरत्वम्  
 ॥ ३१ ॥ उन्निघ्नहमेनवपङ्कजपुञ्जकान्ति-प-  
 र्युद्धसन्नखमयूखशिखाजिरामौ । पादौ प-  
 दानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र  
 विबुधाः परिकटपयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा  
 तव विभ्रूतिरभ्रूज्जिनेन्द्र !, धर्मोपदेशनविधौ  
 न तथा परस्य । यादृक् प्रजा दिनकृतः

प्रहतान्धकारा, तादृकुतो ग्रहगणस्य वि-  
 काशिनोऽपि ? ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविलवि-  
 लोलकपोलमूल-मत्तन्नमद्भ्रमरनादविवृ-  
 षकोपम् । ऐरावताभ्रमिभ्रमुद्धतमापतन्तं,  
 दृष्ट्वा भ्रयं भ्रवति नो भ्रवदाश्रितानाम्  
 ॥ ३४ ॥ निन्नेभ्रकुम्भगलङ्घुज्ज्वलशोणित-  
 क्त-मुक्ताफलप्रकरभ्रूषितभ्रूमिभ्रागः । ब-  
 षक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रा-  
 मति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ क-  
 ल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं  
 ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघ-  
 त्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नामकीर्तनजलं  
 शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तैर्दणं समद-  
 कोकिलकण्ठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमु-  
 त्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रमयुगेन  
 निरस्तशङ्क,स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य  
 पुंसः ॥ ३७ ॥ वलगतुरङ्गजगर्जितजी-

मनाद्-माजौ बलं बलवतामपि न्रूपतीनाम् ।  
 उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविर्धं, त्वत्कीर्त-  
 नात्तम इवाशु जिदामुपैति ॥ ३७ ॥ कुन्ता-  
 प्रचिन्नगजशोणितवारिवाह-वेगावतारतर-  
 णातुरयोधनीमे । युद्धे जयं विजितहर्ज-  
 यजेयपद्मा-स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो ल-  
 जन्ते ॥ ३८ ॥ अम्भोनिधौ क्षुजितनीष-  
 णनक्रचक्र-पाठीनपीठजयदोल्बणवाम-  
 वाग्नौ । रङ्गतरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-  
 स्त्रासं विहाय जवतः स्मरणाद् ब्रजन्ति  
 ॥ ४० ॥ उद्भूतनीषणजलोदरचारचुम्भाः,  
 शोच्यां दशामुपगताश्रयुतजीविताशाः ।  
 त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या ज-  
 वन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आ-  
 पादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा, गाढं बृह-  
 न्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रम-  
 निशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग-

तबन्धनया ज्वन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपे-  
न्धमृगराजद्वानलाहि-संग्रामवारिधिमहो-  
दरबन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति  
जयं जियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमा-  
नधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र !  
गुणैर्निबन्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्णवि-  
चित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठग-  
तामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति  
लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रं प्रारच्यते ॥

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यजेदि, ज्ञी-  
ताजयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् । संसारसा-  
गरनिमज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमग्निनम्य  
जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गर्हिमा-  
म्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभ्रुर्वि-

तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याह-  
 मेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ १ ॥ युग्म-  
 म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-  
 मस्माद्दशाः कथमधीश ! ज्वन्त्यधीशाः ? ।  
 घृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,  
 रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥ ३ ॥  
 मोहद्वयादनुजवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं  
 गुणान् गणयितुं न तव ह्यमेत । कल्पान्त-  
 वान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्मीयेत  
 केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥ अच्यु-  
 द्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्तुं  
 स्तवं त्रसदसंख्यगुणाकरस्य । बाह्योऽपि  
 किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां  
 क्रथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥ ये  
 योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !,  
 वक्तुं कथं ज्वति तेषु ममावकाशः ? ।  
 जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति



वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ-  
 स्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, ना-  
 मापि पाति ऋवतो ऋवतो जगन्ति । तीव्रा-  
 तपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म-  
 सरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि  
 त्वयि विज्ञो ! शिथिलीऋवन्ति, जन्तोः  
 क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो  
 चुजङ्गममया इव मध्यजाग-मञ्ज्यागते  
 वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त  
 एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौडैरुपश्रव-  
 शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फु-  
 रिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः  
 प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन !  
 कथं ऋविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृद-  
 येन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्ज-  
 लमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानु-  
 ऋवः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रचृतयोऽपि

हतप्रज्ञावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः  
 क्षणेन । विध्यापिता हुतञ्जुजः पयसाऽथ  
 येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ?  
 ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननदपगरिमाणमपि प्रप-  
 न्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।  
 जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन?, चिन्त्यो  
 न हन्त महतां यदि वा प्रज्ञावः ॥ १२ ॥  
 क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो ! प्रथमं निरस्तो,  
 ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ? ।  
 प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,  
 नीलजुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ?  
 ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमा-  
 त्मरूप-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।  
 पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य-दक्षस्य  
 संप्रवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥ १४ ॥  
 ध्यानाज्जिनेश ! ज्वतो ज्विनः क्षणेन, देहं  
 विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रान-

लाडुपलजावमपास्य लोके, चामीकरत्वम-  
 चिरादिव धातुज्ञेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः स-  
 दैव जिन ! यस्य विज्ञाव्यसे त्वं, ज्ञव्यैः कथं  
 तदपि नाशयसे शरीरम् ? । एतत्स्वरूपमथ  
 मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति  
 महानुजावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषि-  
 ञ्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र !  
 ज्वतीह ज्वत्प्रजावः । पानीयमप्यमृत-  
 मित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविका-  
 रमपाकरोति ? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं  
 परवादिनोऽपि, नूनं विज्ञो ! हरिहरादिधि-  
 या प्रपन्नाः । किं काचकामलिज्जिरीश !  
 सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ? विविधवर्ण-  
 विपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये स-  
 विधानुजावा-दास्तां जनो ज्वति ते तरुर-  
 प्यशोकः । अच्युज्जते दिनपतौ समहीरु-  
 होऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलो-

कः ? १९ ॥ चित्रं विज्ञो ! कथमवाङ्मुख-  
 वृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ-  
 ष्टिः ? । त्वज्जोचरे सुमनसां यदि वा मुनी-  
 श !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि  
 ॥ १७ ॥ स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः,  
 पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा  
 यतः परमसंमदसङ्गजाजो, ज्ञव्या व्रजन्ति  
 तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ १८ ॥ स्वामिन् !  
 सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति  
 शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते  
 मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शु-  
 ज्ञावाः ॥ १९ ॥ श्यामं गज्जीरगिरमुज्ज्वलहे-  
 मरत्न-सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखण्डिन-  
 स्त्वाम् । आलोकयन्ति रजसेन नदन्तमुच्चै-  
 श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २० ॥  
 उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्त-  
 दृष्टविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि

वा तव वीतराग !, नीरागतां ब्रजति को न  
 सचेतनोऽपि ? ॥ १४ ॥ ओ ओः प्रमादमव-  
 धूय ऋजध्वमेन—मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति  
 सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्र-  
 याय, मन्ये नदन्नग्निनः सुरङ्गुञ्जिस्ते ॥  
 १५ ॥ उद्योतितेषु ऋवता भुवनेषु नाथ!,  
 तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता-  
 कलापकलितोच्चसितातपत्र—व्याजात्रिधा  
 धृततनुर्ध्रुवमच्युपेतः ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपू-  
 रितजगत्रयपिण्डतेन, कान्तिप्रतापयश-  
 सामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रवि-  
 निर्मितेन, सालत्रयेण ऋगवन्नितोवि-  
 ज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्यसृजो जिन ! नमन्नि-  
 दशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौ-  
 लिवन्धान् । पादौ श्रयन्ति ऋवतो यदि वा  
 परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव  
 ॥ १८ ॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मु-

खोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठवभान् ।  
 युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं  
 विज्ञो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ १९ ॥  
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं-  
 वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! । अज्ञा-  
 नवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फु-  
 रति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्जार-  
 संभृतनजांसि रजांसि रोषा—दुत्थापितानि  
 कमठेन शठेन यानि । षयाऽपि तैस्तव न  
 नाथ ! हता हताशो, अस्तस्त्वमीशिरयमेव  
 परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद् गर्जद्गूर्जितघनौघम-  
 दन्नृमीमं, अश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधा-  
 रम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्ने, ते-  
 नैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥  
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्राल-  
 म्बभृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्र-  
 ति ज्वन्तमपीरितो यः, सोऽस्याजवत्प्रति-

ऋवं ऋवङ्खहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव  
 ऋवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-माराधयन्ति वि-  
 धिवद्विधुतान्यकृत्याः । ऋक्तयोद्धसत्पुलक-  
 पङ्कमलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विज्ञो ! ऋ-  
 वि जन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारऋ-  
 ववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगो-  
 चरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्र-  
 पवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं स-  
 मेति ? ॥३५॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं  
 न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानद-  
 क्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,  
 जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥  
 नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो !  
 सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो वि-  
 धुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धग-  
 तयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥ आकर्णितोऽपि  
 महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि

मया विधृतोऽसि ऋक्तया । जातोऽस्मि तेन  
जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रति-  
फलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ !  
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्य-  
वसते वशिनां वरेण्य । ऋक्तया नते मयि  
महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्वहनतत्प-  
रतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्यसारशरणं  
शरणं शरण्य—मासाद्य सादितरिपुप्रथिता-  
वदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान-  
वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् जुवनपावन ! हा ह-  
तोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखि-  
लवस्तुसार !, संसारतारक विजो ! जुवना-  
धिनाथ । त्रायस्व देव ! करुणाहृद मां पु-  
नीहि, सीदन्तमद्य ऋयदव्यसनाम्बुराशेः  
॥४१॥ यद्यस्ति नाथ ! ऋवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,  
ऋक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ।  
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ऋयाः, स्वामी



त्वमेव चुवनेऽत्र ज्वान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥  
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सा-  
न्दोद्धसत्पुलककञ्चुकिताङ्गजागाः । त्वद्-  
बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये सं-  
स्तवं तव विज्ञो ! रचयन्ति ज्व्याः ॥ ४३ ॥  
जननयनकुमुदचन्द्रप्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदो  
शुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरा-  
न्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥  
॥ इति श्रीकल्याणमन्दिरं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

अथ म्होटी शान्तिः

ज्ञो ज्ञो ज्व्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं  
सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिचुवनगुरोरार्हता  
जक्तिज्ञाजः । तेषां शान्तिर्भवतु ज्वताम-  
र्हदादिप्रज्ञावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्ले-  
शविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ ज्ञो ज्ञो ज्व्य-  
लोका ! इह हि ज्वरतैरावतविदेहसंज्वानां  
समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पान-

न्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः  
 सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरे-  
 न्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्गद्गारकं  
 गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहितज-  
 न्मात्रिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति यथा, त-  
 तोऽहं कृतानुकारमतिकृत्वा महाजनो  
 येन गतः स पन्थाः इति ऋव्यजनैः सह  
 समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमु-  
 द्घोषयामि, तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्स-  
 वानन्तरमतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां  
 निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं  
 प्रीयन्तां प्रीयन्तां ऋगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः  
 सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रि-  
 लोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥  
 ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अग्निनन्दन-  
 सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुवि-  
 धि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अ-

नन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-  
मुनिसुवत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमाना-  
न्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु,  
स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविज-  
यङ्मिदकान्तारेषु । दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो  
नित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्री धृति-मति-कीर्ति-  
कांति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधन-  
प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु  
ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्र-  
शृङ्खला-वज्राङ्कुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुष-  
दत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गान्धारी-  
सर्वास्त्रा महाज्वाला-मानवी-वैरोद्या-अञ्जु-  
प्ता-मानसी-महामानसी षोडश विद्यादे-  
व्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचा-  
र्योपाध्यायप्रज्ञतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणस-  
ङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥  
ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्र-

शनैश्वरराहुकेतुसहिताः सलोकपात्राः सो-  
 मयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनाय-  
 कोपेताः ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवता-  
 दयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां । अक्षीण-  
 कोशकोष्ठागारा नरपतयश्च ऋवन्तु स्वाहा ।  
 ॐपुत्र-मित्र-त्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-  
 सम्बन्धि-बन्धुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्र-  
 मोदकारिणः अस्मिंश्च ऋमण्डलायतननि-  
 वासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगो-  
 पसर्गव्याधिदुःखदुर्निदोर्मनस्योपशम-  
 नाय शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिपुष्टिरुष्टिवृष्टि-  
 माङ्गल्योत्सवाः । सदा प्राङ्मुखाणि पापानि  
 शाम्यन्तु हरितानि । शत्रवः पराङ्मुखा  
 ऋवन्तु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय,  
 नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामरा-  
 धीश-मुकुटाञ्चर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः

नन्त-धर्म-शान्ति-कुन्धु-अर-मद्धि-  
मुनिसुवत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमाना-  
न्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु,  
स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविज-  
यर्हन्निदकान्तारेषु । दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो  
नित्यं स्वाहा ॥ ॐ श्री धृति-मति-कीर्ति-  
कांति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधन-  
प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु  
ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्र-  
शृङ्खला-वज्राङ्कुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुष-  
दत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गान्धारी-  
सर्वास्त्रा महाज्वाला-मानवी-वैरोद्या-अबु-  
ष्टा-मानसी-महामानसी षोरुश विद्यादे-  
व्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचा-  
र्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणस-  
ङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥  
ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्र-

ष्टयात्रास्नात्राद्यवसानेषु । शान्तिकलशं  
गृहीत्वा, कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवास-  
कुसुमाञ्जलिसमेतः । स्नात्रचतुष्किकायां  
श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र-  
चन्दनाञ्जणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृ-  
त्वा, शान्तिसुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं  
मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं म-  
णिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गला-  
नि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्,  
कल्याणजाजो हि जिनात्रिषेके ॥ १ ॥  
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता ऋव-  
न्तु ऋतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, स-  
र्वत्र सुखीऋवन्तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थ-  
यरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी  
। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं  
सिवं ऋवतु । स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं  
यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवद्भयः । मनः प्रस-

शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।  
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे  
गृहे ॥ १ ॥ उन्मृष्टरिष्टुष्ट-ग्रहगतिः स्व-  
प्रभुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्र-  
हणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्री सङ्घजंग-  
जनपद-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गो-  
ष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्चान्तिम्  
॥ ४ ॥ श्री श्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु ।  
श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधि-  
पानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसन्निवेशानां  
शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भव-  
तु ; श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु । श्री-  
पौरजनस्य शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य  
शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री-  
पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रति-

---

१ पौरजनपद. २ ( पुरमुख्याणां ) टीकायां गङ्गाधि-  
पानामिति चास्ति.

ष्टायात्रास्नात्राद्यवसानेषु । शान्तिकवशं  
गृहीत्वा, कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवास-  
कुसुमाञ्जलिसमेतः । स्नात्रचतुष्किकायां  
श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र-  
चन्दनाञ्जणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृ-  
त्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं  
मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं म-  
णिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गला-  
नि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्,  
कल्याणञ्जो हि जिनाग्निषेके ॥ १ ॥  
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता ऋव-  
न्तु ऋतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, स-  
र्वत्र सुखीऋवन्तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थ-  
यरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी  
। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं  
सिवं ऋवतु । स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं  
यान्ति, ऋच्यन्ते विघ्नवह्नयः । मनः प्रस-



न्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व-  
मङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्र-  
धानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्  
॥ ५ ॥ इति बृहन्नान्तिस्तवः ॥९॥ ९९ ॥  
इतिनवस्मरणानि संपूर्णम्



॥ अथ श्रीरत्नाकरपञ्चविंशिकाप्रारम्भः ॥

उपजातिचन्दः ॥

श्रेयःश्रियां मङ्गलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदे-  
वेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! । सर्वज्ञ ! सर्वातिशय-  
प्रधान !, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥

जगत्रयाधार ! कृपावतार !, दुर्वारसंसार-  
विकारवैद्य ! । श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्ध-

प्रावा-द्विज्ञ ! प्रज्ञो ! विज्ञपयामि किञ्चित्

॥ २ ॥ किं बाललीलाकलितो न बालः,

पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ? । तथा य-

थार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुश-

( १७३ )

यस्तवाग्ने ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं  
च, न शालि शीलं न तपोऽन्नितप्तं । शुभ्रो  
न चावोऽप्यन्नवद्भवेऽस्मिन्, विभ्रो ! मया  
चान्तमहो मुधैव ॥४॥ दग्धोऽग्निना क्रोधम-  
येन दष्टो, दुष्टेन । लोत्राख्यमहोरगेण ।  
ग्रस्तोऽग्निमानाजगरेण माया-जालेन ब-  
धोऽस्मि कथं जजे त्वाम्? ॥५॥ कृतं मया  
ऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं  
न मेऽजूत् । अस्मादृशां केवलमेव जन्म,  
जिनेश ! जज्ञे जवंपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो  
यन्न मनोजवृत्त-त्वदास्यंपीयूषमयूखला-  
जात् । द्रुतं महानन्दरसं कठोर-मस्मादृशां  
देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुष्प्रा-  
प्यमिदं मर्याप्तं, रत्नत्रयं नूरिजवन्नमेण ।  
प्रमादनिजावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो  
नायक ! पूत्करोमि? ॥ ८ ॥ वैराग्यरङ्गः पर-

वञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय । वादा-  
य विद्याऽध्ययनं च मेऽञ्जूत्, कियद्? ब्रुवे हा-  
स्यकरं स्वमीश ! ॥ ९ ॥ परापवादेन सु-  
खं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणोऽन । चेतः  
परापायाविचिन्तनेन, कृतं न विष्यामि कथं?  
विज्ञोऽहम् ॥ १० ॥ विडम्बितं यत्स्मरघस्म-  
रार्ति-दशावशात्स्वं विषयान्धलेन । प्रकाशितं  
तद्भवतो ऽहियैव, सर्वज्ञ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि  
॥ ११ ॥ ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रैः, कुशा-  
स्त्रवाक्यैर्निहताऽऽगमोक्तिः । कर्तुं वृथा कर्म  
कुदेवसङ्गा-दवाबि ही नाथ ! मतित्रमो मे १२  
विमुच्य हृग्लक्ष्यगतं नवन्तं, ध्याता मया  
मूढधिया हृदन्तः । कटाक्षवद्भोजगञ्जीरनाग्नि-  
कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः । १३ । लोलेक्ष-

१. अंसलवत्सलादिवदौणादिकालप्रत्ययागमेन, विद्युत्पत्रा-  
न्धाह्वइति प्राकृतलक्षणेनेतिकश्चित् तन्न प्राकृतगन्धस्याप्य-  
त्राज्ञावात्, मुरलादेराकृतिगणत्वाच्च नालप्रत्ययदुर्लभता.

( १९५ )

णावक्रनिरीक्षणेन, यो मानसे रागलवो विल-  
मः। न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोऽप्य-  
गात्तारक! कारणं किम्?। १४। अङ्गं न चङ्गं न-  
गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविला-  
सः। स्फुरत्प्रज्ञां न प्रच्युता च काऽपि, तथाऽ-  
प्यहङ्कारकदर्शितोऽहम्। १५। आयुर्गलत्याशु  
न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयात्रिलाषः।  
यत्तश्च त्रैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महा-  
मोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥ नाऽत्मा न पु-  
ण्यं न प्रवो न पापं, मया विटानां कटुगी-  
रपीयम् । अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के,  
परिस्फुटे सत्यपि देव! धिङ् माम्॥ १७॥ न  
देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न  
साधुधर्मः। लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं,  
कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥ १८ ॥ चक्रे

१ मानसो. २ प्रधानप्रच्युता. ३ आधारि.

मयाऽसत्स्वपि कामधेनु-कल्पद्रुचिन्ता-  
मणिषु स्पृहातिः । न जैनधर्मे स्फुटश-  
र्मदेऽपि, जिनेश ! मे प्रश्य विमूढजावम्  
॥ १९ ॥ सङ्गो गलीला न च रोगकीला,  
धनागमो नो निधनागमश्च । दारा  
न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं  
मयकाऽधमेन ॥ २० ॥ स्थितं न सा-  
धोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जि-  
तं च । कृतं न तीर्थोद्हरणादिकृत्यं, मया  
मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरङ्गो  
न गुरुदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः  
। नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव !, तार्यः  
कथंकारमयं प्रवाब्धिः ॥ २२ ॥ पूर्वं प्रवेऽका-  
रि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करि-  
ष्ये । यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, प्रूतोद्भव-

१ द्रष्टोऽयं प्रयोग इति कश्चित्, स जन्मावष्टवधान्तः-  
करण एव यतो न न्यजाति तेन युष्मदस्मदोऽसो जादि-  
स्यादेः ( श्रीसि० ७-३-३० ) इति सूत्रम् ॥

दूजाविभ्रवन्नयीश ! ॥२३॥ किंवा सुधाऽहं  
बहुधा सुधाञ्जुकूपूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकी-  
यम्। जट्टपामियस्मात् त्रिजगत्स्वरूप-निरू-  
पकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडितञ्चन्दः ॥ दीनो-धारधुर-  
न्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा-पात्रं नात्र  
जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचे श्रियम् ।  
किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरलं शिवं,  
श्रीरत्नाकर ! मङ्गलैकनिलय ! श्रेयस्करं  
प्रार्थये ॥ २५ ॥

॥ इति रत्नाकरपञ्चविंशतिका संपूर्णा ॥

अथ सामायिक लेवानो विधि.

प्रथम स्थापनाचार्यजी न होय तो उंचे आ-  
सने पुस्तक आदि ज्ञानादिनुं उपकरण मुकीने  
श्रावक तथा श्राविकाए कटासणुं मुहपत्ति अने  
चरवलो लइ, शुरु वस्त्र सहित थइ, जग्या पुंजी  
कटासणुं पाथरी, ते उपर बेसी, मुहपत्ति डावा

हाथमां मुख पासे राखी,ते वने मुख ढांकी, जम-  
णो हाथ उंधो स्थापनाजी सन्मुख राखीने एक  
नवकार तथा पंचिंदिय कहेवां. पढी खमासमण  
दइ इरियावहि तस्सउत्तरी अन्नत्थजससिएणं  
कही एक लोगस्सनो चंदेसुनिम्मलयरा सुधी(लो  
गस्स न आवडे तो चार नवकार) नो काउस्सग्ग  
करवो.नमो अरिहंताणं पद बोली काउस्सग्ग पा-  
री लोगस्स कहेवो.पढा खमासमण दइ“इष्ठाका-  
रेण संदिसह जगवन्!सामायिक मुहपत्ति पन्निवे-  
हुं?”कही कांइक विराम दइ इठं कही पचौस बोल

१ सेनप्रश्नना पाठप्रमाणे स्थापना त्रण नवकारे अने  
उत्थापना एकनवकारे. २ सूत्रार्थतत्त्वकरी सदहुं ? सम्य-  
क्त्वमोहनीय मिश्रमोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय परिहरुं ४,  
कामराग स्नेहराग दृष्टिराग प० ७, सुदेव सुगुरु सुधर्म आद-  
रुं १०, कुदेव कुगुरु कुधर्म प० १३, ज्ञानदर्शन चारित्र आ०  
१६, ज्ञानदर्शनचारित्रविराधना प० १९, मनोगुप्ति वचन-  
गुप्ति कायगुप्ति आ० २२, मनोदण्णवचनदण्णकायदण्ण  
प० २५, हास्यरत्यरति प० २७, जयशोकडुगुंठा प० ३१,  
कृष्णलेश्या नीललेश्या कापातलेश्या प० ३४, रसगारव  
ऋज्जिगारवसातागारव प० ३७, मायाशद्वय नियाणशद्वयमि-  
थ्यात्वशद्वय प० ४०, क्रोधमान प० ४२, मायालोच प० ४४,  
पृथ्वीकायअप्कायतेजकायनीजयणा करुं ४७, वायुकाय व-  
नस्पतिकाय त्रसकायनी रक्षा करुं ५०.

चिंतववा साथे मुहपत्ति पम्बिह्वी. पढी खमासमण दइ “इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! सामायिक संदिसावुं?” कही इष्ठां कही खमासमण दइ “इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! सामायिक ठाउं ? ” इष्ठां कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी “इष्ठाकारि जगवन् ! पसाय करी सामायिक दंरुक उच्चरावोजी” कही, गुरु अथवा वडिल होय तो तेओनी पासे करेमिजंते उचरवुं, नहि तर पोतानी मेळे करेमिजंतेनो पाठ बोलवो. पढी खमासमण दइ “इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! बेसणे संदिसावुं” “इष्ठां” कही, पढी खमासमण दइ, “इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! बेसणे ठाउं ? इष्ठां” कहेवुं. पढी खमासमण दइ “ इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! सज्जाय संदिसावुं?” इष्ठां कही खमासमण दइ ‘इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् सज्जाय करुं ? इष्ठां’ कही त्रण नवकार गणवा. पढी बे घडी वांचवा आदिए करी धर्मध्यान करवुं अथवा नवकारवाली गणवी. विकथादि प्रमादमां परवुं नहि.



॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥ .

प्रथम चरवलो लइ उचा थइ खमासमण दइ इरियावहि पम्किमी यावत् काउस्सग्ग करी लोगस्स कही खमासण दइ “इञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ! मुहपत्ति पम्क्खेहुं ? इब्बं” कही, मुहपत्ति पम्क्खेही खमासमण दइ “इञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ! सामायिक पारुं ?” गुरुए आदेश आ-  
प्या पठी यथाशक्ति कही खमासमण दइ “इ-  
ञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ! सामायिक पारुं” कही कंइक विसामा पठी तहत्ति कही पठी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणा उपर स्थापी एक नवकार गणी ‘सामाइयवयजुत्तोण’ कहेवो, पठी जमणो हाथ स्थापना सामे सवलो राखीने एक नवकार गणवो, अहीं उपरा उपर त्रण सामायिक के बे सामायिक करवां होय तो दरेक सामायिक वेतां लेवानी विधि करवी, पण वखतो वखत पारवुं नही. वे सामायिक करवां होय, तो बे पूरा थ-

१ अहीं गुरु ‘पुणोवि कायव्वो’ कहे. २ अहीं गुरु ‘आयारो न मोत्तव्वो’ कहे.

ये अने त्रण सामायिक करवा होय तो त्रण पूरा थये एक वार पारवुं, एवी प्रवृत्ति ठे. एक सामटा आठ दश सामायिक करवां होय तो त्रण त्रण सामायिक सुधी आ विधि जाणवो.

॥ अथ चैत्यवंदन करवानो विधि ॥

प्रथम त्रण खमासमण दशने पठी “ इडा-कारेण संदिसह नगवन् ! चैत्यवंदन करुं?” कही, ‘इडं’ कही, चैत्यवंदन, जंकिंचिण कही, पठी बे कुणी पेट उपर राखी बे हाथ जोमी अंजली करी ‘नमुत्थुणं’ कहेवुं. पठी मुक्ताशुक्तिमुद्राए ( बे हाथ पोला जोमी, माथा सुधी उंचा राखी ) ‘जावंति चेइआइं’ कही, खमासमण दश तेज मुद्राए जावंतकेविसाहू कही, पठी अंजली करी ‘नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः’ तेमज उवसगहरंण अथवा गमे ते सुविहितनुं करेवुं स्तवन कहेवुं. पठी मुक्ताशुक्तिमुद्राए जयवीयराय आचवमखंका सुधी कही हाथ जरा

१ लगोलग सामायिक लेवुं होय त्यारे बीजुं त्रीजुं सामायिक लेतां ‘सज्जाय करुं’ ना वदले ‘सज्जायमां वुं एम कही त्रण नवकारना वदले एक नवकार गाणवो.

नीचा उतारी जयवीरराय पूरा कहेवा; पढी उजा थइ बे पग वच्चे चार आंगल अंतर राखी बे हाथे अंजली करी “अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सगं अन्नत्थ जससिएणं०” कही एक नव-कारनो काउस्सग करवो. पढी नमो अरिहंताणं कही, ‘नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः’ कही, ‘थोयजोमामांहेनी पहेली थोय कहेवी.’

॥ अथ गुरुवंदन करवानो विधि ॥

प्रथम बे खमासण दई ‘इष्ठाकार सुहराइ०’ थी सुख-शातापूठवी पढी खमासमण दई ‘इष्ठाकारेण संदि-सह जगवन् अब्हुठिओमि अब्बिन्नतर राईयंखामे-उं?’ कही अब्हुठिउं कहेवो. पढी पच्चस्काण करवुं,

॥ अथ पच्चस्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम “ इरियावहियाए ०” पक्किमी, या-वत् “ जगचिंतामणि०” नुं चैत्यवंदन “ जयवी-रराय०” सुधी करवुं.

पढी “ मसहजिणाण०” नी सज्जाय कही, मुहपत्ति पक्किहवी. पढी खमासमण दई ‘इष्ठाकारेण संदिसह जगवन्! पच्चस्काण पारुं?’

“ यथाशक्ति ” इष्टामि० इष्टा० पञ्चस्काण पार्थुं.  
 “तहत्ति” एम कही, जमणो हाथ कटासणा  
 अथवा चरवला ऊपर स्थापी, एक “नवकार”  
 गणी, पञ्चस्काण कर्तुं होयं तेनुं नाम कहीने पार-  
 वुं.ते लखीये ढीये—“उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं,  
 पोरिसिं, साढपोरिसिं, गंठिसहिअं, मुठिसहियं  
 पञ्चस्काण कर्तुं चउविहार; आंबिल, निवी, एका-  
 सणुं, बेआसणुं, पञ्चस्काण कर्तुं तिविहार; पञ्चस्का-  
 ण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्ठिअं,  
 आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिष्ठा-  
 मिडुक्कं.” एम कही एक नवकार गणवो ॥इति॥

॥ अथ पन्निवेहण करवानो विधि ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावहियाए  
 कहेवुं, ( स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय  
 न कहेवा. ) पढी तस्स उत्तरी अन्नत्थ० कही  
 एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउ-  
 स्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण  
 दइ, ‘इष्टा० पन्निवेहण करूं ? इहं’ कही, उन्ने  
 पगे बेसी मुहपत्ती, चरवलो, कटासणुं, उत्तरा-  
 सण, धोतीयुं, कंदोरो आदिनुं पन्निवेहण करवुं.

पढी इरियावही पम्किमी काजो काढी, जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पढी काजो काढनार स्थापनाजी सामो उचो रही, इरियावही पम्किमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रणवार 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' कही काजो परठवीने पढी त्रण वार "वोसिरे" कहे ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावही पम्किमवाथी मांकीने यावत् लोगस्स कही, पढी उत्तरासण नाखी, चैत्यवंदन, " नमुत्थुणं०" कही, " जयवीयराय० आत्तवमखंदा " सुधी हाथ जोमी कहे. वली फरी " चैत्यवंदन " कहीने " नमुत्थुणं०" कही, यावत् चार थोयो कहीये तिहां सुधी बधुं कहेवुं; पढी "नमुत्थुणं०" कही, वली चार थोयो कहीये त्यां सुधी बधुं कहेवुं; पढी "नमुत्थुणं०" तथा बे " जावंति " कही, स्तवन कही, "जयवीयराय आत्तवमखंदा " सुधी कही, पढी " चैत्यवंदन " कही, "नमुत्थुणं०" कही, आखा " जयवीयराय " कहेवा. पढी इत्था० सज्जाय करुं कही नवकार

गणी मन्नहजिणाणणी सज्जाय कहेवी. इहां सवारे देव वांदवा तेमां “ मन्नहजिणाणं” नी सज्जाय कहेवी, अने मध्यान्हे तथा सांजे देव वांदवामां सज्जाय न कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम पूर्वनी रीतिये सामायिक लेवुं. पठी पाणी वापर्युं होय तो खमासण दइ “इष्ठां सं-दिं जगं मुहपत्ति पम्बिलेहुं? इष्ठं” एम कही बेसीने फक्त मुहपत्ति पम्बिलेहवी अने जो आहार वापर्यो होय तो बे वांदणां देवां; त्यां बीजा वांदणामां “आवस्सियाए” ए पद न कहेतां अ-वग्रहमां ज उजा रहीने “ इष्ठकारी जगं प-साय करी पच्चरकाणनो आदेश देशोजी” एम कहेवुं, पठी वम्बिल पच्चरकाण करावे या पोते यथाशक्ति पच्चरकाण करे. पठी खमासमण दइ उजा थइ “इष्ठां संदिं जगं चैत्यवंदन करुं?” एम कहेवुं; पठी बेसीने वडिल चैत्यवंदन करे वम्बिल न होय तो पंचांग प्रणिपातथी ( बने ढींचण जमीन उपर स्थापी ) पोते करे. पठी “जं किंचिं” कहेवुं. पठी नमुत्थुणं कही उजा

थई अरिहंत चेइआणं कही अन्नत्थं कही एक नवकारनो काउसग्ग करी पारी नमोऽर्हत्तं कही पहेली थोय कहेवी. पठी लोगस्स, सब्वलोए अरिहंत चेइआणं अन्नत्थं कही एक नवकारनो काउसग्ग करी पारी बीजी थोय कहेवी. पुकरवरदी, सुअस्स जगवजं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआएणं कही, अन्नत्थं कही, एक नवकारनो काउसग्ग करी, पारी त्रीजी थोय कहेवी. पठी सिद्धाणं बुद्धाणं कही, वेयावच्चगराणं अन्नत्थं कही, एक नवकारनो काउसग्ग करी, पारी नमोऽर्हत्तं कही चोथी थोय कहेवी. पठी वेसीने नमुत्थुणं कहेवुं. पठी उजा थइ चार खमासमण देवा पूर्वक “जगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं सर्वसाधुहं ” एम कहेवुं. पठी “इहकारि समस्त श्रावकने वांडुं,” एम कहेवुं. पठी “ इहाणं संदिणं जगणं देवसिअपडिक्कमणे ठाउं ? इहं ” ए आदेश मागीने वेसी जमणो हाथ चरवला उपर या जूमि उपर स्थापी “ सब्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्बासिअ, दुच्चिठिअ, मिहामि

दुक्कं ” ए पाठ कहेवो. ( प्रतिक्रमणमां दरेक  
 आदेश वनीलज मागे ते न होय तो. श्रावक  
 पोते मागे. आ वात पीठिकारूपे सर्वत्र यो-  
 जवी. ) पठी उजा अइ ‘करेमिजंते० इहामि-  
 ठामि काजसगं जोमे देवसिउं अइआरो०’कही  
 तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कही, अतिचारनी आठ  
 गाथानो, अने ते न आवडे तो आठ नवका-  
 रनो काजसग करी, पारी, प्रगट लोगस्स  
 कहेवो. पठी बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुह-  
 पत्ति पम्बिहवी.पठी उजा अइने बे वांदणां देवा,  
 तेमां बीजा वांदणा वखते अवग्रह बहार नीक-  
 लवुं नहि. बीजुं वांदणुं पूरुं थये “ इहा० सं०  
 ज० देवसियं आलोउं ?इहं”कही, जो मे देवसिउं  
 अइआरोनो पाठ कहेवो. पठी ‘सात लाख०’  
 अने ‘अठार पापस्थानक०’ कहेवा. पठी ‘सव-  
 स्सवि देवसिअ दुच्चितिय दुब्जासिय दुच्चि-  
 छिय इहा० संदि० जग० इहं तस्स मिहामि  
 दुक्कं ” एम कही वीरासने अथवा न आवडे  
 तो जमणो ढींचण उचो राखी एक नवकार  
 करेमि० कही, इहामि पडिक्कमिउं, जो मे दे-



वसिष्ठ अश्विनारो० कही संपूर्ण वंदितुं कहेवुं. पण तेमां “तस्स धम्मस्स केवल्लिपणत्तस्स अ-  
 ब्भुत्तिमि” ए पद बोलतां उजा थवुं अने अ-  
 वग्रहनी बहार जइने वंदितुं पूरुं करवुं. पढी बे  
 वांदणां देवां, बीजा वांदणामां अवग्रहमां उजा  
 होइए त्यां “ इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् अ-  
 ब्भुत्तिमि अब्भित्तर देवसिअं खामेउं ? इष्ठां  
 खामेमि देवसिअं ” कहीने जमणो हाथ चर-  
 वला उपर स्थापी जांकिंचि अपत्तिअं इत्यादि  
 पाठ बोलतां अब्भुत्तिमि खामवो. पढी अवग्रह  
 बहार नीकलीने बे वांदणां देवां. बीजुं वांदणुं  
 पूरुं थाय त्त्यारे अवग्रहनी बहारनीकली, आयरिय  
 उवज्जाए कहेवुं. पढी करेमि जंतो इष्ठा मि ठामि०  
 तस्स उत्तरी, अन्नत्थ० कही, बे लोगस्स अथवा  
 न आवमे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग क-  
 रवो. ( शांति के खराब स्वप्नना काउस्सग्ग  
 शिवाय बीजी बधी जगोए लोगस्सना ज्यां  
 ज्यां काउस्सग्ग आवे त्यां त्यां ‘चंदेसु निम्मल-  
 यरा’ सुधी ज गणवानुं ध्यानमां राखवुं ) पढी  
 पारीने लोगस्स, सबलोए अरिहंत चेइ० अ-

न्नत्थं कही, एक लोगस्स, या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, पुस्करवरदीं सुअस्स चगवओ करेमि काउं वंदणं कही, अन्नत्थं कही एक लोगस्सनो या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पुस्करवरदीं सुअस्स चगवउं करेमिकाउं वंदणं कही, अन्नत्थं कही एक लोगस्सनो या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कहेवुं. पढी “सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत्त्वं कही पुरुषे सुअदेवयानी थोय (अहीं स्त्री होय तो ते कमलदलनी स्तुति कहे ) कहेवी, पढी “ खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थं कही, एक नवकारनो काउसग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत्त्वं कही, जीसे खित्ते साहूं नी थोय कहेवी. (अहीं पण स्त्री होय तो ते यस्याः क्षेत्रं ऽ नी थोय कहे) पढी एक नवकार गणी बेसीने मुहपत्ति पणिलेहवी. पढी बे वांदणां देवां. पढी अवग्रहमां ज उच्चा उच्चा “ सामा-यिक, चउवीसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउ-

स्सग्ग, पच्चरूपाण कर्हुं ठेजी.” “इहामो अणु-  
सद्धिं” एम कही वेसीने “नमो खमासमणाणं,  
नमोऽर्हत्तुं इत्यादि” पाठ कही, नमोऽस्तु वरु-  
मानायणं कहेवुं. ( अहीं स्त्री होय तो ते संसा-  
रदावाणी त्रण थोय कहे) पठी नमुत्थुणं कही  
“ इह्वाकारेण संदिणं जगणं स्तवनं जणुं ? इहं ”  
एम कही स्तवनं कहेवुं ( स्तवनं पूर्वाचार्यनुं  
बनावेवुं उठामां उठुं पांच गाथानुं होवुं जो-  
इए ). पठी वरकनकणं कही पूर्वनी पेठे जग-  
वानादिचारने जगवानहं विगेरे कही चार ख-  
मासणवके थोजवंदन करवुं. पठी जमणो हाथ  
चरवला या जूमिपर स्थापी अह्वाइजोसुणं कहेवुं.  
पठी उच्चा थइ “ इह्वाणं संदिणं जगणं देवसिअ-  
पायञ्चित्तविसोहणत्थं काजस्सग्गं करुं ? इहं, देव-  
सिअपायञ्चित्तविसोहणत्थं करेमि काजस्सग्गं ”  
अन्नत्थणं कही चार लोगस्स या सोल नवका-  
रणो काजस्सग्गं करी, पारी, प्रगट लोगस्स  
कहेवो. पठी बे खमासण देवा पूर्वक “सज्जायं  
संदिसावुं ? इहं. सज्जायं करुं ? इहं” एवी  
रीते बे आदेश मागी वेसीने एक नवकार ग-

णीने वमिल अगार तेनो आदेश मागी पोते  
 सज्जाय कहे. पढी एक नवकार गणी उजा  
 थइ खमासण दइ “इहाण संदिण जगण दुः-  
 र्करकयकम्मरकयनिमित्तं काउस्सग्ग करुं ?  
 इहं दुर्करकयकम्मरकयनिमित्तं करेमि का-  
 उस्सग्गं ” एम कही अन्नत्थण कही संपूर्ण  
 चार लोगस्स या सोल नवकारनो काउस्सग्ग  
 करी, पारी, नमोऽर्हत् कही, एक जण ‘ लघु-  
 शांति ’ कहे; अने बीजा काउस्सग्गमां सांजले.  
 पढी काउस्सग्ग पारी, लोगस्स कही खमासण  
 दइ इरियावहीण तस्सउत्तरीण अन्नत्थण कही, ए-  
 क लोगस्स या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी,  
 पारी, लोगस्स कहेवो. पढी बेसी चउक्कसाय, नमु-  
 त्थुणं, जावंतिचेइयाइंण कही खमासण दइ जावंत  
 केविसाहू, नमोऽर्हत्ण उवसग्गहरंण कही, बे हाथ  
 ललाटे लगामी जयवीयराय कही, खमासण दइ,  
 “इहाण संदिण जगण मुहपत्ति पमिलेहुं?” कही  
 मुहपत्ति पमिलेहवी. पढी उजा थइ बे खमासण  
 देवा पूर्वक अनुक्रमे “इहाण संदिण जगण सामा-  
 यिक पारुं? यथाशक्ति” तथा “इहाण संदिण जगण

सामायिक पार्यु. तहत्ति ” कही, सामायिक पारवानी विधि प्रमाणे सामाश्यवयजुत्तो० कहेवा पर्यंत सर्व कहेवुं. पठी स्थापना स्थापी होय तो जमणो हाथ सवलो स्थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणवो इति.

## ॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्व रीतिए सामायिक लेवुं, पठी ख-  
मासमण दइ “इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! कु-  
सुमिण डुसुमिण उड्डावणी राइपायच्छित्तविसो-  
हणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इष्ठां, कुसुमिण डुसु-  
मिणउड्डावणी राइपायच्छित्तविसोहणत्थं करे-  
मि काउस्सग्गं” एम कही अन्नत्थ० कही काम  
जोगादिनां ते रात्रिए कुस्वप्न आव्यां होय तो  
सागरवरगंज्जीरां सुधी अने बीजां डुःस्वप्न आ-  
व्यां होय तो चंदेसु निम्मलयरा सुधी चार लो-  
गस्स या सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी, पा-

१ उह्मावणी अगर उड्डावणी. २ काम जोगादि  
कुस्वप्न आव्यां होय तो चंदेसुनिम्मलयरा सुधी चार  
लोगस्स अने एक नवकारनो काउस्सग्ग करवानो पण  
विधि ठे. ३ न आव्यां होय तो पण.

री प्रगट लोगस्स कहेवो. पढी खमासमण दइ  
 “इह्ठाकारेण संदि० जग० चैत्यवंदन करुं ? इच्छं.”  
 एम कही बेसीने पंचांग प्रणिपाते जगचिंताम-  
 णिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय० पर्यंत करवुं. पढी  
 जगवानादि चारने थोन्नवंदन करवुं. पढी उच्चा  
 थइ बे खमासमण देवा पूर्वक सज्जायनो आदे-  
 श मागी बेसीने एक नवकार गणी, जरहेसर०नी  
 सज्जाय कहेवी. पढी इह्ठकार सुहराइ सुख तपनो  
 पाठ कहेवो, पढी “इह्ठाकारेण संदि० जग० राइ-  
 पक्कमणे ठाउं ? इह्ठं” एम कही जमणो  
 हाथ उपधि उपर स्थापी सबस्सवि राइय  
 डुच्चिंतिथ० नो पाठ कहेवो. पढी नमुत्थुणं  
 कही उच्चा थइ करेमिचंते, इह्ठामिठामि, तस्स-  
 उत्तरी, अन्नत्थ० कही, लोगस्स या चार नव-  
 कारनो काउस्सग्ग करवो. पढी लोगस्स, सब-  
 लोए अरि० अन्नत्थ० कही एक लोगस्स या  
 चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पढी पुक्क-  
 रवरदी० सुअस्स जगवउं० वंदण० अन्नत्थ०  
 कही आठ गाथानो या आठ नवकारनो का-  
 उस्सग्ग करवो. पढी सिद्धाणं बुद्धाणं कही

बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पन्दिहेहवी.  
 पठी उजा अइ वांदणां बे देवां. पठी “इहाकारेण  
 संदि० जग० राश्यं आलोउं? इहं” आलोएमि  
 जो मे राइउं नो पाठ कहेवो; पठी सात-  
 लाख, अठार पापस्थानक, “सवस्सवि राश्य०”  
 देवसि प्रतिक्रमणनी पेठे कहेवुं. पठी बेसीने  
 वीरासन (?) न आवडे तो जमणो ढींचण उजो  
 राखी नवकार, करेमिउंते, इहामि पन्दिमिउं  
 जो मे राइउं कही वंदित्तु कहेवुं. ४३ मी  
 गाथामां “अब्भुच्छिउंमि ” पद कहेतां उजा  
 अइ वंदित्तु पुरुं कही, वांदणां बे देवां. पठी अ-  
 वग्रहमांज रही आदेश मागी अब्भुच्छिउंमि०  
 खामीने अवग्रह बहार नीकली वांदणां बे देवां.  
 पठी आयरिय उवज्जाए० कहेवुं. पठी इहामि-  
 ठामि० तस्स० अन्नत्थ० कही सोल नवकारनो  
 काउस्सग्ग करी ( अत्र तपचित्तवणीनो काउ-  
 स्सग्ग करवानो ठे ) पारी, प्रगट लोगस्स कही  
 बेसीने ठठा आवश्यकनी मुहपत्ति पन्दिहेहीने  
 उजा अइने वांदणां बे देवां. पठी अवग्रहनी  
 अंदर रहीने सकलतीर्थ कहेवुं. पठी आदेश

मांगी यथाशक्ति पञ्चरुकाण करवुं. पढी ठ आ-  
 वश्यक देवसिञ्चनी पेठे संचारवां. पढी “ इ-  
 ष्टामो अणुसठिं ” कही बेसीने नमो खमास-  
 मणाणं नमोऽर्हतं कही विशाललोचनदलं  
 कहेवुं, (अहीं स्त्रीए संसारदावानी त्रणथोय  
 कहेवी ) पढी नमुत्थुणं कही उजा अइ अरिं  
 अन्नत्थं एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी,  
 नमोऽर्हतं कही, कङ्खाणकंदनी प्रथम थोय-क-  
 हेवी. पढी लोगस्स, पुस्करवरदीं सिद्धाणं  
 बुद्धाणं कहेवा पूर्वक देववंदन करीए ठीए  
 ते विधिए देवसि प्रतिक्रमणनी पेरे कङ्खाण-  
 कंदनी चोथी थोय कहेवा पर्यंत सर्व विधि  
 करवी. पढी बेसीने नमुत्थुणं कही जगवानादि  
 चारने थोत्तवंदन करवुं. पढी जमणो हाथ  
 उपधि उपर स्थापी, अट्टाइज्जेसु कहेवुं. पढी  
 वंने ढींचण चूमि पर स्थापी इशानकोण सन्-  
 मुख बेसी या ते दिशा सनमां चिंतवीने ख-  
 मासमण दइ श्रीसीमंधरस्वामिनुं चैत्यवंदन,  
 स्तवन, जयवीयराय, थोय पर्यंत विधि पूर्वक  
 करवुं; तेमां अरिहंत चेश्ठे श्री उजा अइने



विधि करवी. तेज प्रमाणे खमासमण दइ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीथराय, थोय पर्यंत विधि पूर्वक करवुं. पढी सामायिक पारवानीरीतिण सामायिक पारवुं. इति.

ता. क. गुरु महाराज होय ल्यारे तेथ्यो जेम आदेश मागे ठे, तेथ्यो काउस्सग्ग पारे ल्यारे आपणे पारीये ढीए, कंइ सूत्र कहेवुं होय ल्यारे तेउनी पासे कहेवानो आदेश मागीए ढीए; तेज प्रकारे तेमने विरहे करेमिजंते उच्चरावनार ज्ञान वृद्ध प्रत्ये पण प्रतिक्रमण करती वखते विनयथी वर्तवुं योग्य ठे.

॥ अथ पस्किप्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहां सुधी सर्व कहेवुं; पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्थानी कहेवी. पढी खमासमण दर्शने देवसिअ आलोइअ पस्किंता इहाकारेण संदिसह जगवन् ! पस्कि-मुहपत्ति पस्किवेहुं ? एम कही मुहपत्ति पस्किवे-हवी, पढी वांदणां वे देवां, पढी इहाकारेण सं-दिं जगं अञ्जुठिउहं संबुद्धाखामणेणं अञ्जिं-तरपस्किअं खामेउं ? इच्छं खामेमि पस्किअं,

पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि  
 अपत्तियं० कही इष्ठाकारेण सं० जग० पस्किअं  
 आलोउं? इहं आलोएमि जो मे पस्किउं अइआरो  
 कउं० कही “इष्ठाकारेण० पस्कि अतिचार आ-  
 लोउं ?” एम कही अतिचार कहिये. पठी “ए-  
 वंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बारव्रत  
 एकसो चोवीश अतिचार मांहे जे कोइ अति-  
 चार पद्द दिवसमांहे सूद्धम बादर जाणतां अ-  
 जाणतां हुउं होय, ते सव्वे हुं मने वचने का-  
 याए करी मिहामि डुक्कमं” कही “सव्वस्सवि  
 पस्किअ डुच्चिंतिअ, डुब्जासिअ, डुच्चिठ्ठिअ,  
 इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् ! इहं तस्स मिहामि  
 डुक्कमं” कही, “इहकारि ! जगवन् पसाय करी  
 पस्कितप प्रसाद करोजी.” एम उच्चार करीने  
 आवी रीते कहिये:—“चउत्थे णं, एक उपवास,  
 वे आंबिल, त्रण नीवि, चार एकासणां, आठ  
 वेआसणां, वे हजार सज्जाय यथाशक्ति तपकरी  
 प्होंचाडवो.” पठी प्रवेश कर्यो होय तो, ‘पइठि-

१ एक पस्काणं ( अंतोपस्कस्स ) पन्नरसराइंदियाणं.  
 २ गुरु पस्किमेह कहे पठी. ३ तप.

'उ' कहीये, अने करवो होय तो 'तहत्ति' कही-  
 ये, तथा न करवो होय तो अणबोदियां रहीये.  
 पठी वांदणां बे देवां. पठी इहाका० अब्बुद्धिउंइहं  
 पत्तेअखामणेणं अविंजतरपरिकअं खामेउं ?  
 इहं खामेमि परिकअं, पनरस दिवसाणं पनरस  
 राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० कही वांदणां बे  
 देवां. पठी देवसिअ आलोइअ पक्किंता इहा-  
 का० संदि० जगवन्० परिकअं पक्किंमुं ? स-  
 म्मं पक्किमामि, एम कही करेमिजंते सामा-  
 इय० कही, इहामि पक्किमिउं जो मे परिकउं०  
 कहेवुं. पठी खमासमण दइ इहाकारेण संदि०  
 परिकसूत्र कहुं. एम कही त्रण नवकार गणी  
 साधु होय तो परिकसूत्र कहे. अने साधु न  
 होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु  
 कहे. पठी सुअदेवयानी थोय कहेवी. पठी हेग  
 बेसी जमणो ढिंचण उजो राखी, एक नवकार  
 गणी, करेमिजंते० इहामि पक्कि० कही वंदित्तु

१ यथाशक्ति केटलाक बोले ठे. २ एक पक्खाणं पनर-  
 सदिवसाणं पनरसराइआणं ३ परिकअं पक्किमावेह? गुरु  
 कहे 'सम्मं पक्किमह!' शिष्य कहे 'इहं, सम्मं पक्किमामि.'

( ५२९ )

कहेवुं. पठी करेमि जंतेण इहामि ठामि काजस्सग्गं  
जो मे पक्खिउणं तस्सउत्तरीणं अन्नत्थणं कहीने  
बारं लोगस्सनो काजस्सग्गं करवो. ते लोगस्स  
चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा अरु-  
तालीश नवकारनो काजस्सग्गं करी पारवो,  
पारीने प्रगटं लोगस्स कही मुहपत्ति पक्खिहिने,  
वांदणां वे देवां. पठी 'इहकाणं अब्भुठिउणं हं सं-  
मत्तखामणेणं अब्बिन्नतरणं पक्खिअं खामेउं? इहं  
खामेमि पक्खिअं, एकपक्काणं, पनरसं राइयाणं,  
पनरसदिवसाणं जं किंचिअपत्तिअं कही पठी  
खमासमणं दइने इहकाणं पक्खि खामणा खा-  
मुं? एमं कही खामणां चार खामवां. पठी दे-  
वसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कह्या पठी वे वां-  
दणां दइए तिहांथी ते सामायिक पारीये त्यां-  
सुधी सर्वदेवसीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी  
थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिणी थोयो कहेवी. स्त-  
वन अजितशांतिनुं कहेवुं. सज्जायने ठेकाणे  
उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थोयो चार  
कहेवी, अने वधुशांतिने ठेकाणे म्होटी  
शान्ति कहेवी. ॥ इति पक्खिप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ एमां उपर कह्या मुजब पस्किनी विधि प्रमाणे करवुं पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो अने पस्किना शब्दने ठेकाणे चउमासीनो शब्द कहेवो तथा तपने ठेकाणे “ठठेणं, बे उपवास, चार आंबिल, ठ नीवि, आठ एकासणां, सोल बेआसणां, चार हजार सज्जाय०” ए रीते कहेवुं ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ एमां पण उपर लख्या मुजब पस्किनी विधि प्रमाणे करवुं; पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना-काउस्सग्गने ठेकाणे चाद्वीश लोगस्सने एक नवकार अथवा एकसो ने साठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो अने तपने ठेकाणे “अठमजत्तं, त्रण उपवास, ठ आंबिल, नव नीवि, बार एकासणां, चोवीस बेआसणां, अने ठ हजार सज्जाय०” ए रीते कहेवुं. अने पस्किना शब्दने ठेकाणे संवहरीनो शब्द कहेवो ॥ इति संवहरी प्रतिक्रमण विधिः

